# युग–प्रभा

## विशेषांक

युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन–२०२४

# युग भारती

राष्ट्र निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का उत्कर्ष

शुभ कामनाओं सहित

**वास्तुलिपि**

PUNIT SRIVASTAV

**VASTULIPI**

ARCHITECTS, DESIGNERS & PLANNERS

vastulipi@gmail.com, 07800396999

www.vastulipi.com

● पुनीत श्रीवास्तव (1985)

# मुख्य प्रकोष्ठ

युग भारती लखनऊ
युग भारती बुंदेलखंड
युग भारती इंद्रप्रस्थ
युग भारती उत्तराखंड
युग भारती मध्य प्रदेश
युग भारती राजस्थान
युग भारती महाराष्ट्र
युग भारती भाग्यनगर ( हैदराबाद )
युग भारती गुजरात
युग भारती बंगलुरु
युग भारती उत्तर पूर्व
युग भारती यू एस ए- कनाडा
युग भारती सिंगापुर
युग भारती दुबई
युग भारती ऑस्ट्रेलिया
युग भारती यूरोप

## हमसे जुड़ें -

**योगदान हेतु -**

QR SCAN

UPI CODE
yug-bharti@hdfcbank

**ट्विटर**
Yug Bharti (@YUGBHARTI) / Twitter

**फेसबुक**
www.facebook.com/yugbhartisanstha

**वेबसाइट**
www.yugbharti.com

# राष्ट्र-निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का उत्कर्ष

युग-भारती राष्ट्रीय अधिवेशन (लखनऊ)

२१-२२ सितम्बर, २०२४

के

अवसर पर प्रकाशित स्मारिका

# युग-प्रभा विशेषांक

प्रकाशक :

युग - भारती

पंजीकरण संख्या - १२७२

# युग-प्रभा विशेषांक

**स्मारिका संरक्षक**
आचार्य श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी
आचार्य श्री दीपक राजे जी

**परामर्श**
डॉ. मलय चतुर्वेदी
श्री अजय शंकर दीक्षित
डॉ. मोहन कृष्ण मिश्र
प्रो. शुभेन्द्र सिंह परिहार

**प्रधान सम्पादक**
श्री वीरेंद्र त्रिपाठी

**सम्पादकद्वय**
श्री प्रवीण अग्रवाल
डॉ. पवन मिश्र

**युग–भारती राष्ट्रीय अधिवेशन–२०२४**

# हमारे प्रेरणा-स्रोत

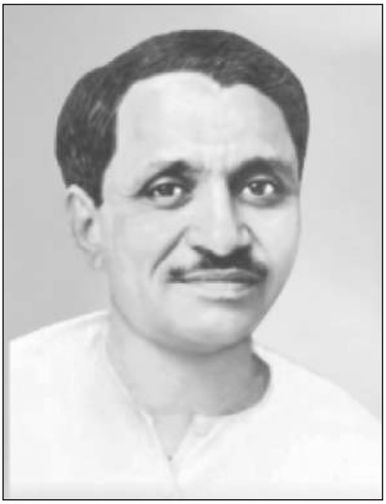

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी

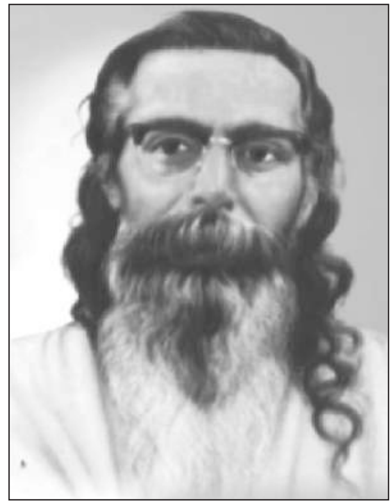

परम पूज्य 'गुरू जी'

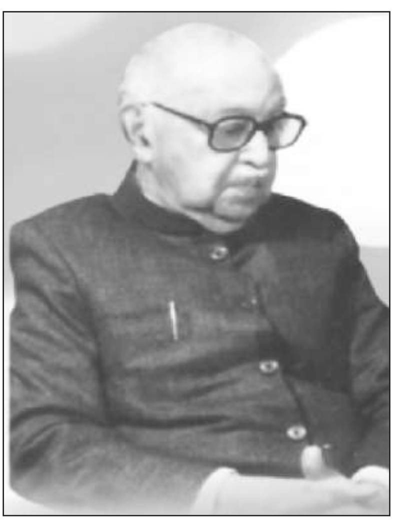

बॅरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी

माँ सुशीला उपाख्य 'बूजी'

# प्रार्थना

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥
न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनाम् आर्तिनाशनम् ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः ।
सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ।
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत् ॥

**आनंदीबेन पटेल**
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

**राज भवन**
**लखनऊ — 226 027**

**12 अगस्त, 2024**

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि युग भारती संस्था, कानपुर के पूर्व छात्रों के संगठन द्वारा 21—22 सितम्बर 2024 को 'युग भारती' के राष्ट्रीय अधिवेशन – 2024 का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर ष्युग प्रभा" नामक पत्रिका का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

मैं आशा करती हूँ कि प्रकाश्य पत्रिका 'युग भारती' संगठन की गतिविधियों को दस्तावेजित करने के साथ—साथ समाज को प्रेरणा और दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी ।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ ।

(आनंदीबेन पटेल)

दूरभाष : 0522—2236497 फैक्स : 0522—2239488 ईमेल : hgovup@gov.in बेबसाइट : www.upgovernor.gov.in

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH

रक्षा मंत्री
भारत
DEFENCE MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

30 अगस्त, 2024

## संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि युग भारती नामक संस्था का राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन दिनांक 22 सितम्बर 2024 को लखनऊ में किया जा रहा है तथा इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है।

मैं स्मारिका के प्रकाशन से जुड़े सभी बंधुओं को हार्दिक बधाई देता हूं तथा अधिवेशन के सफल आयोजन की कामना करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित।

( राजनाथ सिंह )

Office : Room No. 104, Ministry of Defence, South Block, New Delhi-11001
Tel. : +91 11 23012286, +91 11 23019030, Fax : +91 11 23015403
E-mail : rmo@mod.nic.in

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

पत्र संख्या : 43 /पी.एस.–सी.एम./2024
लोक भवन,
लखनऊ–226001

09 सितम्बर, 2024

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, नवाबगंज, कानपुर के पूर्व छात्रों के संगठन 'युग भारती' के स्वर्ण जयन्ती वर्ष पर राष्ट्रीय अधिवेशन–2024 आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर पत्रिका 'युग प्रभा' का प्रकाशन किया जाएगा।

पूर्व छात्र समागम किसी भी संस्थान के पूर्व विद्यार्थियों के लिए एक भावनात्मक क्षण होता है। यह आयोजन पूर्व विद्यार्थियों के लिए अपने अनुभव तथा विद्यालय से जुड़ी स्मृतियों को साझा करने तथा शिक्षारत विद्यार्थियों के लिए सीखने और समझने का महत्वपूर्ण अवसर होता है। इसके दृष्टिगत युग भारती के राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यह अवसर सभी प्रतिभागियों के लिए उपयोगी एवं स्मरणीय सिद्ध होगा ।

आयोजन की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522–2289017/2289010/2289167 फैक्स – 0522–223934 ईमेल – cmup@nic.in

**वीरेन्द्रजीत सिंह**

कार्यालय : 2306882
निवास : 2304325
ई–मेल : vpadity41@gmail.com
15/198–अ, विक्रमाजीत सिंह मार्ग
सिविल लाइन्स, कानपुर–208 001

# संदेश

पंडित दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था 'युग भारती' द्वारा लखनऊ में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय अधिवेशन के सफल आयोजन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

पं दीन दयाल उपाध्याय जी की जयंती के शुभ अवसर पर प्रति वर्ष आयोजित होने वाले अधिवेशनों की श्रंखला में यह आयोजन देश व विदेश में पूज्य पंडित जी के जीवन संदेशों को प्रसारित करने का कार्य करता है द्य यह युग भारती का प्रयास विद्यालय के गौरव को सर्वदिक प्रतिष्ठित करता है।

इस अवसर पर देश विदेश में कार्यरत विद्यालय के प्रतिभाशाली छात्र समिल्लित होंगे इनकी उपलब्धियों से विद्यालय को देश विदेश में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

अधिवेशन में युग भारती द्वारा प्रकाशित ष युगप्रभा ष पत्रिका का लोकार्पण भी होगा। इस हेतु अपनी मंगल कामनाएं प्रेषित करता हूं।

**वीरेन्द्रजीत सिंह**

**CA नीतू सिंह**
संयुक्त सचिव/प्रबंध समिति

+91-8009336677
singhneetu1972@Yahoo.com
@CANeetu_singh

# संदेश

श्रद्धेय पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी की स्मृति में स्थापित पं0 दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था युग भारती की पत्रिका युगप्रभा के प्रकाशन हेतु बधाई एवं शुभकामनाएं।

यह अन्यन्त गर्व का विषय है कि मारूति मंदिर में विराजित हनुमान जी की कृपा तथा श्रद्धेय पंडित जी की स्मृति में स्थापित विद्यालय के पाथेय से विद्यालय के पूर्व छात्रों ने देश–विदेश में विद्यालय को गौरवान्वित किया है। पूर्व छात्रों ने अपने आचरण, व्यक्तित्व तथा कार्यो द्वारा न केवल विद्यालय की कीर्ति को वैश्विक पटल पर फैलाया है बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि युग भारती की गतिविधियों तथा पूर्व छात्रों के संस्मरणों का प्रकाशन समाज को प्रेरणा एवं दिशा प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा ।

**नीतू सिंह**
प्रबंधक
पं. दीनदयाल उपाध्याय
सनातन धर्म विद्यालय

**कार्यालय** : 15/198A, विक्रमाजीत सिंह मार्ग, सिविल लाइन्स, कानपुर–208 001

**मोहन कृष्ण मिश्र**
महामंत्री युग–भारती

+91-76070 005548
yugbharti.kendriya@gmail.com

# संदेश

प्रिय संपादकगण,

युग भारती राष्ट्रीय अधिवेशन के इस विशेष अवसर पर ष्युग प्रभाष के विशेष अंक के प्रकाशन में आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

यह विशेष अंक हमारे संगठन की दिशा और दृष्टिकोण को उजागर करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। आपकी मेहनत, समर्पण और प्रेरणा से ही हम समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

संगठन की इस यात्रा में हम सभी मिलकर एक नई दिशा की ओर कदम बढ़ा रहे हैं, और मुझे पूरा विश्वास है कि ष्युग प्रभाष का यह विशेष अंक हमारी सफलता की नई ऊँचाइयाँ तय करेगा।

आपका सहयोग और समर्थन हमारे लिए अमूल्य है। आइए, हम सब मिलकर इस विशेष अवसर को उत्सव की तरह मनाएँ और भविष्य की नई ऊँचाइयों की ओर अग्रसर हों।

**मोहन कृष्ण मिश्र**
**युग–भारती**

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विषय / शीर्षक | लेखक का नाम | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1 | सम्पादक की लेखनी से... | वीरेंद्र त्रिपाठी | 12 |
| 2 | पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, अर्थात... | ओमशंकर | 13–16 |
| 3 | अधिवेशन क्यों... | प्रवीण अग्रवाल | 19 |
| 4 | सफल जीवन के दस सूत्र | शशि शर्मा | 20 |
| 5 | दीनदयाल जी के विचार और उनकी सर्वकालिक प्रासंगिकता | रामेंद्र सिंह कुशवाह | 23–24 |
| 6 | विद्यालय का मेरे जीवन पर प्रभाव | न्यायमूर्ति सुरेश कुमार गुप्त | 25–28 |
| 7 | सांस्कृतिक राष्ट्रवाद– चुनौतियां और हमारी भूमिका | डॉ पवन मिश्र | 31–32 |
| 8 | चैतन्य | आशीष जोग | 33–37 |
| 9 | भारत में उच्च शिक्षा का बदलता स्वरूप | प्रो. शुभेन्द्र सिंह परिहार | 38–39 |
| 10 | अमृत काल में भारत की वैश्विक भूमिका | राजकुमार श्रीवास्तव | 40–41 |
| 11 | सुरक्षा की सार्वभौमिक अवधारणा | डॉ आशु शुक्ल | 42–45 |
| 12 | सृजन शिव | अनिल महाजन | 46–51 |
| 13 | कुछ लिखिये... | दिवाकर दीक्षित | 52 |
| 14 | स्मृतियों के झरोखे से – संस्मरण | दुर्गेश माधव अवस्थी | 55–56 |
| 15 | अंतर्ध्वनि | डॉ मलय चतुर्वेदी | 57–58 |
| 16 | युगभारती की आत्मिक शक्तिः परिवार बोध | अजय शंकर दीक्षित | 59–60 |
| 17 | संस्मरण | हरिकांत मिश्र | 60 |
| 18 | दीनदयाल विद्यालय – एक आत्मानुभूति | डॉ पंकज श्रीवास्तव | 63–65 |
| 19 | एकात्म मानववाद सिद्धांत की विवेचना | अम्बरीष त्रिपाठी | 66–67 |
| 20 | विद्यार्थी जीवन के संस्मरण | प्रो. मनोज अवस्थी | 68 |
| 21 | 'अन्धायुग' की अंधी उपज – अश्वत्थामा | प्रो. पंकज सिंह | 71–73 |
| 22 | बाकी लोग, तुम्हारे भाई नहीं हैं क्या? | मनीष कृष्ण | 74–75 |
| 23 | उत्कृष्ट शिक्षण के सूत्र | डॉ दुर्गेश वाजपेयी | 76–77 |
| 24 | आपदाओं के दौरान सुरक्षित और सशक्त समाज | कप्तान शैलेंद्र दीक्षित | 78–80 |
| 25 | कानपुर से गोमुख – एक अविस्मरणीय यात्रा | डॉ सुरेंद्र अग्निहोत्री | 84–86 |
| 26 | चित्रमाला | | |
| 27 | समाचार पत्रों में युगभारती | | |
| | **(काव्य–अनुभाग)** | | |
| 28 | कविता मन का विश्वास | ओमशंकर | 99 |
| 29 | यह भारतवर्ष महान मेरा | डॉ पवन मिश्र | 100 |
| 30 | आजादी का उत्सव | सतीश चन्द्र गुप्त | 101 |
| 31 | मैं.... | ओमशंकर | 102 |
| 32 | भूकम्प की विभीषिका | कप्तान शैलेन्द्र दीक्षित | 103 |
| 33 | उसी राष्ट्र के नील गगन में फहरे सदा तिरंगा | सुभाष शर्मा | 104 |
| 34 | चिंता है भारत में क्यों भ्रष्टाचार बढ़ा | ओमशंकर | 105 |
| | **(ENGLISH SECTION)** | | |
| 35 | The education systems in India and Germany & a comparison | Abhai Gupta | 106-107 |
| 36 | The need to boost entrepreneurship to make India a Superpower | Dr Apoorva Ranjan Sharma | 108 |

# सम्पादक की लेखनी से...

## वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः

शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा और स्वावलम्बन हेतु कृत–संकल्पित हमारी संस्था 'युगभारती' के राष्ट्रीय अधिवेशन–२०२४ के अवसर पर 'युगप्रभा' स्मारिका का विशेषांक प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्षानुभूति हो रही है।

समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाना और सामूहिक प्रयासों से लोगों के जीवन को बेहतर बनाना ही हमारा उद्देश्य रहा है। इसी की पूर्ति हेतु पूरे भारत और विश्व के अन्यान्य देशों में पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर की भावभूमि से पल्लवित और पोषित हमारे सदस्य सदा प्रयासरत रहते हैं। युगप्रभा का यह अंक हमारे उन्हीं सदस्यों की भावनाओं और समाज में किये जा रहे उनके सार्थक प्रयासों की अनुपम अभिव्यक्ति है। यह अंक, विद्यालय के पूर्व छात्रों की अमिट स्मृतियों का एक भावनामयी ऐतिहासिक दस्तावेज है, यह बानगी है हमारे आत्मिक सम्बन्धों की, समाजोन्मुखी प्रयासों की।

समाज के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित विद्यालय के पूर्व छात्रों और हमारे मार्गदर्शक आचार्यों ने इस स्मारिका हेतु हमें अपनी प्रविष्टियां उपलब्ध कराईं। स्मारिका के इस अंक के प्रकाशन हेतु इसे संरक्षण प्रदान करने वाले आचार्य ओमशंकर जी और आचार्य दीपक जी का आशीर्वाद हम सभी का सम्बल बना। परामर्शदाताओं ने बहुमूल्य सुझाव दिए और सम्पादक मण्डल के सदस्यों ने पूरी सजगता और तत्परता से अपने दायित्वों का निर्वहन किया। मैं इन सभी का हृदय का आभार ज्ञापित करता हूँ। स्मारिका हेतु आपके सुझाव, आपके विचार हमें भविष्य में और बेहतर करने की प्रेरणा देंगे। समवेत प्रयासों की परिणिति यह ''युगप्रभा विशेषांक'' आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है।

**वीरेंद्र त्रिपाठी**
**(प्रधान सम्पादक)**
**युगप्रभा विशेषांक**

# पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, अर्थात्...

**(आचार्य श्री ओमशंकर जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज के साथ–साथ पं0 दीनदयाल विद्यालय, कानपुर के छात्रों के व्यक्तित्व के उत्कर्ष में लगा दिया। उन्होंने सदा हम सभी को राष्ट्रार्पित जीवन जीने की प्रेरणा दी। प्रस्तुत लेख में आचार्य जी ने दीनदयाल विद्यालय की स्थापना के पीछे की भावभूमि तथा विद्यालय की विकास यात्रा का उल्लेख किया है।)**

पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा–जगत का आज एक सुचर्चित नाम है। हमारे अनेक अपने आत्मीय जन का विशेष आग्रह है कि, इस पर एक परिचयात्मक आलेख/निबन्ध लिखूँ। क्यों ? क्योंकि इसके स्थापना काल के पूर्व से ही इससे मेरा परिचय रहा है। आप कहते होंगे कि स्थापना–काल के पहले से परिचय होना एक अटपटी सी बात है। सामान्य रूप से सभी को यह एक पहेली जैसी बात लग सकती है, लगनी भी चाहिए, किन्तु 11 फरवरी 1968 की हृदय विदारक उस दुर्घटना के समाचार से जो भी अवगत है, उसे मेरे इस पहेलीनुमा कथन के साथ परिचयात्मक सूत्र जोड़ने में कुछ सुविधा अवश्य होगी।

जुलाई 1967 से जून 1968 तक मैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का पूर्णकालिक कार्यकर्ता याने प्रचारक था। कार्यक्षेत्र था हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)। जिले की तीन तहसीलें, हमीरपुर, मौदहा और चरखारी तहसीलें। विभाग केन्द्र था झाँसी। पूरे विभाग में चार जिले थे, हमीरपुर, बाँदा, जालौन और झाँसी। विभाग की बैठक हेतु हम चारों जिलों के प्रचारक 10 फरवरी की रात्रि में ही झाँसी संघ कार्यालय पहुँच गए थे। अगले दिन बैठकें पूरी होने के बाद 12 फरवरी को माताटीला बाँध देखने के लिए सभी बन्धु वहाँ के लिए प्रस्थित हुए। वहाँ के प्रायः पूरे स्वरूपों के दर्शन के बाद विभाग प्रचारक श्री श्रीकृष्णदास जी अनौपचारिक रूप से पुनः सबके साथ बैठना चाहते थे, किन्तु झाँसी के तत्कालीन जिला प्रचारक श्री राजेन्द्र जी अग्निहोत्री बैठक के पहले ही अपने द्वारा पूर्व आयोजित बैठक हेतु झाँसी लौट जाना चाहते थे। माननीय दास जी ने उनसे आग्रह किया कि वह बाँध पर बने हुए सर्किट हाउस में जाकर श्री बापूराव जी सरदेसाई को फोन पर कह दें कि बैठक वो कर लें, हम लोग कुछ विलंब से पहुँच पायेंगे। राजेन्द्र जी फोन करने चले गए। हम शेष बैठने के लिए उचित स्थान देखने लगे।

कुछ देर बाद देखते क्या हैं, कि राजेन्द्र जी रोते लड़खड़ाते चले आ रहे हैं और दूर से ही भर्राये स्वर में बोलते हैं 'दासजी ....दीनदयाल जी की हत्या हो गयी।' दास जी का साश्चर्य स्वर गूँजा 'क्या कहते हो?'

प्रिय पाठकों ! ये आवाजें आज भी जब तब मेरे अन्तर्मन में गूँजने लगती हैं और मैं न जाने किन भावों में खो जाता हूं कुछ ही पलों में गहरे सन्नाटे के बीच हम सभी अपने–अपने गन्तव्य याने कार्य क्षेत्रों की ओर प्रस्थित हो गए।अगले दिन समाचार फैल चुका था । संघ के सुविस्तृत परिवार में एक गहन वेदना के साथ ही राष्ट्रघाती तत्वों के साथ निबटने का चिन्तन और परं वैभवं नेतुं एतत् स्वराष्ट्रम्... के महायज्ञ की अर्चियों के शतगुणित प्रज्वलन का दृढ़ संकल्प। इसी संकल्प के साथ समर्पित एक आहुति है दीनदयाल विद्यालय, यह विद्यालय व्यक्तिगत मान–प्रतिष्ठा, लाभ–लोभ, पारिवारिक पूर्वजों की स्मृतियों का समाजीकरण अथवा अन्य किसी व्यक्तिगत हित के लिए नहीं बनाया गया। यह बनाया गया पं. दीनदयाल उपाध्याय के राष्ट्रीय वैभव के अधूरे अभियान को पूरा करने के लिए, नई पीढ़ी में अपनी सनातन संस्कृति को तार्किक दृष्टि से परिपोषित करने के लिए और मैकालीय शिक्षा पद्धति से उत्पन्न अंग्रेजी भाषा और विचार के व्यामोह को समाप्त करने के लिए।

आत्म निर्भरता, आत्म ज्ञान, अध्यात्मोन्मुख भौतिकता और आत्मविश्वासयुक्त पीढ़ी का निर्माण इस विद्यालय का उद्देश्य रहा है और इसीलिए विद्यालय ने अपना ध्येय वाक्य धारण किया– **''प्रचण्ड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल आत्मविश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता एवं निस्सीम भाव सम्पन्ना मनः शक्ति का अर्जन कर अपने जीवन को निःस्पृह भाव से भारत माता के चरणों में अर्पित करना ही हमारा परम साध्य है।''**

ध्यान रखना होगा इसके भौतिक स्वरूप निर्माण में गोलोकवासिनी श्रीमती सुशीला नरेन्द्रजीत सिंह उपाख्य बूजी और इसके प्राणिक संचरण के मूल में सर्व स्वर्गस्थ माननीय भाऊराव देवरस, बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह, प्राध्यापक रज्जू भैय्या, माननीय अशोक सिंहल प्रभृति वे अनेक तपस्वी संघ के कार्यकर्ता थे, जो आजीवन गुनगुनाते हुए अपनी इहलीला पूर्ण कर विदा हो गए। त्वदीय कार्याय.... कहने का तात्पर्य यह कि श्रद्धेया बू जी की भावना भरी कल्पना श्रद्धेय भाऊराव का विचार और श्रद्धेय अशोक जी की क्रियात्मकता को श्रद्धेय बैरिस्टर साहब का सशक्त संबल ही इस विद्यालय का आधार है।

इस भूमिका के बाद उस दृश्य पर ध्यान दिलाना चाहता हूँ जब दिनांक 23 फरवरी 1969 को विद्यालय का शिलान्यास हुआ था। कर्मयोगी हुतात्मा पं. दीनदयाल उपाध्याय के स्मृति मन्दिर का निर्माण होने जा रहा है और शिलान्यास करेंगे इस आधुनिक युग के योगी पूज्य श्री गुरू जी। यह समाचार जिस किसी स्वयंसेवक को मिला, बरबस ही खिंचा चला आया। सुविस्तृत सजे हुए पंडाल में लगभग एक सहस्र भावना से भरे हुए राष्ट्रभक्तों के बीच पूज्य श्री गुरु जी के बौद्धिक के पूर्व जब श्री अशोक जी का मर्मस्पर्शी गीत गूंजा ''भारत के भाल पर कुंकुम से सजा एक अक्षत... असमय ही झर गया...'' तो सिसकियों के साथ पूरा पंडाल स्तब्ध सा रह गया था और उसी स्तब्धता के बीच लखनऊ की कार्यकर्ता सुश्री दया बहिन संज्ञाशून्य होकर लुढ़क गयीं थीं। अद्भुत और अविश्वसनीय दृश्य था वह। समय अपने बोझिल पाँवों से चलता जा रहा था। हम संघ के स्वयंसेवक अपने व्यक्तिगत जीवन को जीते हुए राष्ट्र यज्ञ में नियमित आहुतियाँ भी देते जा रहे थे अर्थात् संघ की शाखा पर नियमित जाते हुए दायित्वों का निर्वहन भी कर रहे थे। लखनऊ में शीत शिविर लगा। स्वाभाविक रूप से मैं भी भाग ले रहा था। श्रद्धेय भाऊराव बैठक ले रहे थे। उसमें उन्होंने दीनदयाल विद्यालय की भावी योजना के स्वरूप को बताते हुए यह भी आह्वान किया कि जिनको अध्यापन में रुचि हो और उनकी पढ़ाई का कैरियर भी अच्छा हो, वे स्वयंसेवक उस विद्यालय में अध्यापन हेतु प्रयास कर सकते हैं। मैंने भी सूचना सुनी, किन्तु केवल सूचना की तरह से। क्योंकि उस समय मैं उन्नाव के एक महाविद्यालय में अध्यापन कर रहा था। समय अपनी उसी गति से अब भी गतिमान था। पं. दीनदयाल विद्यालय को प्रारम्भ करने की त्वरा श्रद्धेय बू जी को अशांत किए रहती थी। शिलान्यास के पश्चात् उन्होंने अपने नितांत निजी संसाधनों को झोंक कर व्यवस्थित वास्तु विधि के साथ भवन का निर्माण करवाना प्रारम्भ कर दिया और शुभ मुहूर्त दिखवाकर गुरु पूर्णिमा के दिन 18 जुलाई 1970 को सरस्वती शिशु मन्दिर तिलक नगर में ही विद्यालय की पढ़ाई का उद्घाटन करवा दिया। उस दिन उद्घाटन मंच बना शिशु मन्दिर का विशाल–कक्ष। एक सामान्य से मंच पर मुख्य वक्ता अतिथि के रूप में श्रद्धेय श्री भाऊराव देवरस, अध्यक्ष श्री इन्द्रजीत जैन, श्री अशोक सिंहल और प्रथम प्रधानाचार्य के रूप में ठाकुर चन्द्रपाल सिंह। अध्यापक के रूप में पहले मुझे और दो ही चार दिन के बाद श्री प्रयाग सिंह जी को श्रद्धेय अशोक जी ने वहाँ लगा दिया। इस प्रकार प्रधानाचार्य सहित हम तीन अध्यापक, एक श्याम लाल चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, आंशिक सहयोगी शिशु मन्दिर के आचार्य श्री आनन्द जी और श्री घनश्याम जी के साथ विद्यालय की कक्षा प्रारम्भ हो गयी। सरस्वती शिशु मन्दिर के बरामदे में कुल छात्र थे 24 सबसे शीर्ष छात्र थे चि. शशि शर्मा क्योंकि उनको शिशु मन्दिर की पंचम कक्षा में प्रदेश भर में प्रथम स्थान मिला था।

सत्रान्त के दिन मई 1971 में श्रद्धेय भाऊराव की प्रेरणा से श्री शन्तनु रघुनाथ शेंडे जी आ गए। अब आगामी सत्र में हम लोग अपने नए भवन में पहुँच जायेंगे, इस उत्साह के साथ विद्यालय का प्रथम सत्र सम्पन्न हो गया।

नवीन सत्र की सोत्साह तैयारी। निर्माणाधीन भव्य भवन के जो भी कक्ष निर्मित होते जाएँगे, हमारी कक्षाएँ उनमें चलती रहेंगी। प्रधानाचार्य जी (ठाकुर चन्द्रपाल सिंह) का निवास वी.एस.एस.डी. कॉलेज के आचार्य–आवास में रहेगा। शेंडे जी विद्यालय–भवन में ही रहेंगे। मैं उन्नाव से आता रहूँगा और प्रयाग जी भी अपने निवास रेलवे कालोनी से आते–जाते रहेंगे।

लगभग एक महीने के बाद ही मैं भी विद्यालय –भवन में निवास करने लगा। इस अस्थायी व्यवस्था और स्थायी विचारों के साथ नया सत्र प्रारम्भ हो गया। सप्तम कक्षा का एक वर्ग (सेक्शन) और षष्ठ कक्षा के दो वर्ग किन्तु कुल छात्र संख्या पैंसठ। इस क्रम में एक उल्लेखनीय बात का स्मरण हो आया, उसे मैं अवश्य लिखना चाहूँगा। जब हम लोग अपने पूरे विद्यालय के साथ स०शि०मं०, तिलक नगर के अतिथि थे तो उस समय शिशु मन्दिर के प्रधानाचार्य थे श्री मोहन लाल जी, पूरा नाम संभवतः मोहन लाल श्रीवास्तव। बड़े व्यवस्थित, सुयोग्य और मिलनसार प्रकृति के प्रधानाचार्य थे, श्री मोहन लाल जी। उनका कार्यालय छोटा, किन्तु सुव्यवस्थित था। उसी कार्यालय की मेज की साइड में एक कुर्सी हमारे ठाकुर साहब की भी लगी रहती थी और मैं अथवा अन्य आचार्य आवश्यकतानुसार अभिभावकों के लिए आरक्षित तीन कुर्सियों का उपयोग कर लिया करते थे। वहीं पर एक दिन श्री मोहन जी ने हमारे प्रधानाचार्य जी से कहा ''ठाकुर साहब थोड़े दिन आपके साथ सहज ढंग से बैठने का आनन्द ले लें। फिर तो आपका विद्यालय इस स्तर का हो जायेगा कि, मिलने के लिए भी समय लेना पड़ेगा।'' बात हँसी में विलुप्त हो गयी। मुझे ऐसा लगा कि माँ सरस्वती ने ही उनकी बैखरी का उपयोग करके यह सूचना दे दी थी क्योंकि 90 के दशक में प्रवेश परीक्षा के समय जब वह एक बार आए थे, तो उन्हें कई अवरोधों के बाद मुझसे मिलने का अवसर मिला था और तब उन्होंने अपनी उस बात को याद करते हुए मुझे बधाई भी दी थी। धन्य हैं उस पीढ़ी के कार्यकर्ता।

द्वितीय सत्र के प्रारम्भ से ही छात्रावास–संचालन का ताना–बाना तैयार किया जाने लगा था। सर्व प्रथम छात्रावास में मात्र 19 छात्र प्रविष्ट हुए। भोजनालय की अस्थायी व्यवस्था के लिए वी.एस.एस.डी. कॉलेज के कर्मचारी की सहायता ली गयी। शौचालय और स्नानादि के लिए हम लोग (मैं और श्री शेंडे जी सहित सभी अन्तेवासी उसी महाविद्यालय के छात्रावासीय शौचालयों और स्नानागारों का प्रयोग करते थे। यद्यपि शिविरोचित व्यवस्था की गयी थी। किन्तु बच्चे उसमें जाने से हिचकते या कह सकते हैं डरते थे। श्रद्धेया बू जी उन दिनों में श्रीनगर (कश्मीर) में थी। कानपुर आकर वह सर्वप्रथम विद्यालय आयीं और विद्युत गति से विद्यालय में व्यवस्थित रूप के स्नानागारों और शौचालय का निर्माण हो गया। आशय यह कि श्रद्धेया बूजी का उद्देश्य विद्यालय के नवांकुरों को तापन्तप्त भारत माता को सघन छाया प्रदान करने के लिए यथाशीघ्र वटवृक्ष के रूप में विकसित करना है तो इसके लिए अभी उनको सुविधा पूर्वक पाला जाए। विद्यालय में हनुमान जी महाराज की प्राण प्रतिष्ठित मूर्ति की स्थापना भी राष्ट्रभक्त नयी पीढ़ी को बल और विक्रम से उद्दीप्त करने के उद्देश्य से ही की गयी थी।

हनुमान जी महाराज की मूर्ति प्रतिष्ठापन के प्रबल आग्रह के पीछे श्रद्धेया बू जी का वही भाव झलकता था, जो समर्थ गुरूरामदास का शिवाजी महाराज के समय में था। वह भी चाहती थीं कि प्रत्येक क्षण पूरा विद्यालय परिवार हनुमान जी महाराज की अपरिमित सात्विक शक्ति से आवेष्टित रहे। इसीलिए उन्होंने प्राण प्रतिष्ठा के लिए मुख्य यजमान चुना कर्मयोगी परम पूज्य श्री गुरुजी को और पौरोहित्य का भार सौंपा काशीस्थ वाराणसेय

संस्कृत वि. विद्यालय के वेद विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीकृष्णा देवजी को। प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम भी अविस्मरणीय था।

अन्त में विशाल जनसमूह के समक्ष जो उद्‌बोधन पूज्य श्री गुरुजी ने दिया था, उसे परिपूर्ण मानव नाम से एक छोटी सी पुस्तिका में लोकहित प्रकाशन लखनऊ ने प्रकाशित भी किया था। विद्यालय के पुस्तकालय में वह अवश्य सुरक्षित होगी। ध्यातव्य है उन्होंने प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम अपने शरीर की गंभीर शल्य चिकित्सा के उपरान्त किया था। महापुरुषत्व का यही परिचय है। इस महनीय आयोजन की तिथियाँ थीं 17, 18 और 19 फरवरी 1971। धीरे–धीरे विद्यालय का वटवृक्ष नवपल्लवों को धारण करते हुए वृद्धिंगत हो रहा था तभी उसके कोमल जीवन में ही दो बल्कि यों कहें तीन अघटित घटनाएँ घट गयीं श्रद्धेया बू जी और परम पूज्य श्री गुरुजी का परलोक गमन इसके बाद देश पर श्रीमती इंदिरा गाँधी द्वारा लगाया जाने वाला आपातकाल क्रमशः 25 अगस्त 1972, 2 मई 1973 और 25 जून 1975 तिथियाँ थीं। ये तीनों आघात विद्यालय की शैशवावस्था में ही उसको लगे। यह आपात–काल सचमुच में ही हमारे विद्यालय की अग्नि परीक्षा थी। इस अग्नि परीक्षा में कुंदन कुछ और ही तेजस्विता के साथ उद्दीप्त हुआ, पीतल काला पड़ गया और प्लास्टिक भस्म होकर राख से भी बदतर हो गयी। इस 21 महीने की कालावधि में विद्यालय के साथ जो कुछ घटित हुआ उसके लिए एक अलग से स्वतन्त्र लेख लिखने की आवश्यकता है। अतः इसको इसी संकेत के साथ छोड़ देते हैं कि संकट जीवन की परीक्षा के रूप में आता है, इससे घबराना नहीं चाहिए, इससे पार पाने की नित्यसिद्ध तैयारी रखनी चाहिए।

आपात–काल के प्रारंभिक काल में ही हाईस्कूल बोर्ड का पहला बैच निकला। कुल छात्र 30 उत्तीर्ण 30 परिणाम 100%, 17 प्रथम श्रेणी और 13 द्वितीय श्रेणी। 17 में से 4 ससम्मान, इन चार में से एक को प्रदेश में नौंवा स्थान (शशि शर्मा)। शिक्षा निदेशक ने पहली बार प्रदेश में प्रथम 10 स्थान वाले छात्रों और उनके प्रधानाचार्यों को सम्मानित करने की योजना बनाई और विद्यालय उस योजना का लाभार्थी बनने में सफल हुआ। शिक्षा–जगत में विद्यालय चर्चित हुआ। समाज का ध्यान आकर्षित हुआ और आपात–काल समाप्त होते ही कीर्तिमानों की झड़ी लग गयी। परिणाम यह हुआ कि कहाँ हम लोग प्रथम बैच में तोड़–जोड़ कर 30 छात्र जुटा पाए थे और कहाँ षष्ठ कक्षा की प्रवेश–परीक्षा पूरे देश में चर्चा का विषय बन गयी। सर्वत्र सर्वदिक दीनदयाल विद्यालय का नाम सुचर्चित और सुसम्मानित होता चला गया।

हम युगभारती के परिवारी जन उसी शैक्षिक तपस्थली का प्रतिसाद हैं। अँधेरे का प्रकाश, निराशों की आशा और विश्व का विश्वास हैं हम। हम राष्ट्र मन्दिर की नीराजना की पुलकती बाती और राष्ट्रयज्ञ की समिधा हैं। हम पं दीनदयाल उपाध्याय के अधूरे सपनों के उत्साही चितेरे और सनातन का शाश्वत संकल्प हैं। पहले हम दीन दयाल विद्यालय में थे अब दीनदयाल विद्यालय हम में है। वहाँ के प्रमाणपत्र आज हमको प्रमाणित कर रहे हैं। हम सबको भली प्रकार याद है, जब हमारे अंशकालिक शिक्षक और सदाचार वेला के प्रभावी उपदेशक श्री जागेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव उपाख्य जे०पी० जी ने विशाल कक्ष में कहा था – ''प्यारे बच्चों जैसे गंगा मात्र एक नदी नहीं, तुलसी मात्र एक पादप नहीं, गऊ मात्र एक पशु नहीं उसी प्रकार पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, एक विद्यालय नहीं।''

अतः दीनदयाल विद्यालय पर लिखना अपनी भावनाओं को संपुटित करना है और ये भावनाएं हैं कि एक संपुट में समाने को तैयार नहीं।

**» ओमशंकर**

**22 अगस्त, 2024**

# A Beacon of Excellence and Inspiration-From Our School to Global Recognition

## Shaping tomorrow with determined aspirations

Er. Devarshi Mishra awarded with
Global Excellence Awards, England 2024

In the annals of our school s history, one name shines brightly Er. Devarshi Mishra. His journey is a remarkable testament to the transformative power of mentorship and an unwavering commitment to academic excellence. It all began in 2007, a pivotal year when Er. Devarshi Mishra embarked on his distinguished career. Equipped with an extensive knowledge of mathematics, he set out to unravel the complexities of these subjects and inspire young minds. His mission extended beyond mere teaching; it was about instilling confidence and belief in every student who walked into his classroom.

His classrooms soon became sanctuaries of learning, where students not only absorbed knowledge but also received steadfast support and encouragement. His influence transcended textbooks and profoundly impacted the lives of his students. His commitment to personalized guidance ensured that every student received the support they needed, ensuring no one was left behind on their academic journey. Success stories emerged from every corner, with his students achieving remarkable feats in exams like IIT-JEE and NEET. Among his many accolades, he has been honoured with the prestigious Teacher Excellence Award in both 2023 and 2024, recognizing his exceptional commitment and impact in education. Additionally, he has been celebrated as a Captain of the Industry, a tribute to his leadership and innovation not only in education but also in shaping broader industry landscapes.

He was also awarded with Global Excellence Award, England 2024. During this event, the India edition of the Global Book was also launched. This book details the work of Er. Devarshi Mishra. In addition to Er. Devarshi Mishra, the book features notable personalities such as singer Kumar Sanu, Telangana Minister Poonam Prabhakar, poet Dr. Kumar Vishwas, and motivational and spiritual speaker Jaya Kishori, among others. He received this honor from Chandrashekhar Phalke, grandson of Dadasaheb Phalke: Yogi Raj, the artist behind the Ram Temple statue in Ayodhya; Suresh Ramburn, former Secretary to the Prime Minister of Mauritius; and Manish Kumar, President of Global Book India, along with Sanjay Panjwani. As an esteemed alumnus of our school, Er. Devarshi Mishra achievements reflect the core values of our institution.

Shrimant Jyotiraditya Scindia (Civil Aviation Minister)
Joins Er. Devarshi Mishra at Prestigious Inaugural Function

## About Us

MGD Career Institute, a renowned educational institution established in 2013 in Gwalior(M.P.) under the visionary leadership of Er. Devarshi Mishra. Rooted in a commitment to excellence, MGD stands as a beacon of innovative learning, providing a comprehensive platform for students across various educational levels.

Specializing in preparing students for competitive exams such as the IIT-JEE and NEET examinations, MGD Career Institute has earned a distinguished reputation for its unparalleled success in guiding aspirants towards their academic goals. Through Er. Devarshi Mishra's remarkable teaching methodology, the daunting subjects of Mathematics and Science are transformed into accessible and comprehensible disciplines, empowering students to excel in these rigorous examinations.

At MGD, we believe in fostering an environment where learning transcends traditional boundaries, offering a holistic approach that nurtures intellectual curiosity and critical thinking skills. Our expert faculty members, with their dedication and expertise, provide personalized attention and support to each student, ensuring their holistic development and academic success.

With a proven track record of success, MGD Career Institute takes pride in its alumni who have gone on to excel in prestigious colleges and universities, serving as engineers, doctors, and leaders in their respective fields. Our commitment to excellence and innovation continues to drive us forward as we strive to empower the next generation of achievers to realize their full potential and make a lasting impact on the world.

## What we do?

- Our educational institution specializes in preparing students for a wide range of examinations, including school and board exams for grades 9 through 12, as well as competitive entrance exams such as IIT-JEE and NEET. Our comprehensive approach ensures that students are equipped with the knowledge and skills necessary to excel in these challenging assessments, whether they aspire to pursue engineering, medical, or other academic paths.
- In addition to academic preparation, we place a strong emphasis on individual personality development and skills enhancement. Through personalized coaching and guidance, we help students build confidence, improve communication skills, and cultivate leadership qualities. Our goal is to empower students not only to succeed academically but also to thrive in all aspects of their lives.
- With our dedicated team of educators and a supportive learning environment, we strive to unlock each student's full potential and prepare them for future success, whether it be in the competitive world of IIT-JEE, the demanding field of NEET, or any other academic pursuit they choose to embark upon.

# अधिवेशन क्यों?

यह सामान्य सा प्रश्न किसी भी मस्तिष्क में जन्म ले सकता है कि आखिर युग भारती के इस राष्ट्रीय अधिवेशन की क्या आवश्यकता है?

स्पष्टतः इस राष्ट्रीय अधिवेशन 2024 के माध्यम से हम समाज को एक संदेश देने जा रहे हैं, यह विश्वास दिलाने जा रहे हैं कि हम प्रत्येक स्थिति में उसके साथ खड़े हैं। हम समाज में व्याप्त भय और भ्रम को दूर करने जा रहे हैं, ताकि यह विश्वास पुष्ट हो सके कि सर्वत्र तिमिर ही व्याप्त नहीं है। समाज को हम आश्वस्त करना चाहते हैं कि स्थान–स्थान पर हमारे सदृश प्रकाश–पुंज हैं और इस कारण उसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

यह अधिवेशन समाज का अवलंबन बनने जा रहा है। इस अधिवेशन को साकार करने वाली पं. दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा संचालित संस्था युगभारती अवतार सरीखी एक अद्भुत संस्था है।

**'जब जब होई धरम कै हानी।**

**बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी॥**

**करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी।**

**सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी॥**

**तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा।**

**हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।''**

**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**

**अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽऽत्मानं सृजाम्यहम्।।४. ७।।**

**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।**

**धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।४.८।।**

अतः समाजोत्थान हेतु अवतार बारम्बार होंगे। हमारे ऊपर विश्वास करके हमारा साथ देने के लिए आप भी साथ आएं और संगठित होएं क्योंकि संगठन में अपार शक्ति होती है। इस कलियुग में यह और भी महत्त्वपूर्ण है। 'सङ्घे शक्तिः कलौ युगे।' हम भारत के राष्ट्रभक्त चाहते हैं कि हमारे आत्मीय जन अपनी आत्मशक्ति को भी पहचानें। आपके अन्दर अपार शक्ति है, आवश्यकता है बस उसकी अनुभूति की।

**» प्रवीण अग्रवाल**
(बैच 1983)

# सफल जीवन के दस सूत्र

**(पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर के प्रथम बैच (1975) के छात्र श्री शशि शर्मा जी ने प्रस्तुत आलेख में विद्यालय द्वारा प्रदत्त ज्ञान और अपने अनुभवों से उद्भूत जीवन में पालन किये जाने योग्य कुछ सूत्रों की चर्चा की है।)**

**चित्र :** (बाएं से आचार्य ओम शंकर त्रिपाठी जी, शशि शर्मा एवं स्व0 चंद्रपाल सिंह जी, वर्ष 1975)

मैं शशि शर्मा, दीनदयाल विद्यालय, कानपुर के प्रथम बैच का छात्र रहा। सन् 1975 में दशम कक्षा उत्तीर्ण की, प्रदेश में स्थान अर्जित किया। उसी अवसर पर लिए गए आज से 49 वर्ष पूर्व इस चित्र ने मनोभावों को ऐसा कुरेदा कि लेखनी उठानी पड़ी। विद्यालय के परिवेश और आचार्यो के मार्गदर्शन ने जो कुछ प्रदत्त किया, उन्हीं के आलोक में इन 49 वर्षों की यात्रा के कुछ सूत्र रख रहा हूँ। एक परिपक्व विषयवस्तु सम्प्रेषण के मापदंड पर आपको अधपकी या अधकचरी लग सकती है।

1. ऐसा प्रयास होना चाहिये कि आपके छोटे से छोटे कार्य में परिवार, समाज और देश का हित शामिल हो जाए। सहज रूप से यह स्वभाव ही बन जाये कि ऐसे किसी लाभ का मन में विचार ही न आए, जिसमें समाज का अहित छुपा हो।

2. आप किसी समस्या का सफलतापूर्वक हल तभी कर सकेंगे, जब आप 'किसी अन्य के द्वारा परिभाषित समस्या' का हल ढूंढने की बजाय स्वयं की दृष्टि से उस समस्या का आंकलन करें, उसे परिभाषित करें। लोगों की अपनी सीमाएं होती हैं, अपने स्वार्थ भी हो सकते हैं और यदि आप उनके अनुसार बताये गए लक्षणों के आधार पर समस्या हल करने निकले तो ध्यान रखिये कि आप हमेशा असफल होंगे।

3. समयानुरूप निर्णय लेने के प्रयास होने चाहिए। कभी तत्काल निर्णय लेने होते हैं और कभी निर्णय हेतु समय उपलब्ध रहता है। इसलिये यदि आवश्यक हो तो निर्णय लेने में देर न करें। इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी समझ का धरातल उर्वर रखें, खर–पतवार हटाते चलें ताकि त्वरित निर्णय ले सकें यदि समस्या के आयाम बड़े हों, तो उसके विभिन्न पक्ष समझें तथा आवश्यकतानुसार सलाह भी लें।

4. जीवन पथ पर एक गलती तो क्षम्य है किंतु दूसरी, तीसरी नहीं।

5. वस्तुतः आलोचना बहुत अप्रिय होती है किंतु बुद्धिमान आलोचक की बात स्वयं में सत्य का कोई न कोई तंतु अवश्य रखती है। उसे ढूंढ निकालें और स्वयं में सुधार के प्रयास करें।

6. आत्मश्लाघा अर्थात स्वयं के बखान और फोटो सेशन से बचें।

7. धन, यश, आयु, ऊर्जा, उपयुक्त वातावरण सभी को सहजता से प्राप्त नहीं होते। अतः इनका दुरुपयोग अक्षम्य है।

8. बिना कर चुकाये किया जाने वाला धनार्जन सबसे बड़ा राष्ट्रद्रोह है। नियमों का निष्ठापूर्वक पालन ही राष्ट्र–प्रेम के लिए प्रतिपल उठाई गई जिम्मेदारी है।

9. प्रतिदिन सुबह कार्यों को परिभाषित करें, प्राथमिकता के आधार पर उन्हें क्रम दें, सूचीबद्ध करें तथा रात्रि शयन से पूर्व अपनी कुशलता, अक्षमता का आकलन करें।

10. लोहार खाने में सेवइयाँ बेचने से बाज आयें अर्थात उपयुक्त स्थान पर ही अपना समय दें और अपने मूल स्वभाव से कभी समझौता न करें। यदि आप चंद्रमा हैं और इस आकाश में आपका काम नहीं, तो दूसरा आकाश तलाशें, वहां चमकें, अपनी शीतलता प्रदान करें।

**» शशि शर्मा**
(1975 बैच)

पालीवाल डॉयग्नोस्टिक्स (प्रा.) लि.
सहयोग
डॉ लाल पैथलैब्स

One of the 10 most admired Diagnostics Center in India

27 स्वर्णिम वर्ष 1997-2024

विश्वस्तरीय क्वालिटी
पैथोलॉजी व अन्य डायग्नोस्टिक्स सेवायें
किफायती दरों पर

डा० उमेश पालीवाल
निदेशक

NABL & ISO CERTIFIED LAB

पालीवाल
डायग्नोस्टिक्स मेडिकेयर प्रा. लि.

डा० मृदुला पालीवाल
निदेशक

केन्दीय लैबः– 117/एच–1/02 पाण्डु नगर ,जे.के. मन्दिर के सामने, कानपुर /05
फोन- 0512-2335500,2235821,2232962, 9305028499

21 उत्कृष्ट लैब्स | 190 + कलेक्शन सेंटर्स | 200 + पिकअप पॉइंट्स | 9.99 लाख कुल पेशेंट प्रतिवर्ष (2021-22) में

Help line- 9305028499,6390335500
customercare.pdpl@lalpathlabs.com
www.paliwaldiagnostics.in

आरोहम्
हैप्पीनेस होम....

प्रदेश का सबसे बड़ा व उत्तर भारत के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में एक

वरिष्ठ नागरिक आवास गृह

गंगा तट पर स्थित,आध्यात्मिक व एतिहासिक स्थल –

उपलब्ध सेवायें

✦पूर्णतया सुसज्जित ए.सी. कमरे ✦संयुक्त आधुनिक भोजनालय ✦जिमनेजियम, फिजियोथिरैपी ✦ स्टीम बाथ/जकुजी,सैलून✦ अति आधुनिक मिनी थियेटर ✦प्रेरक कक्षायें व लाइब्रेरी ✦फ्री वाई–फाई सुविधा ✦आर.ओ. द्वारा पानी की आपूर्ति ✦डाक्टर्स/मेडिकल चेकअप सुविधा ✦कैम्पस में ही गौशाला ✦टूर एंव ट्रेवल्स सुविधायें ✦कपड़े धोने व प्रेस की सुविधा ✦ए.सी.,हीटर व गीजर की सुविधा ✦निजी अटेन्डेन्ट की सुविधा ✦नियमित स्वास्थ्य परीक्षण ✦24 घटें सीसीटीवी के माध्यम से सुरक्षा.

लवकुश नगर, बिठूर–कानपुर, निकट वाल्मीकि आश्रम, एवं स्टेट बैंक चौराहा
सम्पर्क सूत्र– 8081211036,8081211038

/arohamkanpurofficial @ArohKanpur 94150 75016 Aroham kanpur arohambithoor

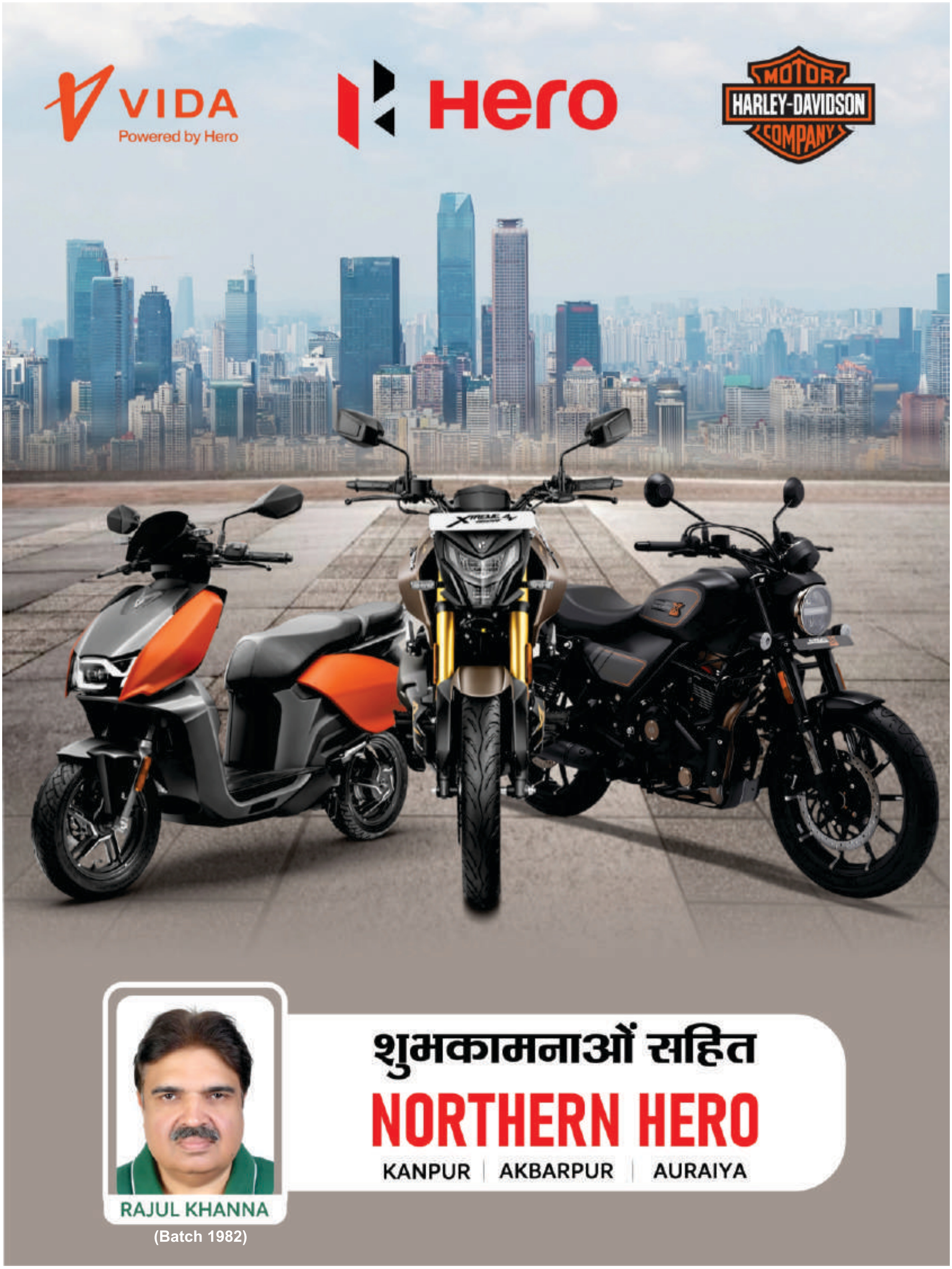
VIDA
Powered by Hero
Hero
MOTOR
HARLEY-DAVIDSON
COMPANY
शुभकामनाओं सहित
NORTHERN HERO
KANPUR | AKBARPUR | AURAIYA
RAJUL KHANNA
(Batch 1982)

# पं. दीनदयाल जी के विचार और उनकी सर्वकालिक प्रासंगिकता

**(प्रस्तुत लेख में श्री रामेंद्र सिंह कुशवाह जी (1996 बैच) ने पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों की स्पष्ट विवेचना की है। इस सारगर्भित लेख में स्पष्ट किया गया है कि दीनदयाल जी के विचारों की आधारशिला पर निर्मित दीनदयाल विद्यालय से प्राप्त शिक्षा अपने परिवार, समाज और कार्यक्षेत्र में किस प्रकार लाभकारी सिद्ध हो सकती है।)**

एकात्म मानववाद पं0 दीनदयाल जी का दर्शन है। दीनदयाल जी तृणमूल स्तर से समाज से जुड़े थे। उन्होंने समाज की अर्थव्यवस्था संस्कृति और राजनीति के विरोधाभासों को समझा और इन सभी क्षेत्रों में प्रगति सुनिश्चित करने और भारत को पुनः विश्वगुरू बनाने के लिए चिन्तन प्रणाली विकसित की। जिसे ''एकात्म मानववाद दर्शन'' कहा गया।

सरल शब्दों में इस दर्शन को समझने के लिए हम इसे मानव शरीर की आंगिक एकता के रूप में समझ सकते हैं। जिस तरह से मनुष्य के शरीर के सभी अंग महत्वपूर्ण होते हैं और इन सभी अंगों की एकता को ही शरीर कहते हैं। उसी तरह से परिवार समाज और राष्ट्र को यदि एक शरीर माने तो उसके लिए प्रत्येक व्यक्ति जाति, धर्म सभी उसके अंग है और जब सभी अंग अपना–अपना कार्य सुचारू रूप से करेंगे तो शरीर का स्वास्थ्य भी सही रहेगा और विकास भी होगा।

यहां पर पंडित जी ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिन्दु पर विचार रखते हुए कहा कि एकात्म मानववादी दर्शन का महत्वपूर्ण बिन्दु भावनात्मक संवेदनशीलता है। ये भावनात्मक संवेदनशीलता व्यक्ति को कर्तव्यबोध के साथ निस्वार्थ भाव से जोड़ती है और यही निस्वार्थ कर्तव्यबोध व्यक्ति को उसकी मौलिक प्रवृत्ति के अनुरूप कार्य करने की प्रेरणा देता है। जिससे व्यक्ति को भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त होती है और व्यक्ति अपने राष्ट्र की प्रगति में एक कारक बनता है।

अब इस दर्शन की सर्वकालिक प्रासंगिकता पर बात करते हैं। पंडित जी के उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि व्यक्ति मूल रूप से भावनात्मक प्राणी है। प्रत्येक व्यक्ति में मौलिक रचनात्मक प्रवृत्ति होती है, चाहे वह वैचारिक हो या भौतिक हो। जब व्यक्ति अपनी मौलिक प्रवृत्ति के अनुरूप रचनात्मक कार्य करता है, तब उसे संतुष्टि मिलती है। यदि उसे उसकी मौलिक प्रवृत्ति के रचनात्मक कार्यों से इतर लगाया जाता है, तो भले ही वह उस क्षेत्र में परिणाम अच्छा दे, परन्तु उसे संतुष्टि नहीं मिलेगी। मनुष्य इस तरह की स्थितियों में सौंपे गये कार्य को मशीन की भांति करता रहता है, परन्तु उसे भावनात्मक संतुष्टि नहीं मिलती और इसी कारण व्यक्ति तनाव में रहने लगता है और वह अपनों से भी दूर रहने लगता है। इस तनाव के कारण उत्पन्न वेदना को दूर करने का एक मात्र उपाय है भावनात्मक संतुष्टि जो एक दूसरे से प्रेम में एक दूसरे को समझने से ही प्राप्त हो सकती है।

स्पष्ट है कि हमारे विद्यालय ने हमें शिक्षा तो दी ही है, परन्तु साथी ही जो अमूल्य निधि दी है वह है दीनदयाल जी के विचारों को हम सभी में आरोपित करना। जहां तक मैं समझता हूँ कि भले ही मैं अपने वर्ग की प्रादेशिक सेवा में आर्थिक दृष्टि से कम सम्पन्न व्यक्तियों में हूँ परन्तु मै सबसे अधिक सकारात्मक और प्रसन्न

रहने वाले व्यक्तियों में हूँ ।

अपने विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों में भावनात्मक लगाव अद्‌भुत है चाहे पूर्व में दो सदस्य कभी एक–दूसरे से न मिले हों परन्तु यदि पता चलता है कि भैया दीन दयाल विद्यालय के छात्र है तो एक विश्वासपूर्ण भावनात्मक लगाव तत्काल उत्पन्न हो जाता है, जो वर्तमान समय के व्यवसायिक युग में अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलता है।

हमारा सभी से आग्रह यही है कि दीनदयाल जी के विचारों को अपने परिवार समाज और राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने हेतु अधिक से अधिक प्रसारित करें। और किसी कवि की पंक्तियाँ जो लेखन के वक्त अचानक याद आ गयी, इन्हें साकार रूप प्रदान करें।

**हम करें राष्ट्र आराधन, तन से मन से धन से**

**तन मन धन जीवन से, हम करें राष्ट्र का चिंतन।**

अंतर से, मुख से, कृति से निश्ंचित हो निर्मल मति से, श्रद्धा से मस्तक नत से, हम करें राष्ट्र अभिवादन अपने हंसते शैशव से, अपने खिलते यौवन से, प्रौढ़तापूर्ण जीवन से, हम करें राष्ट्र का अर्चन।

अपने अतीत को पढ़कर अपना इतिहास उलटकर अपना भवितव्य समझकर हम करे राष्ट्र का अर्चन।

**» रामेंद्र सिंह कुशवाह**
(1996 बैच)
डिप्टी कमिश्नर, ग्रा०वि०वि०, उ०प्र० सरकार

**"हमने किसी संप्रदाय या वर्ग की सेवा का नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की सेवा का व्रत लिया है। सभी देशवासी हमारे बान्धव हैं। जब तक इन सभी बन्धुओं को भारतमाता के सच्चे सपूत होने का गौरव प्रदान नहीं करा देते, हम चुप नहीं बैठेंगे। हम भारतमाता को सही अर्थों में सुजला, सुफला बनाकर रहेंगे। यह दशप्रहरणधारिणी दुर्गा बन कर असुरों का संहार करेगी य लक्ष्मी बनकर जन-जन को समृद्धि देगी और सरस्वती बनकर अज्ञानान्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलायेगी। हिन्द महासागर और हिमालय से परिवेष्टित भरतखण्ड में जब तक एकरसता, कर्मठता, समानता, सम्पन्नता,ज्ञानवत्ता, सुख और शान्ति की सप्तजाह्नवी का पुण्य-प्रवाह नहीं ला पाते, हमारा भगीरथ तप पूरा नहीं होगा इस प्रयास में ब्रह्मा, विष्णु, महेश सभी हमारे सहायक होंगे।विजय का विश्वास है, तपस्या का निश्चय लेकर चलें।"**

**(1968 में भारतीय जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में पण्डित जी के अध्यक्षीय भाषण का अंश, जो सदैव प्रेरक रहेगा ।)**

# विद्यालय का मेरे जीवन पर प्रभाव

**(मानस पटल पर अंकित पं0 दीनदयाल विद्यालय, कानपुर की अमिट स्मृतियों की इस भावनामयी अभिव्यक्ति में न्यायमूर्ति सुरेश कुमार गुप्त जी (१६७५ बैच) ने विद्यालय से प्राप्त शिक्षा और संस्कारों का अपने जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को शब्द रूप में निरूपित किया है। प्रस्तुत है एक भावना प्रधान लेख)**

मूलतः हम लोग ग्राम – सिसोलर, जनपद हमीरपुर, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। मेरे पिता स्व0 कृष्ण कुमार गुप्ता जी ने प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही ग्रहण की थी। इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वह कानपुर आ गये थे और उन्होंने कानपुर के पत्थर कॉलेज से कृषि स्नातक की उपाधि ली। उसी समय मेरे पूज्य पिता जी माननीय स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी (जो तत्समय संघ के प्रचारक थे) के संपर्क में आये और पूज्य पिता जी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयंसेवक बन गये। महात्मा गांधी की हत्या के समय जब संघ पर प्रतिबंध लगा था तो संघ में सक्रिय रहने के कारण उस समय पिता जी को भी जेल जाना पड़ा था।

हम लोग मूलतः कृषक परिवार से थे। कालांतर में पिता जी ने वर्ष १६६४ के आस पास मौदहा कस्बे के पास ईंट–भट्ठे का व्यवसाय शुरू किया था। इसी कारण वर्ष १६६५ में हम परिवारीजन ने कस्बा मौदहा में किराए के मकान में आकर रहना शुरू कर दिया था। १६७२ में पिता जी ने मकान का निर्माण करवाया। हम लोग अपने मकान में रहने लगे। मेरी प्रारंभिक शिक्षा मौदहा में ही संपन्न हुई।

उस समय मेरे पिता जी हमीरपुर जिले के जिला संघ चालक हुआ करते थे और चूंकि पूज्य आचार्य ओमशंकर जी हमारे जिले में ही पहले जिला प्रचारक भी थे, इसीलिये मेरे पिता जी भी पूज्य आचार्य जी से पूर्व परिचित थे। हमारे परिवार पर संघ का प्रभाव था। मैं भी शैशवावस्था से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का स्वयं सेवक था। मैं अपने चार भाइयों में दूसरे नंबर का था। उसी वर्ष १६६६–७० में पंडित दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय, कानपुर की शुरुआत हुई। मेरे पिता जी चाहते थे कि हम लोग पंडित दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय में ही शिक्षा ग्रहण करें। अतः मैंने और अनुज रमेश ने विद्यालय में प्रवेश पाने का निश्चय कर लिया था। जिस प्रकार आज विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा का आयोजन होता है, उस समय भी प्रवेश परीक्षा होती थी। अतः हम दोनों भाइयों को लेकर पिताजी कानपुर आये। मुझे कक्षा नवम में प्रवेश चाहिए था तथा मेरे अनुज रमेश को कक्षा सप्तम में। जून १६७३ में हम दोनों विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए प्रवेश परीक्षा में शामिल हुए। प्रवेश परीक्षा में मैं तो उत्तीर्ण हो गया परंतु मेरे छोटे भाई रमेश को प्रवेश नहीं मिल पाया। बाद में रमेश को दो वर्ष बाद कक्षा नवम में प्रवेश मिल पाया। छोटे भाई का मेरे साथ प्रवेश न हो पाने के कारण मुझे दुख हुआ। मेरे मन में यह था कि हम दोनों लोग छात्रावास में साथ रहेंगे, जिससे कि हम लोगों का मन लगा रहेगा किंतु ईश्वर को जो मंजूर होता है, वही घटित होता है।

मैं प्रारम्भ से ही संयुक्त परिवार में पला–बढ़ा था। कभी माता–पिता के संरक्षण से अलग नहीं हुआ था। इस कारण प्रारम्भ में विद्यालय पहुँचने के बाद घर की बहुत याद आती थी। जब मेरे पिता जी मुझे विद्यालय छोड़ने आ रहे थे तो उनकी प्रसन्नता की सीमा नहीं थी रास्ते में सभी लोगो से मेरी प्रशंसा भी कर रहे थे। कानपुर

पहुँचने के पहले तो मैं भी प्रसन्न था, उत्साहित था। किंतु छात्रावास पहुँचने के बाद जब पिता जी मुझे छात्रावास में छोड़कर जाने लगे तो मैं बहुत रोया था। मुझे घर की याद भी सता रही थी क्योंकि मैं घर परिवार से कभी अलग नहीं रहा था। लेकिन तीन–चार दिन बाद एक नये वातावरण में मैंने अपने आपको समायोजित कर लिया था। जब पिता जी मुझे विद्यालय में छोड़ने आ रहे थे तो मेरे मन में एक ही सवाल बार–बार आ रहा था कि जब हमारे क़स्बे में ही इंटर कॉलेज है तो मुझे कानपुर क्यों भेजा जा रहा है ? किंतु पिता जी दूरदर्शी थे। वह नहीं चाहते थे कि मैं अपने कस्बे में पढ़ाई करूँ क्योंकि कस्बे में न तो पढ़ाई का वातावरण था न ही उन विद्यालयों में बच्चो को सदाचार एवं संस्कार की शिक्षा दी जाती थी।

मेरे क़स्बे के विद्यालय में और यहाँ के वातावरण में जमीन आसमान का अंतर था। विद्यालय में अनुशासन इस प्रकार था कि विद्यालय के समय जब कक्षायें चल रही होती थी तो इतनी शांति रहती थी कि बाहर से आने वाले लोगो को ऐसा लगता था कि विद्यालय बंद है। विद्यालय के भूतल पर कक्षायें चलती थी और प्रथम तल पर छात्रावास था। उस समय छात्रावास में लगभग ४५ छात्र रहते थे। जो देश–प्रदेश के भिन्न–भिन्न स्थानों के निवासी थे।

छात्रावास में उस समय आचार्य श्री ओमशंकर जी एवं आचार्य श्री रघुनाथ शेंडे जी भी रहते थे। छात्रावास में प्रातः ४ बजे जागरण होता था। आचार्य श्री ओमशंकर जी बड़े स्नेहपूर्वक हम लोगों का नाम पुकारते हुए जगाते थे। प्रातः उठने के बाद सभी लोग प्रातः स्मरण से दिन की शुरुआत करते थे। तदुपरांत दैनिक दिनचर्या से निवृत होकर विशाल कक्ष में पूजा के लिए उपस्थित होते थे। छात्रावास में हम लोग अपना काम स्वयं करते थे। जैसे कपड़े धोना, साफ–सफाई करना, जूते में पॉलिश करना आदि। इस प्रकार विद्यालय में स्वावलंबी बनने की प्रथम शिक्षा भी प्राप्त हुई। अपने हाथ से काम करने के कारण धीरे–धीरे आत्मनिर्भरता की प्रथम सीख छात्रावास में ही मिली। घर में रहते हुए पूजा करने का कोई नियमित क्रम नहीं था और न ही सोने और जागने के समय की निश्चितता, किंतु विद्यालय के वातावरण में रहकर जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए। विद्यालय की संस्कारित करने वाली शिक्षा से ही भारतीय संस्कृति से प्रेम की शिक्षा भी हम लोगो ने पायी। शुरुआती कुछ दिनों को छोड़कर कुछ समय बाद तो हम लोगों की घर जाने की इच्छा भी नहीं होती थी। जब छुट्टियों में जाते थे तो सहपाठियो से रोते हुए विदा लेते थे।

विद्यालय में आने के बाद पूजा–अर्चना करने से मन में आत्मविश्वास का प्रादुर्भाव हुआ। जिससे मन में दृढ़ता तथा सभी परिस्थितियों से समाजस्य बनाने की क्षमता का विकास हुआ। छात्रावास के समय का एक संस्मरण याद आता है। उस समय एक घटना घटी। पुराने कानपुर इलाक़े में मुहर्रम के जुलूस में सनातन धर्म विश्वविद्यालय के छात्रों एवं मुस्लिमों के बीच हुए उपद्रव में एक छात्र की हत्या हो गई थी। मुस्लिमों के पथराव के कारण कुछ छात्र घायल भी हो गये थे। पूरे नवाबगंज, आजाद नगर तथा पुराने कानपुर क्षेत्र में कर्फ्यू भी लगा गया। चारो ओर भय का वातावरण था। हम लोग अपने छात्रावास में ही थे। हम सभी बहुत भयभीत थे। अतः आचार्य जी ने हम सभी लोगो की बैठक बुलाकर हम लोगो का साहस बढ़ाया जिससे उत्साहित होकर छात्रावास की छत पर सुरक्षा की दृष्टि से हम लोगों ने पत्थर भी इकट्ठे कर लिए थे और रात्रि में बारी–बारी से जागकर हम लोगो ने पहरा देने का भी निर्णय लिया और हम सब लोगो ने यह ठान लिया था कि यदि पुलिस की सुरक्षा तुरंत नहीं मिली तो हम लोग उपद्रवी, आक्रमणकारियो से स्वयं मुकाबला करेंगे। इस प्रकार साहस,

सुरक्षा एवं संगठन की भावना का प्रादुर्भाव विद्यालय में ही हुआ।

जिस समय मैंने विद्यालय में प्रवेश लिया था तो एक कक्षा में एक ही विभाग हुआ करता था। जिसमे कुल ३० छात्र थे। उनमें से हम छह छात्रावासी थे। यद्यपि विद्यालय में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा जरूर था किंतु अंग्रेजी भाषा की शिक्षा का स्तर भी उच्च कोटि का था। उस समय हम लोगो को प्रधानाचार्य डा० चन्द्रपाल सिंह जी अंग्रेंजी पढ़ाते थे। जो उच्च कोटि के विद्वान थे। विज्ञान आचार्य श्री प्रयाग जी, गणित आचार्य श्री महेश जी, जीवविज्ञान आचार्य श्री प्रकाश नारायण बाजपेई जी और हिन्दी कक्षाचार्य श्री ओमशंकर जी पढ़ाते थे। उस समय भी विद्यालय में आचार्य श्री ओमशंकर जी की सदाचार वेला होती थी। सदाचार वेला के माध्यम से जो संस्कार मिले वह आज तक अक्षुण्ण हैं। विद्यालय में लिखा ध्येय वाक्य "प्रचंड तेजोमय शारीरिक बल, प्रबल आत्म विश्वास युक्त बौद्धिक क्षमता, निस्सीम भावसंपन्नना मनः शक्ति का अर्जन कर अपने जीवन को निस्पृह भाव से भारत माँ के चरणों में अर्पित करना ही जीवन का परम साध्य है।" तब भी हम लोगो में ऊर्जा का संचार करता था और आज भी प्रेरणा प्रदान करता है।

तत्समय विद्यालय के प्रबंधक परम श्रद्धेय बैरिस्टर नरेंद्र जीत सिंह जी थे। जिनका हम सभी छात्रावासियों से आत्मीय लगाव था। वे समय–समय पर छात्रावास आकर हम लोगो का उत्साह वर्धन किया करते थे। चूँकि हम लोगो का प्रथम बैच था तथा हम ६ लोग हाई स्कूल की परीक्षा में सम्मिलित होने वाले थे हम लोगो को प्रेरणा देने का कार्य बैरिस्टर साहब करते थे। अक्सर छात्रावास में हम लोगों की कुशल क्षेम पूछा करते थे। हाई स्कूल की परीक्षा में कुल ३० विद्यार्थी सम्मिलित हुए थे। विद्यालय की परीक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहा। उन दिनों प्रदेश में हाईस्कूल का परिणाम १७–१८ प्रतिशत हुआ करता था। विद्यालय का शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम आने के कारण विद्यालय की ख्याति संपूर्ण प्रदेश में फैल गई थी। हम लोग अपने आप को गौरवान्वित महसूस करने लगे थे। परीक्षा के परिणाम से परिवार के लोग भी अत्यंत प्रसन्न थे।

जिस दिन परीक्षा का परिणाम आया उसी दिन २५ जून १९७५ को तत्कालीन केंद्र सरकार द्वारा आपातकाल की घोषणा कर दी गई तथा आपातकाल लागू होने के लगभग एक सप्ताह बाद पिताजी (जो उस समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला संघचालक थे) को MISA act के अन्तर्गत गिरफ्तार करके हमीरपुर के जिला कारागार में बंद कर दिया गया। मेरी कक्षा के विद्यार्थियों को आगे की शिक्षा जारी रखने के लिए विद्यालय छोड़ना था क्योंकि विद्यालय में उस समय मात्र हाई स्कूल तक ही शिक्षा प्रदान की जाती थी। हम छह छात्रावासी छात्रों में से २ विद्यार्थी अपने गृहनगर वापस चले गये थे। हम ४ लोग अनीत गर्ग, दुर्गेश रस्तोगी, जितेंद्र रस्तोगी और मैंने इंटर की शिक्षा के लिए बीएनएसडी इंटर कॉलेज में प्रवेश लिया। हम सब दीनदयाल विद्यालय छोड़ चुके थे तो नियमतः हमलोगों को छात्रावास भी छोड़ना था, किंतु हमारे पूज्य आचार्य श्री ओमशंकर जी को हम लोगो की बड़ी चिंता थी। उनका मानना था कि यदि हम छात्र कही बाहर रहकर अध्ययन करेंगे तो निश्चित रूप से हम लोगों के भविष्य पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। मुझे आज यह कहने में जरा भी संकोच नहीं है कि आचार्य जी का हम लोगो से अति आत्मीय लगाव था और इसीलिये आचार्य जी ने आदरणीय बैरिस्टर साहब से अनुरोध किया कि मुझे तथा मेरे तीन अन्य सहपाठियों को छात्रावास में ही रहने की अनुमति दे दी जाये। श्रद्धेय बैरिस्टर साहब ने सहर्ष अपनी अनुमति देते हुए कहा कि अभी तक आप इन बच्चों के कक्षाचार्य थे अब आप इन चार विद्यार्थियों के अभिभावक होने का दायित्व निभाइये। हम चार विद्यार्थी पंडित दीनदयाल विद्यालय के छात्रावास में रहकर रोज बीएनएसडी इंटर कॉलेज जाते थे। वास्तव में जिस समय सबसे अधिक बालक की देख–रेख की

आवश्यकता होती है, उस समय आचार्य जी द्वारा जो स्नेह एवं अपनत्व का संबल मिला उसे शब्दों में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता है। आज जब भी मैं सोचता हूँ तो अत्यंत भावुक हो जाता हूँ। यदि हम लोगो को छात्रावास में आश्रय नहीं मिल पाता तो शायद हम लोग हाईस्कूल से आगे की शिक्षा के लिए पुनः अपने कस्बे लौट जाते और जिस भविष्य का सपना हमारे अभिभावक गण ने देखा था वह शायद पूरा ना हो पाता। मेरा तो यह मानना है कि उन विषम परिस्थितियों में यदि विद्यालय का यह संबल नहीं मिला होता तो शायद मेरा भविष्य अंधकार मय हो जाता।

वर्ष १९७७ में विद्यालय का छात्रावास छोड़ने के बाद मेरी आगे की शिक्षा प्रयागराज में पूर्ण हुई। वर्ष १९८३–८६ में मेरे सबसे छोटे भाई आशीष गुप्त ने भी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी। उस दौरान केवल दो या तीन बार ही विद्यालय आने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रयागराज में रहते हुए प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करते हुए बहुत समय व्यतीत हुआ। १९९० में उत्तर प्रदेश अभियोजन सेवा में चयनोपरांत सहायक अभियोजन अधिकारी के पद पर मुरादाबाद, जालौन और शाहजहांपुर पदासीन रहा। वर्ष २००० की उच्चतर न्यायिक सेवा परीक्षा में सम्मिलित हुआ तथा २००५ में चयन के उपरांत अपर जिला जज के रूप में प्रथम पोस्टिंग उन्नाव जनपद में हुई। एक दिन आचार्य जी के बड़े भाई पूज्य राम शंकर त्रिपाठी दादा जी मेरे विश्राम कक्ष में मुझसे मिलने आये। तब मैंने श्रद्धेय आचार्य जी का मोबाइल नंबर दादा जी से लिया और उसी समय पूज्य आचार्य जी से बात की। उन्होंने कुशल क्षेम पूछने के बाद परिवार सहित कानपुर आने का आग्रह किया। मैं स्वयं भी आचार्य जी से मिलने का अत्यंत इच्छुक था। मैं सपरिवार रविवार को विद्यालय पहुँच गया, जहां मुझे ज्ञात हुआ कि पूर्व छात्रों की संस्था युगभारती का गठन आचार्य जी के संरक्षण में हो चुका है। वहाँ पहुँचने के बाद मेरी कई पूर्व छात्रों से भेंट हुई। भैया मनीष कृष्णा जी ने तुरंत मेरा नंबर अपने मोबाइल में संरक्षित किया तथा मुझसे प्रथम बैच के विदाई समारोह का समूह चित्र एवं पूर्व छात्रों के विवरण से संबंधित दिग्दर्शिका भेंट की, जो आज भी मेरे पास सुरक्षित है। तब से मैं युगभारती से जुड़ा हूँ और अत्यंत गर्व का अनुभव करता हूँ।

पंडित दीनदयाल विद्यालय ने मेरे जीवन में मूलभूत सकारात्मक परिवर्तन किए। विद्यालय से जो संस्कार मैंने ग्रहण किए वह ही मेरी पूँजी है। राष्ट्र निष्ठा से परिपूर्ण समाजोन्मुखी व्यक्तित्व का विचार भी विद्यालय की देन है। विद्यालय में अच्छी संस्कार युक्त शिक्षा का ही परिणाम रहा कि मेरा आत्मविश्वास कभी कमजोर नहीं हुआ। जीवन में कभी निराशा का भाव नहीं आया। वास्तव में विद्यालय में मेरा शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास हुआ। आज हम सब विद्यालय के पूर्व छात्र अति आत्मीय भाव से युगभारती संगठन के माध्यम से परस्पर एक दूसरे जुड़े हैं। यह परिवार भाव ही हमारी शक्ति है। हमारी युगभारती संस्था इसी भाव से पुष्पित एवं पल्लवित होती रहे, ईश्वर से यही कामना है।

**» न्यायमूर्ति सुरेश कुमार गुप्ता**

(बैच 1975)

अध्यक्ष, अपीलीय प्राधिकरण

गैर सरकारी व्यवसायिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश।

ब्रिज कैटरर्स
प्लेट से दिल तक

+91 9839120551

brijcaterers.com

104-A/99, Rambagh,
Kanpur - 208012

- Ajay Shankar Dixit
(Batch 1983)

पं. दीन दयाल उपाध्याय जी की असमय मृत्यु के पश्चात् बैरिस्टर साहब एवं सुश्री बूज़ी के द्वारा 18 जुलाई 1970 को स्थापित विद्यालय ने आज भी दीनदयाल जी की विचारधारा को जीवित रखा है। इस विद्यालय में सनातन धर्म के संस्कारों के साथ आधुनिक समय में नई पीढ़ी को समाजोन्मुखी विकास के लिए तैयार किया जा रहा है।

शौर्य प्रमंडित अध्यात्म - आदरणीय ओम शंकर जी के इस सूत्र के साथ यह विद्यालय निरन्तर समाज एवं राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

**युग भारती के इस अधिवेशन के लिए अनेकों शुभकामनायें।**

**Vishnu**
Team - Intigus

**GABAGRAM-NT**
Gabapentin 400/100mg + Nortriptyline 10mg Tablets

**Dalex-ER**
Divolproex Sodium Extended Release 250/500 mg **Tablets**

**Pregus-D 50/75**
Pregabalin 50/75 + Duloxetine 20 mg Capsules

**Profal-LA/Forte**
Propranolol 20/40 + Flunarizine 10/5mg Scored **Tablets**

MINDAX
A Division of Intigus

BRAINAX
A Division of Intigus

INTIGUS
PHARMA
Care With Emotions...

# सांस्कृतिक राष्ट्रवाद– चुनौतियां और हमारी भूमिका

**(राष्ट्र और राष्ट्रवाद की व्यापकता के साथ–साथ इस मार्ग में आने वाली चुनौतियों और हम युगभारती सदस्यों की भूमिका के विषय पर इस लेख के माध्यम से डॉ पवन मिश्र जी (1996 बैच) ने अपने विचार प्रस्तुत किये।)**

राष्ट्र एक अमूर्त संकल्पना है, जो किसी क्षेत्र के विभिन्न समूहों को साझे लक्ष्यों, विचारधारा व परम्परा से जोड़ती है। किसी राष्ट्र का शक्तिशाली या कमजोर होना इस बात पर निर्भर करता है कि वहां के निवासी अपने राष्ट्रीय हितों के लिये कितना समर्पित हैं। रंग, जाति, क्षेत्र, परम्परा और धर्म से विभेदित समाज को एक राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का मूल मंत्र है 'राष्ट्रवाद'।

यह विशुद्ध रूप से एक भाव है जो व्यक्ति के भीतर राष्ट्र की भावना को बलवती करता है और इस अनुभूति का सर्वोत्तम रूप है, 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद'। वैसे तो राष्ट्र को जोड़ने वाले कई तत्व हो सकते हैं– आर्थिक हित, राजनीतिक विचारधारा, विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएं किंतु इनमें से संस्कृति सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी होती है। संस्कृति, सभ्यता को प्रकाशित करने वाला एक तत्व है। यह शारीरिक एवं मानसिक अभिवृत्तियों को सशक्त करने का माध्यम है। संस्कृति एक क्षेत्र को दूसरे क्षेत्र से, एक समूह से दूसरे समूह को, एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से उनकी व्यक्ति निष्ठता को बनाये रखते हुए सर्वनिष्ठ हितों की प्राप्ति हेतु उन्हें मजबूती से जोड़ती है और यह जुड़ाव ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति का आधार है। जिसमें राष्ट्र को जाति, धर्म, क्षेत्र, परम्परा आदि के अलगाव की बजाय एक साझी संस्कृति के रूप में निरूपित किया जाता है, चित्रित किया जाता है। इसमें किसी भी राष्ट्र की विभिन्न जातियों, धर्मों भाषाओं, रीति–रिवाजों, परंपराओं आदि का रक्षण करते हुए उन्हें एकीकृत रूप से पुष्ट होते हुए देखा जाता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एक ऐसी विचारधारा है जो व्यक्तियों के सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व देती है तथा यह किसी भी राष्ट्र की अभिवृद्धि का एक प्रमुख कारक है। दूसरे अर्थों में यह समझा जा सकता है कि यह हमारे शरीर के मस्तिष्क की तरह ही होता है जो विभिन्न अंगों को जोड़कर शरीर को एक इकाई के रूप में संगठित रखने का कार्य करता है। विविधता राष्ट्र का आवश्यक अंग है और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद उसके वासियों को सांस्कृतिक रूप से एकता की अनुभूति कराने का एक सशक्त उपकरण है। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विभिन्न सांस्कृतिक समूहों को संगठित कर राष्ट्र की परिकल्पना को बल प्रदान करता है।

जब एकीकरण की इस अनुभूति को हम भारत के संदर्भ में देखते हैं तो यह और भी व्यापक हो जाता है। क्योंकि भारत की संस्कृति के मूल में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव है। अतः इसका परिदृश्य वैश्विक हो जाता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' की विचारधारा वाले भारत के संदर्भ में यदि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को पुष्ट कर लिया जाए तो यह मात्र भारत ही नहीं वरन पूरे विश्व के कल्याण के पथ को प्रशस्त करेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार भी आदर्शतम राष्ट्र की जो परिकल्पना की गई है उस के सारे तत्व भारतीय संस्कृति में अंतर्निहित हैं, सहज उपलब्ध हैं। एक यूरोपियन दार्शनिक हुए हैं सन्नेरात, उनके स्पष्ट विचार हैं कि भारत के अतिरिक्त पूरे विश्व में रखा ही क्या है? भारत के बिना यह विश्व मात्र एक ठूँठ है, ठूँठ। इसीलिये जब हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के माध्यम से भारत के सशक्तिकरण की बात करते हैं तो यह आवश्यक है कि हम इसे मात्र

अपने तक सीमित करने की बजाय इसकी सार्वभौमिकता पर दृष्टि करें। हमारे वेद 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की बात करते हैं। हम पूरे विश्व को जातिगत आधार पर ब्राह्मण बनाने की बात नहीं करते, हम सभी को हिन्दू बनाने की बात नहीं करते, हम किसी पंथ या सम्प्रदाय के विस्तारीकरण की बात नहीं करते। वरन् हम सभी को श्रेष्ठ बनाने का विचार रखते हैं। हम पूरे विश्व को श्रेष्ठ बनाने की बात करते हैं। क्योंकि जब सभी श्रेष्ठ होंगे तो मार्ग की तुच्छ नकारात्मक चीजें स्वतः धूमिल हो जाएंगी।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मार्ग में ढेरों चुनौतियां भी हैं। स्पष्ट रूप से प्रथमतः जो दिखता है, वह है विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक समूहों में मतभेद और इसका प्रमुख कारण यह है कि सामान्यतः लोग इस सिद्धांत की मूल आत्मा को समझने में ही असफल रहे हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में निश्चित रूप से अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठा का भाव है परन्तु दूसरी संस्कृतियों के प्रति इसमें घृणा नहीं है। सामान्यतः लोग सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में अपनी संस्कृति को दूसरी संस्कृतियों के साथ टकराव के रूप में देखते हैं। जबकि होना यह चाहिये कि जब दो संस्कृतियां मिलें, दोनों संस्कृतियों के अच्छे मूल्यों को आत्मसातः किया जाए और जब ऐसा होगा तो आपसी टकराहट का प्रश्न ही नहीं उठेगा। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बहाने यदि आपसी विद्वेष को बढ़ावा मिल रहा हो तब चुनौती बहुत बड़ी हो जाती है। विशेषकर तब, जब नकारात्मक दृष्टिकोण के साथ किसी पक्ष, किसी विचारधारा के छिद्रान्वेषण में कुछ शक्तियां लगी हों।

चूंकि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, अपनी संस्कृति की बात करता है तो एक और बहुत बड़ी चुनौती परम्परागतता और आधुनिकता के बीच के टकराव की आती है। इसके इतर धार्मिक और साम्प्रदायिक मतभेद की चुनौतियों के साथ–साथ राजनैतिक स्वार्थ सिद्धि भी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के मार्ग के कुछ और प्रमुख अवरोधक है।

यह निश्चित मानिए कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद ही हमारा भविष्य है। इस विचारधारा को पुष्ट करने हेतु हमें ढेरों प्रयास करने होंगे। हमारी भूमिका सदा ही सकारात्मक रहनी चाहिये। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद दर्शन का एक गूढ़ विषय है अतः अपनी संस्कृति के वास्तविक मूल्यों को पहले हमें स्वयं समझना होगा, उपनिषदों के मूल तत्व को आत्मसात करना होगा। हम सभी जानते हैं, पर उपदेश कुशल बहुतेरे। अतः जिस पथ, जिस विचारधारा के हम समर्थक हैं उसका स्वयं ही अनुसरण करना होगा, उसके मूल विचार को आत्मसात करना होगा।

वैश्वीकरण के इस युग में जब बाजारवाद हावी होता जा रहा है, हमें सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रसार के नए तरीके तलाशने ही होंगे जिनके मूल में समरसता का भाव हो। तब जाकर हम उदात्त भाव से जनमानस में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बीज का रोपण कर सकेंगे और इसके लिए आवश्यक यह है कि हम अपनी जड़ों को मजबूत करें। क्योंकि जब जड़ें मजबूत होंगी तभी हम दृढ़ होंगे और स्वयं को स्पष्टतः अभिव्यक्त कर पाएंगे। तब जाकर हम भारत के संदर्भ में विश्व गुरु की जो परिकल्पना है उसे मूर्त रूप दे पाएंगे। अतः हमारी भूमिका इस हेतु और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

हमें हमेशा यह भान रहना चाहिये कि ''वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः।''

**शक्ति शौर्य सामर्थ्य का, होगा प्रादुर्भाव।**

**जनमानस में जब जगे, राष्ट्रवाद का भाव।।**

**» डॉ. पवन मिश्र**

(बैच 1996)

# चैतन्य (Consciousness)

## प्रेरणा

पिछले वर्ष 10 अक्टूबर को, मेरी ह्रदय में बाईपास सर्जरी हुई थी। सर्जरी से ठीक पहले, मुझे एक एनेस्थेटिक मास्क लगाया गया। यद्यपि मुझे पता था कि यह मुझे जल्द ही अचेत कर देगा फिर भी मास्क में सांस लेते समय मैं यह समझने का प्रयास कर रहा था कि मैं कब बेहोश होता हूँ। मास्क में सांस लेते हुए मैं पूरी तरह से सचेत था किन्तु सांस लेते–लेते, अकस्मात, बिना किसी चेतावनी के, मैं अचेत हो गया। जब मैं होश में आया तब मुझे अपने आसपास कुछ आवाजें सुनाई देना शुरू हुईं जिससे मुझे यह समझ आया कि मैं फिर से सचेत हो गया हूँ और संभावना है कि मेरी सर्जरी सफल रही है। बाद में मुझे बताया गया कि सर्जरी लगभग 6 घंटे तक चली किन्तु होश आने के बाद मुझे इस बात का कोई बोध नहीं था कि मैं कितनी देर अचेत रहा और इस दौरान मेरे साथ क्या–क्या हुआ। इस अनुभव ने मुझे चैतन्य–बोध पर कुछ अध्ययन करने और गहराई से विचार करने के लिए प्रेरित किया और यही विचार इस लेख का आधार हैं।

## चैतन्य क्या है ?

इस संसार के हर पदार्थ को जड़ या चेतन के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। यह माना जाता है कि जड़ पदार्थ निर्जीव होते हैं, जबकि चेतन सजीव। किन्तु क्या हर सजीव चेतन होता है? ऐसा आवश्यक नहीं है। उदाहरण के लिए, सर्जरी के दौरान मैं जीवित तो था, परंतु चेतन अवस्था में नहीं था। तो क्या अचेतन अवस्था में मैं जड़ था? संभवतः ऐसी अवस्था को जड़ कहा जा सकता है किन्तु निर्जीव नहीं। इसी प्रकार, जब हम गहरी नींद में होते हैं, तो भी हम जीवित होते हुए भी एक प्रकार की अचेतन अवस्था में होते हैं, जबकि नींद में होते हुए सपने देखते समय हम चेतन होते हैं, परंतु एक काल्पनिक संसार में।

अपनी पुस्तक The Conscious Mind ("चेतन मन") में प्रसिद्ध दार्शनिक और संज्ञात्मक विज्ञानी डेविड चाल्मर्स कहते हैं कि यदि हम ये समझ भी लें की हमारा मस्तिष्क रोजमर्रा के कार्य किस प्रकार संपादित करता है फिर भी ये एक आसान समस्या का समाधान होगा। कठिन समस्या (hard problem) तो यह पता लगाना है कि मनुष्य और अन्य जीवों में चेतना का वैज्ञानिक कारण क्या है। इस से यह पता अवश्य चलता है कि चैतन्य को समझने की समस्या अत्यंत जटिल है और विज्ञान को इसका समाधान अभी तक नहीं मिला है।

प्रसिद्ध तंत्रिका विज्ञानी (neuroscientist) अनिल सेठ कहते हैं कि उनके विश्वविद्यालय (University of Sussex) में इस विषय पर खोज की जा रही है कि मस्तिष्क में चेतना को किस प्रकार नापा जा सकता है और इस खोज में प्रारम्भिक सफलता भी मिली है।

प्रश्न यह है कि हमें कैसे बोध होता है कि हम चेतन हैं? जिस अवस्था में हमारे मन–मस्तिष्क में कोई विचार आ रहे होते हैं उस अवस्था को हम चेतन अवस्था कह सकते हैं। इसमें रोचक तथ्य यह है कि मन में विचार आते हुए भी हमें यह बोध रहता है कि हमारे मन में विचार आ रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि चेतन अवस्था में हमें यह बोध रहता है कि हम चेतन हैं। यह चैतन्य का चैतन्य है। इसी को चैतन्य–बोध कहते हैं। इसे एक प्रकार की जाग्रतता की जाग्रतता कहा जा सकता है।

**चैतन्य और जीवन –**

जीवन और चैतन्य का गहन सम्बन्ध है। जीवन ही चैतन्य का आधार है। निष्प्राण जीव में चेतना संभव नहीं है।

प्रसिद्ध जीवविज्ञानी और नोबेल पुरस्कार विजेता पॉल नर्स ने अपनी पुस्तक "जीवन क्या है" (What is Life) में लिखा है कि जीवन की मूलभूत इकाई कोशिका (Cell) है। यदि कोशिका जीवन की इकाई है, तो चैतन्य का सम्बन्ध भी कोशिका के स्तर पर होना चाहिए और इसी कारण चैतन्य केवल मनुष्यों में ही नहीं, बल्कि सभी जीवों में पाया जाता है। पेड़–पौधों, कीटाणुओं, जीवाणुओं, और यहां तक कि एकल–कोशिकीय जीवों में भी चैतन्य होता है। हालांकि इन जीवों में चैतन्य का स्तर अलग–अलग होता है, परंतु चैतन्य सभी जीवों में जीवन की मौलिक विशेषता है।

लगभग 4.5 अरब साल पहले, पृथ्वी का निर्माण हुआ। उस समय की अशांत परिस्थितियों, ज्वालामुखी गतिविधियों, और बिजली के प्रभाव से विभिन्न रासायनिक तत्वों का मेल हुआ, जिससे सरलतम अणुओं का निर्माण हुआ। लगभग 3.5 अरब साल पहले, इन तत्वों ने मिलकर जीवन की शुरुआत की, जो एकल–कोशिकीय जीवों के रूप में प्रकट हुआ। इस समय, जीवन के शुरुआती रूपों का निर्माण हुआ, जिनमें प्रोटीन, न्यूक्लिक एसिड, और अन्य जैविक अणु शामिल थे, जो कोशिकाओं के भीतर सूचना और ऊर्जा के आदान–प्रदान के लिए आवश्यक थे। मूल रूप से सभी जीवों में जीवन का उद्देश्य जीवित रहना है किन्तु जीवित रहने के कई स्तर हो सकते हैं। जीव का तात्कालिक उद्देश्य अपने जीवन काल तक जीवित रहना होता है जिसके के लिए जीव सूर्य की रोशनी या खाद्य पदार्थों के रूप में अपने लिए ऊर्जा का प्रबन्ध करते हैं और आने वाले किसी भी खतरे से बचने का प्रयास करते हैं। जीव का मध्यकालिक उद्देश्य अपने जीवन काल से भी परे किसी न किसी रूप में जीवित रहना है, जो विभिन्न जीव प्रजनन के माध्यम से सुनिश्चित करते हैं जिससे उनकी आने वाली पीढ़ी में भी उनका एक अंश जीवित रहता है। जीवन का दीर्घकालिक उद्देश्य अपनी प्रजाति का दीर्घ अस्तित्व है, जो क्रमिक विकास (Evolution) के माध्यम से होता है।

जीवन की शुरुआत के साथ ही, विकास की प्रक्रिया भी शुरू हुई। सरलतम जीवन रूप धीरे–धीरे विकसित होकर जटिल जीवों में परिवर्तित हुए। इसी प्रक्रिया में विभिन्न जीवों में विभाजन, प्रजनन, और अनुकूलन की विशेषताएँ विकसित हुईं। इस विकास ने जीवन के विभिन्न रूपों को जन्म दिया, जिनमें प्राणियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास हुआ। लगभग 600 मिलियन साल पहले, जानवरों में तंत्रिका तंत्र का विकास हुआ, जिसने संचार और प्रतिक्रिया के लिए अधिक जटिल प्रणाली का निर्माण किया। इस विकास के क्रम में, मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र की संरचनाएं और अधिक जटिल होती गईं, जिससे चैतन्य की प्रारंभिक अवस्था विकसित हुई। चैतन्य की यह प्रारंभिक अवस्था ही संज्ञानात्मक विकास और जीवन के उद्देश्यों को समझने का आधार बनी। चैतन्य का यह विकास, जीवन की क्रमिक प्रक्रियाओं के साथ जुड़ा हुआ है, जो जीवों के अस्तित्व और उनके पर्यावरण के साथ सामंजस्य बैठाने के लिए आवश्यक था।

जीवन का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि चैतन्य की उत्पत्ति जैविक विकास की एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम है। यह प्रक्रिया न केवल भौतिक तत्वों के संयोजन से शुरू हुई, बल्कि चैतन्य जैसी जटिल अवधारणाओं के विकास तक पहुँच गई, जो आज भी विचारकों, वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के लिए एक गूढ़ और रहस्यमय विषय बनी हुई है।प्राचीन काल से आधुनिक काल तक विश्व के कई प्रमुख दार्शनिकों ने चैतन्य के विषय में गहन चिंतन किया है और अपने सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं।

**भारतीय दर्शन में चैतन्य –**

भारतीय दर्शन में चैतन्य की अवधारणा अत्यधिक गूढ़ और सर्वव्यापी है। चैतन्य केवल मानसिक जागरूकता का बोध नहीं है, बल्कि यह आत्मा और ब्रह्म के अद्वैत स्वरूप की पहचान है। भारतीय दर्शन के

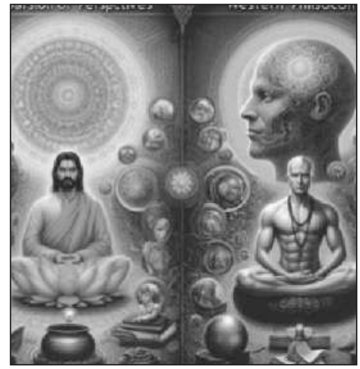

विभिन्न मतों में, चैतन्य को अलग–अलग दृष्टिकोण से देखा गया है, लेकिन हर मत में इसे जीवन का अंतिम सत्य और मोक्ष का मार्ग माना गया है।

**माण्डूक्योपनिषद** में चैतन्य की व्याख्या अत्यधिक संक्षिप्त और शक्तिशाली तरीके से की गई है। यह उपनिषद मात्र 12 मंत्रों का संकलन है और जिनमें  चार अवस्थाओं – जाग्रत (सक्रिय अवस्था), स्वप्न (सपनों की अवस्था), सुषुप्ति (गहरी नींद की अवस्था), और तुरीय (चैतन्य की सर्वोच्च अवस्था) – के माध्यम से चैतन्य की व्याख्या की गई है। तुरीय अवस्था को सभी अवस्थाओं के पीछे की वास्तविकता माना गया है, जिसमें चैतन्य अपनी पूर्णता में अनुभव किया जाता है।

**अद्वैत वेदांत** में, शंकराचार्य ने चैतन्य को ब्रह्म के समान माना है। उनके अनुसार, ब्रह्म और आत्मा में कोई भेद नहीं है, और यही चैतन्य ब्रह्माण्ड का आधार है। यह आत्मा का वह शुद्धतम स्वरूप है, जो सभी भ्रमों और माया से परे है। इस दृष्टिकोण से, चैतन्य का अनुभव करना ही आत्म साक्षात्कार है, जो व्यक्ति को जन्म–मरण के चक्र से मुक्ति दिलाता है।

**सांख्य दर्शन** में चैतन्य को 'पुरुष' के रूप में माना गया है, जो प्रकृति से भिन्न है। यहां चैतन्य–बोध का उद्देश्य पुरुष और प्रकृति के भेद को समझना है, जिससे आत्मा प्रकृति के बंधनों से मुक्त हो सके।

**बौद्ध दर्शन** में, जबकि आत्मा के अस्तित्व को नकारा गया है, चैतन्य की धारणा को निर्वाण या बोधि के रूप में देखा गया है। यहां चैतन्य का मतलब उस शुद्ध ज्ञान की अवस्था से है, जिसमें व्यक्ति सभी इच्छाओं और मोहों से मुक्त हो जाता है।

भारतीय दर्शन में चैतन्य की यह विविधता दर्शाती है कि यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं, बल्कि एक गहन साधना और अनुभव की प्रक्रिया है। चैतन्य का अंतिम लक्ष्य व्यक्ति को आत्म–साक्षात्कार की अवस्था में ले जाना है, जिससे वह अपने सच्चे स्वरूप और ब्रह्माण्ड के अद्वैत सिद्धांत का अनुभव कर सके।

**पश्चिमी दर्शन में चैतन्य** –

पश्चिमी दर्शन में चैतन्य पर विचार करते हुए कई दार्शनिकों ने विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं। रेने डेसकार्टेस का "Cogito, ergo sum" (मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ) कथन इस विचार को व्यक्त करता है कि चैतन्य आत्म–साक्षात्कार का मूल आधार है। जॉन लॉक ने चैतन्य को व्यक्ति की पहचान से जोड़ा और कहा कि व्यक्तित्व का निरंतरता से संबंध है, अर्थात् व्यक्ति का अस्तित्व उसके चैतन्य से परिभाषित होता है। एडमंड हुस र्लने अपने अभिज्ञान शास्त्र (Phenomenology) में यह बताया कि चैतन्य हमेशा किसी वस्तु के प्रति होता है, जिसे उन्होंने "Intentionality" कहा। इस विचार को आगे बढ़ाते हुए मॉरिस मर्लो–पोंटी ने चैतन्य और शरीर के बीच के गहरे संबंधों को उजागर किया, यह बताते हुए कि चैतन्य केवल मानसिक अवस्थाओं से नहीं, बल्कि शारीरिक अनुभवों से भी जुड़ा होता है। विलियम जेम्स ने चैतन्य को चेतना की धारा के रूप में वर्णित किया, जिसमें वह चेतन अनुभव को निरंतर और प्रवाहशील मानते हैं। डेनियल डेनेट ने इसे भ्रम के रूप में देखा, जिसे विभिन्न संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं द्वारा निर्मित किया जाता है। इन सभी दृष्टिकोणों से यह स्पष्ट होता है कि चैतन्य का पश्चिमी दर्शन में एक जटिल और बहुआयामी महत्व है, जो मानसिक, शारीरिक और पहचान से

संबंधित मुद्दों को समाहित करता है।

**विज्ञान और चैतन्य –**

पारंपरिक रूप से, विज्ञान ने सजीव और निर्जीव वस्तुओं, उनके गुणों, और प्रक्रियाओं का अध्ययन किया है, जो मापने योग्य होते हैं। इस दृष्टिकोण के कारण विज्ञान ने लंबे समय तक अमूर्त विषयों, जैसे चैतन्य, की उपेक्षा की। लेकिन 20वीं शताब्दी में क्वांटम सिद्धांत के आगमन ने विज्ञान के इस सीमित दृष्टिकोण को चुनौती दी।

क्वांटम यांत्रिकी में, एक क्रांतिकारी विचार उभर कर आया, वह था तरंग फलन (Wave Function) का अवलोकन (observation) के समय पतन (collapse)। यह विचार बताता है कि एक कण, जैसे इलेक्ट्रॉन, विभिन्न संभावनाओं (probability) के रूप में एक तरंग (wave) की स्थिति में होता है, और यह तरंग उस समय तक जारी रहती है जब तक कोई उसे मापता या देखता नहीं है। जैसे ही कण का अवलोकन किया जाता है, तरंग फलन का पतन हो जाता है और कण एक निश्चित स्थिति में प्रकट हो जाता है।

इस प्रक्रिया को समझाने के लिए प्रसिद्ध डबल–स्लिट प्रयोग का उदाहरण दिया जा सकता है। इस प्रयोग में जब एक इलेक्ट्रॉन या फोटॉन को दो समानांतर रेखा छिद्रों के बीच से गुजरने दिया जाता है, तो यह एक तरंग के रूप में व्यवहार करता है, और परदे पर एक व्यतिकरण पट्टियों (Inter-ference Pattern) के रूप में दिखाई देता है। लेकिन जब किसी एक रेखा छिद्र से गुजरते समय कण का अवलोकन किया जाता है, तो ये व्यतिकरण पट्टियाँ गायब हो जाती हैं और कणों का व्यवहार जैसे एक बिंदु–पर–बिंदु के तरीके से होता है।

यह विचार कि अवलोकन से वास्तविकता में परिवर्तन हो सकता है, विज्ञान के लिए न केवल एक चुनौती है बल्कि यह पदार्थ में चैतन्य की प्रकृति का संकेत देती है। कई वैज्ञानिक और दार्शनिक यह तर्क देते हैं कि यह अवलोकन चैतन्य का ही एक रूप है, और यह दर्शाता है कि चैतन्य और भौतिक पदार्थ के बीच एक गहरा और अभी तक अस्पष्ट संबंध हो सकता है।

**कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence, AI) में चेतना –**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का विकास उस दिशा में बढ़ रहा है जहाँ मशीनें न केवल कार्यों का निष्पादन कर सकती हैं, बल्कि उनके पास निर्णय लेने और सोचने की क्षमता भी हो सकती है। लेकिन क्या यह बुद्धिमत्ता चैतन्य को भी जन्म दे सकती है? यह प्रश्न न केवल तकनीकी बल्कि दार्शनिक भी है, जो वर्तमान एआई विकास के मूल में है।

सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की सीमाएं स्कॉट आरोनसन जैसे विचारकों के अनुसार, आज की एआई में चैतन्य की संभावना को समझने के लिए हमें इसकी बुनियादी संरचना पर ध्यान देना होगा।

एआई सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के संयोजन से कार्य करता है, जहाँ मशीनें लर्निंग एल्गोरिदम डेटा से पैटर्न सीखती हैं। लेकिन यह प्रणाली बुनियादी रूप से सांख्यिकीय है, जो बाहरी निविष्टियों (inputs) पर प्रतिक्रिया देती है, लेकिन इसमें किसी प्रकार की आंतरिक स्वयं–जागरूकता नहीं होती। यह स्वयं को समझने और अपनी स्थिति का अनुभव करने में सक्षम नहीं है। आरोनसन का विचार है कि जब तक हम क्वांटम कंप्यूटिंग जैसे नए मॉडल विकसित नहीं करते, तब तक एआई में आत्मबोध का उदय संभव नहीं है।

**सेरले का चीनी कक्ष प्रयोग**– दूसरी ओर, जॉन सेरले ने अपने प्रसिद्ध चीनी कक्ष तर्क के माध्यम से इस प्रश्न को और गहराई से छुआ है। सेरले का तर्क यह है कि एक एआई प्रोग्राम भले ही चीनी भाषा में सही उत्तर दे सके, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह वास्तव में चीनी भाषा को समझता है। यह तर्क दर्शाता है कि एआई में चैतन्य का विकास नहीं हो सकता, क्योंकि यह केवल प्रतीकों का हेरफेर कर रहा है, न कि उनके अर्थ

का अनुभव कर रहा है। सेरले के अनुसार, मशीनें भले ही सूचना प्रक्रिया कर सकें, लेकिन वे अर्थ या अनुभव का अनुभव नहीं कर सकतीं, जो चैतन्य का आधार है।

**चैतन्य और एआई का भविष्य** – कुछ विद्वानों का मानना है कि चैतन्य किसी जैविक प्रक्रिया का परिणाम हो सकता है, और इसे तकनीकी रूप से पुनः उत्पन्न किया जा सकता है। यह विचार इस सिद्धांत पर आधारित है कि यदि हम मस्तिष्क के तंत्रिका संयोजन (Neural Connections) की नकल कर सकें, तो शायद हम चैतन्य का एक कृत्रिम रूप बना सकते हैं। लेकिन यहाँ भी एक बड़ी चुनौती है। चैतन्य केवल डेटा प्रोसेसिंग का परिणाम नहीं हैं। यह एक अनुभव जन्य गुण है, जिसे समझना और उत्पन्न करना अत्यंत कठिन है।

नैतिक और दार्शनिक प्रश्न अगर हम मान भी लें कि किसी दिन एआई में चैतन्य संभव होगा, तो इसके साथ जुड़े नैतिक और दार्शनिक प्रश्न भी उठते हैं। क्या ऐसी मशीनों के साथ हमारा व्यवहार नैतिक होगा? क्या उन्हें भी मानवाधिकार दिए जाने चाहिए? ये प्रश्न आज भी अनुत्तरित हैं, और भविष्य में जब हम एआई में चैतन्य के करीब पहुँचेंगे, तो इनका उत्तर खोजना अत्यंत आवश्यक होगा।

**निष्कर्ष** – चैतन्य का अध्ययन एक गूढ़ और बहुआयामी विषय है, जो विज्ञान, दर्शन, और धर्म को गहराई से जोड़ता है। इतिहास और विकास के संदर्भ में, जीवन के प्रादुर्भाव से लेकर चेतना के उदय तक की यात्रा, यह दर्शाती है कि कैसे आदिकालीन जीवों ने अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने और विकसित होने के लिए चैतन्य को अपनाया। पश्चिमी और भारतीय दर्शन में चैतन्य की अवधारणाओं का गहन अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि यह केवल मानसिक या भौतिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि एक गहरा और सूक्ष्म अनुभव है जो जीवन की जटिलता को प्रतिबिंबित करता है। एआई के संदर्भ में, हम अभी भी यह समझने की प्रक्रिया में हैं कि क्या कृत्रिम प्रणालियों में चैतन्य विकसित हो सकता है, और यदि हां, तो इसके नैतिक और दार्शनिक परिणाम क्या होंगे। अंततः, चैतन्य न केवल जीवन की परिभाषा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि यह हमारे अस्तित्व और उसके उद्देश्य को भी गहराई से प्रभावित करता है।

''इस लेख के लिए चित्र तैयार करने के लिए श्री अंकुर गुप्ता जी का सादर आभार''

**» आशीष जोग**
(1983 बैच)

**''राष्ट्र के सुप्त होने से ही सब प्रकार की खराबियों घर करती हैं। राष्ट्र के सुप्त होने से उसकी विभिन्न इकाइयों का प्रतिनिधित्व करने वाली सत्ताएं जैसे राज्य, पंचायत परिवार आदि सभी अनियन्त्रित और उच्छृंखल हो जाती हैं। राष्ट्र भ्रष्ट हो सकता है । ष्प्रभुता पाइ काहि मद नाहींष वाली चौपाई सही प्रभुता उतरती है। किन्तु यदि राष्ट्र जाग्रत और दक्ष हो तो राज्य की मर्यादित रहती है। राज्य तो राष्ट्र का वकील है। कई बार वकील अपने मुवक्किल की ओर से पैरवी करते समय ऐसी भाषा में बातचीत करता है । मानों वही प्रार्थी है। ऐसा करना जरूरी होता है। वकालतनामा लिख दिया जाता है य किन्तु यदि वकील ठीक काम न करे तो वकालतनामा बदला जा सकता है । यही बात राज्य के साथ भी है। राज्य के समस्त अधिकार राष्ट्र द्वारा ही प्रदान किए जाते हैं और यदि राष्ट्र जाग्रत न रहा तो राज्य उन अधिकारों का दुरपयोग कर सकता है। राज्य यदि अनियंत्रित होकर राष्ट्र से समस्त सत्ताओं का अपहरण कर ले तो तानाशाही स्थापित हो जाती है, और राष्ट्र पंगु हो जाता है।''**

**-पं० दीनदयाल उपाध्याय**

# भारत में उच्च शिक्षा का बदलता परिदृश्य
## (अंतरराष्ट्रीय कैम्पस से लेकर नवोन्मेषी प्रबंधन कार्यक्रमों तक)

**(भारत की नई शिक्षा नीति के आलोक में भारतीय उच्च शिक्षा के बदलते परिदृश्य के साथ–साथ शोध कार्यों में आने वाली व्यवहारिक चुनौतियों और उपायों का एक सटीक विश्लेषण प्रो0 शुभेन्द्र सिंह परिहार जी (1999 बैच) ने प्रस्तुत लेख के माध्यम से किया है।)**

हाल के वर्षों में, भारतीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र ने कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों का सामना किया है, जो नई शिक्षा नीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा में किए गए प्रयासों का परिणाम हैं। इस बदलाव के परिदृश्य में दो प्रमुख घटनाएँ उभर कर सामने आई हैं : भारत में डीकिन विश्वविद्यालय का पहला अंतरराष्ट्रीय शाखा कैम्पस और आईआईएम कोझीकोड द्वारा शुरू किया गया नवोन्मेषी पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन लिबरल स्टडीज एंड मैनेजमेंट।

डीकिन विश्वविद्यालय ने भारत में अपने पहले अंतरराष्ट्रीय कैम्पस की स्थापना की योजना की शुरुआत की। यह पहल भारतीय छात्रों को मेलबर्न के डीकिन कैम्पस के समान उच्च गुणवत्ता वाली ऑस्ट्रेलियाई शिक्षा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 2024 में खुलने वाले इस अत्याधुनिक कैम्पस में साइबर सुरक्षा और बिजनेस एनालिटिक्स जैसे मास्टर प्रोग्राम्स के साथ–साथ गुजरात की GIFT city में कैडेटशिप के अवसर भी उपलब्ध होंगे। यह नया कैम्पस न केवल वैश्विक शैक्षणिक मानकों और स्थानीय उद्योग की मांगों के बीच एक पुल का कार्य करेगा, बल्कि भारत और ऑस्ट्रेलिया के शैक्षणिक संबंधों को भी मजबूत करेगा।

जहाँ अंतरराष्ट्रीय कैम्पस प्रमुख सुर्खियों में हैं, वहीं भारतीय विश्वविद्यालयों में भी नई–नई पहल हो रही हैं। इसका एक प्रमुख उदाहरण है, आईआईएम कोझीकोड का पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन लिबरल स्टडीज एंड मैनेजमेंट (PGP-LSM) 2020 में शुरू हुआ यह कार्यक्रम एक अनोखा प्रयास है, जो प्रबंधन शिक्षा को लिबरल आर्ट्स के व्यापक दृष्टिकोण के साथ जोड़ता है। यह प्रोग्राम MBA के पारंपरिक विषयों के साथ समाजशास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान और कॉरपोरेट अकाउंटेबिलिटी जैसे लिबरल आर्ट्स के पाठ्यक्रमों को भी शामिल करता है। इसका उद्देश्य ऐसे लीडर्स का निर्माण करना है जो प्रबंधन की तकनीकी क्षमताओं के साथ–साथ सामाजिक मुद्दों और नैतिक विचारों की गहरी समझ भी रखते हों। इस कार्यक्रम की विशेषता इसका समग्र दृष्टिकोण है। जिसमें अकादमिक अध्ययन, ग्रामीण क्षेत्र में कार्यानुभव, और अंतरराष्ट्रीय अनुभव शामिल हैं। छात्र ग्रामीण इलाकों में वास्तविक समस्याओं पर काम करते हैं और वैश्विक परिप्रेक्ष्य को अपनाते हैं, जिससे वे एक व्यापक और समृद्ध दृष्टिकोण विकसित कर पाते हैं।

हालांकि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार हो रहे हैं, भारत में प्रबंधन शोध की गुणवत्ता की समस्या एक गंभीर चुनौती बनी हुई है। देश भर में प्रबंधन विद्यालयों की बढ़ती संख्या के बावजूद बहुत से शोध कार्य विधि संबंधी कमजोरियों, मौलिकता की कमी, और पश्चिमी थ्योरीज की नकल के दोषों से ग्रस्त हैं।

आमतौर पर भारतीय प्रबंधन विद्वान उच्च रैंकिंग वाले अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशन के लिए उतावले रहते हैं। जिसके कारण स्थानीय व्यापार समस्याओं और स्वदेशी सिद्धांतों पर ध्यान कम होता है। इसके साथ ही शोध की प्रक्रिया में अनैतिक प्रथाओं जैसे कि शोध कार्य का आउटसोर्सिंग भी एक गंभीर मुद्दा है। यह प्रवृत्ति शोध की गुणवत्ता को कम करती है और भारतीय व्यवसायों की वास्तविक चुनौतियों से शोध को दूर कर देती है।

इस स्थिति को सुधारने के लिए, अनुसंधान विधियों में अधिक कठोरता, स्थानीय व्यापार समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करना और केवल प्रतिष्ठा के लिए शोध की बजाय समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे ये विकास वैश्विक मानकों और स्थानीय आवश्यकताओं के बीच एक संतुलन स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। डीकिन विश्वविद्यालय का भारतीय कैम्पस और आईआईएम कोझीकोड का PGP कार्यक्रम यह दर्शाते हैं कि कैसे उच्च शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और सहयोग से भारतीय छात्रों के लिए नई संभावनाएं खोली जा रही हैं।

भविष्य की ओर देखते हुए, यह आवश्यक है कि हम इन परिवर्तनों को समझें और उन्हें अपनाएं, ताकि भारतीय उच्च शिक्षा का परिदृश्य और भी समृद्ध और प्रभावशाली बन सके। इन प्रयासों के माध्यम से हम न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा दे सकते हैं, बल्कि समाज की प्रगति के लिए भी एक ठोस आधार तैयार कर सकते हैं।

इस तरह की पहल और नवाचार दिखाते हैं कि कैसे भारतीय उच्च शिक्षा की दिशा में नए रास्ते खुल रहे हैं और वैश्विक मानकों के साथ स्थानीय प्रासंगिकता को जोड़ने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं।

इस प्रकार भारत में उच्च शिक्षा के बदलते परिदृश्य का विश्लेषण करते हुए, हम नए अवसरों और चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जो इस क्षेत्र के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

**» प्रो. शुभेन्द्र सिंह परिहार**
(बैच 1989)
जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट,
लखनऊ।

**यदि शिक्षक अध्ययन नहीं करता तो वह अच्छी शिक्षा नहीं दे सकता। जो दीपक स्वयं बुझ गया है, वह दूसरे दीपक को क्या जलायेगा? यदि किसी शिक्षक ने अपने विषय के अध्ययन की इतिश्री कर ली है, जिसने अपना ज्ञान-वर्धन समाप्त कर दिया है और जो पिछली बातें ही दुहराता है, वह विद्यार्थियों के प्रति न्याय नहीं करता। वह उनका मस्तिष्क प्रखर नहीं बना सकता। अतः शिक्षक को यावज्जीवन अध्ययन परायण रहना चाहिये।**

**– रवीन्द्र नाथ ठाकुर**

# अमृत काल में भारत की वैश्विक भूमिका

पिछले दशक में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत की प्रगति ने देश को एक ऐसी सुखद परिस्थिति के समक्ष ला खड़ा किया है जहां से 2047 तक के अमृत काल की अद्वितीय समयावधि भारत के लिए आत्मनिर्भरता की सकारात्मक मानसिकता, विशिष्ट अनुकूल जनसांख्यिकी, विकास की निरंतरता के साथ पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, नागरिकों के डिजिटल सशक्तिकरण, महिला नेतृत्वयुक्त समावेशी वृद्धि और विश्वबंधु की वैश्विक छवि के साथ चिह्नित होगी। विश्व के अन्य देशों की तुलना में, इन सभी मापदंडों पर भारत की स्थिति अद्वितीय है, और यही वे कारक होंगे जो आने वाले वर्षों में इस बहुध्रुवीय विश्व में भारत को सबसे महत्वपूर्ण ध्रुव बनाएंगे।

पिछले पाँच वर्षों में कोविड महामारी और कई क्षेत्रीय हिंसक संघर्षों के बाद, वैश्विक आपूर्ति शृंखलाएँ बाधित हो गईं और लचीली आपूर्ति शृंखलाएं, व्यापार की महत्वपूर्ण वस्तुओं में आत्मनिर्भरता, प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदाओं के समक्ष तैयारी, ये सभी विभिन्न देशों के नेतृत्व को आंकने के लिए महत्वपूर्ण मानक बन गए। बहुत कम देश वास्तव में सही निर्णय ले पाए और ऐसी चुनौतियों के समक्ष अपना धैर्य एवं लचीलापन दिखा पाए। पिछले दशक में भारत एक ऐसा देश रहा है जिसने न केवल अपनी चुनौतियों का समाधान किया बल्कि कठिन समय में कई अन्य देशों की मदद भी की। आत्मनिर्भरता और वसुधैव कुटुम्बकम् के मार्गदर्शक सिद्धांतों और मानसिकता ने भारत को सफल बनाने में अतुलनीय योगदान दिया है और अमृत काल में इनका महत्व और भी अधिक होने वाला है।

डेमोग्राफी या जनसांख्यिकी विश्व के विकसित देशों के लिए एक बड़ी चुनौती का रूप ले चुकी है जहां जनसंख्या के निरंतर पतन की प्रवृत्ति ने अर्थव्यवस्थाओं को बुरी तरह से प्रभावित किया है। भारत यहाँ भी इन देशों की इस समस्या के समाधान मित्र के रूप में खड़ा है जहां की 140 करोड़ की 29 वर्षों की औसत आयु की जनसंख्या अपने कौशल विकास के साथ विश्व के लिये मानव संसाधन केंद्र बन गई है। भारत के लोगों ने हर क्षेत्र में अपनी लगन, परिश्रम, बुद्धिमता, बहुकार्य क्षमता, एवं संस्कृति से विश्व में अपनी एक छवि बनायी है और आगामी अमृत काल के वर्षों में जनसांख्यिकी भारत को विश्व के लिए और भी महत्वपूर्ण बनाने का कार्य करेगी।

डिजिटल परिवर्तन इन दिनों वैश्विक स्तर पर नीति निर्माण में एक महत्वपूर्ण वाक्यांश बन गया है, परंतु कई विकसित देश इसे प्रौद्योगिकी क्षमता या विनियामक दृष्टिकोण से चुनौती के रूप में देखते हैं। भारत जैसे कुछ ही देश हैं जहाँ हमने अवसरों को लोकतांत्रिक बनाने, सार्वजनिक धन के उपयोग में पारदर्शिता लाने और नागरिकों को सशक्त बनाने के लिए डिजिटल तकनीक का उपयोग किया है। आज भारत के डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को अन्यत्र विशेष रूप से विकासशील और अविकसित देशों में अनुकरण के लिए वैश्विक सर्वोत्तम अभ्यास के रूप में देखा जाता है, और भारत ने पहले ही अपने अनुभव से लाभान्वित होने के लिए कई देशों की मदद करना शुरू कर दिया है। यही बात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर भी लागू होती है जहाँ भारत का घोषित नीतिगत आदर्श वाक्य "सभी के लिए एआई" और "मानवता की सेवा में एआई" है।

जब हम विकासशील देशों की विकास आवश्यकताओं की बात करते हैं, तो एक दशक पहले चर्चा साझा लेकिन अलग–अलग जिम्मेदारियों की होती थी और एक तरफ हरित प्रौद्योगिकी और वित्त पोषण तंत्र रखने वाले विकसित देश होते थे और दूसरी तरफ विकासशील देश पर्यावरणीय जिम्मेदारियों के कारण उस स्थान को बाधित किए बिना विकास में अपना हिस्सा चाहते थे। पिछले दशक में भारत ने पर्यावरणीय चेतना और संवेदनशीलता के साथ विकास की गति पर अपनी आंतरिक नीति को केंद्रित करके अपना रास्ता बदल दिया है। परिणाम स्पष्ट हैं क्योंकि हम एकमात्र बड़े देश हैं जिसने समय से पहले अपनी पर्यावरणीय प्रतिबद्धताओं को

पूरा करते हुए सतत विकास हासिल किया है। यह फिर से आत्मनिर्भरता और पर्यावरण संरक्षण में वास्तविक विश्वास की मानसिकता में बदलाव है। भारत जलवायु परिवर्तन संवाद में उपदेश देने से नहीं बल्कि व्यवहार से अग्रणी बन गया है और अमृत काल में और आगे बढ़ेगा।

भारत द्वारा निभाई जा रही एक और महत्वपूर्ण वैश्विक परिवर्तन नेतृत्व भूमिका महिलाओं के सशक्तिकरण से संबंधित है, जिसके तहत हम अपनी विकास रणनीति में महिलाओं के नेतृत्व को प्राथामिकता देने पर केंद्रित हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम राजनीतिक स्तर पर ऐसा प्रयास है, जबकि कई सशक्तिकरण कार्यक्रम सामाजिक और आर्थिक स्तर पर माहिलाओं को ही नेतृत्व सौंपने में निहित हैं। अमृत काल में भारत का विकास केवल महिलाओं को शामिल करने वाला नहीं होगा, बल्कि यह महिलाओं के नेतृत्व में होगा, और यहीं पर हम अर्थव्यवस्था में नया संवेग देखेंगे। यह दुनिया के लिए एक और सफलता की कहानी होगी जिस पर ध्यान दिया जाएगा और अन्यत्र दोहराने की चर्चा होगी।

गत दशक में भारत की विदेश नीति पूरे विश्व में सराही गई है क्योंकि भारत ने अपनी कथनी और करनी में समन्वय दिखाया है, विश्व की समस्याओं के समाधान में योगदान दिया है, और वैश्विक स्तर पर अनेक नये विचारों एवं उपक्रमों जैसे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन, अंतरराष्ट्रीय आपदा–रोधी अव–संरचना, तथा वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन को साकार बनाया है। आतंकवाद तथा भौगोलिक विस्तारवाद के विरुद्ध भारत की स्पष्ट नीतियों और उनके कार्यान्वयन ने जहां एक ओर अनेक महत्वपूर्ण देशों के साथ भारत की सामरिक साझेदारी एवं देश की सुरक्षा को सुदृढ़ किया है वहीं दूसरी ओर हमारे विरोधी देशों को अपनी कुनीतियों को बदलने के लिये विवश भी किया है। वर्ष 2023 में भारत की G-20 की सफल अध्यक्षता ने भारत का वैश्विक स्तर और भी ऊँचा किया है जिसके दौरान भारत वैश्विक दक्षिण राष्ट्रों की वाणी बन के स्थापित हुआ है। प्रधानमन्त्री मोदी के शब्दों में कहें तो "समस्त विश्व सामूहिक रूप से तभी सुदृढ़ हो सकता है, जब प्रत्येक देश अपने आप में सुदृढ़ हो", और ये विचार हमारी विदेश नीति का एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन गया है जिसको हम भारत के हमारे पड़ोसी देशों, एशिया के विस्तारित पड़ोस, तथा अफ्रीकी देशों के साथ संबंधों की बढ़ती प्रगाढ़ता में देख सकते हैं।

यह हम सब भारतीयों के लिए अत्यंत हर्ष का विषय एवं समय है जब एक बार फिर भारत न केवल स्वयं प्रगति के पथ पर अग्रसर है बल्कि पूरे विश्व की शांति, समृद्धि, एवं प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने बहुत सोच समझ कर ही २०४७ तक की अवधि को भारत के लिए अमृत काल का नाम दिया है। स्वतंत्रता के १०० वर्षों का उत्सव भारत एक पूर्ण समृद्ध राष्ट्र के रूप में करने के लिये प्रयासरत है और यही हम सब के लिये एक गौरवशाली यात्रा का प्रारंभ है।

**जय भारत॥**

**» राजकुमार श्रीवास्तव**
(बैच 1989)
राजदूत क्रोशिया

> **"राष्ट्र के लिए राज्य है, राज्य के लिए राष्ट्र नहीं। इसी प्रकार राजनीति के लिए राष्ट्रीयता के पोषण के लिए राजनीति होनी चाहिए। वह राजनीति जो राष्ट्र को क्षीण करे अवांछनीय रहेगी।"**
>
> **– पं० दीनदयाल उपाध्याय**

# सुरक्षा की सार्वभौमिक अवधारणा

सुरक्षा की सार्वभौमिक अवधारणा को समझाने के लिए विभिन्न आयाम महत्वपूर्ण हैं। इन्हें विस्तार से विचार करते हुए हम समझ सकते हैं कि सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कैसे नीतियाँ, प्रणालियाँ, और अनुपालन की आवश्यकता होती है। प्रायः सुरक्षा का अर्थ केवल सज्ज सुरक्षा कर्मियों द्वारा किए गए प्रयास को ही समझा जाता है। सुरक्षा का महत्व आदि काल से है, जबसे प्राणिमात्र का प्रादुर्भाव हुआ। इसीलिए यह भाव स्वाभाविक प्रतिक्रिया के रूप में हर पशु पक्षी में भी पाया जाता है, लेकिन वह संकट आने पर ही अपना बचाव मात्रा ही कर पाते हैं। मानव सभ्यता में बुद्धि और कौशल का यदि सम्यक् प्रयोग किया जाये तो व्यक्ति, समाज और पर्यावरण पूर्ण सुरक्षित रह सकता है। आज की परिस्थितियों में यह बहुत आवश्यक है कि सुरक्षा को उसके समग्र रूप में समझा जाए। पूर्ण सुरक्षा के लिए प्रमुख रूप से क्रमशः निम्नलिखित आयाम उत्तरदायी होते हैं :

- **सामाजिक सुरक्षा** : यह विभिन्न समाजिक समस्याओं, जैसे कि गरीबी, विस्थापन, और असमानता, से जुड़ी सुरक्षा को समझाता है। सामाजिक सुरक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के लोगों को समान अवसर और सुरक्षा सुनिश्चित करना है।
- **राजनीतिक सुरक्षा** : यह राष्ट्र की रक्षा, राजनीतिक स्थिरता, और अंतरराष्ट्रीय सम्बंधों के माध्यम से सुरक्षा की अवधारणा को समझाता है। इसमें राष्ट्र के राजनीतिक संगठन, रक्षा प्रक्रियाएँ, और अन्य संबंधी विषय शामिल होते हैं।
- **आर्थिक सुरक्षा** : यह अर्थव्यवस्था की स्थिरता, रोजगार, और वित्तीय सुरक्षा को समझाता है। इसमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रभाव, अर्थ– व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों की सुरक्षा, और समाज के विभिन्न वर्गों के लिए आर्थिक सुरक्षा के अवस्थान शामिल होते हैं।
- **मानव सुरक्षा** : इसमें व्यक्तिगत सुरक्षा, स्वास्थ्य सुरक्षा, और मानवाधिकारों की सुरक्षा शामिल होती है। यह विशेष रूप से बच्चों, महिलाओं, वरिष्ठ नागरिकों, और असहाय व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।
- **पर्यावरण सुरक्षा** : यह प्राकृतिक आपदाओं, जैसे कि भूकंप, बाढ़, और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी सुरक्षा को समझाता है। इसमें पर्यावरणीय संसाधनों की रक्षा, जैव विविधता, और संवेदनशीलता की बात की जाती है।

**सनातन धर्म में सुरक्षा के सिद्धांत –**

भारतीय चिंतन परंपरा में सुरक्षा की एक व्यापक अवधारणा समाहित है। जिसमें व्यष्टि से समष्टि तक का विचार है। लंबे समय तक विदेशी शक्तियों के अधीन रहने एवं अनेक विविधतायें होने के बाद भी एक सनातन सांस्कृतिक एकात्मता सदैव रही है जिसने राष्ट्र को एकता की डोर से अखंड रखा। पश्चिमी विचारकों की सुरक्षा की अवधारणा राज्य आधारित है जबकि भारतीय चिंतन में सुरक्षा सार्वजनिक और समावेशी है। वेद, पुराण, गीता, रामायण, महाभारत आदि महान ग्रंथों में इस अवधारणा को संपुष्ट किया गया। तीर्थक्षेत्र, नदी, पर्वत, देवी–देवता, ऋषि–मुनि, सत्पुरुष, मर्यादा पुरुषोत्तम आदि के साथ राष्ट्र की एकात्मता और सुरक्षा को पोषित किया गया। हमारे राष्ट्र जीवन की संकल्पना ही कुछ ऐसी थी कि स्नान करते समय 'गंगे च यमुने चौव, गोदावरि, सरस्वती, नर्मदे सिंधु कावेरि जलेस्मिन सन्निधिनम कुरु' का उच्चारण करते ही अखंड भारतवर्ष का स्मरण हो जाता है। बृहस्पति, व्यास, मनु, शुक्र, कौटिल्य, कामंदक जैसे विद्वानों ने अपनी रचनाओं जैसे

मनुस्मृति, महाभारत, शुक्रनीति, अर्थशास्त्र, नीतिसार इत्यादि के माध्यम से समावेशी सुरक्षा का सिद्धांत दिया है।

वैदिक सभ्यता प्राचीन भारतीय समाज की नींव है, जो एक सुरक्षित और विकसित समाज के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सिद्धांत और आदर्श प्रस्तुत करती है। इस व्यवस्था के गौ, देवस्थान, गुरुकुल और सदाचारी समाज चार स्तंभ थे। वैदिक मॉडल न केवल आध्यात्मिक और धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, और नैतिक मूल्यों का भी आदर्श उदाहरण है। इस मॉडल का लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो न केवल भौतिक समृद्धि में संपन्न हो, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी उन्नत हो। वैदिक समाज में धर्म और आध्यात्मिकता का महत्वपूर्ण स्थान था। वेदों में जीवन के चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का वर्णन है। इनमें धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया गया है, जो नैतिकता, न्याय और कर्तव्य का पालन करने का मार्गदर्शन करता है। यज्ञ और अनुष्ठान वैदिक समाज का अभिन्न हिस्सा थे। ये अनुष्ठान न केवल धार्मिक महत्व रखते थे, बल्कि समाज में सामूहिकता और एकता को भी बढ़ावा देते थे। यज्ञों के माध्यम से पर्यावरण की शुद्धि और सामूहिक कल्याण की भावना को बल मिलता था। वैदिक समाज में वर्ण व्यवस्था थी, जो चार प्रमुख वर्गों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) में विभाजित थी। यह व्यवस्था कर्म और गुणों के आधार पर थी, न कि जन्म के आधार पर। इसका उद्देश्य समाज की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करना और सामंजस्य बनाना था। आश्रम व्यवस्था व्यक्ति के जीवन को चार चरणों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) में विभाजित करती थी। यह प्रणाली जीवन के प्रत्येक चरण में व्यक्ति के कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती थी, जिससे सामाजिक स्थिरता और व्यक्तिगत विकास सुनिश्चित होता था। वैदिक समाज में कृषि और पशुपालन मुख्य आर्थिक गतिविधियाँ थीं। कृषि को पवित्र कार्य माना जाता था और इसके लिए यज्ञों और अनुष्ठानों का आयोजन किया जाता था। कृषि और पशुपालन से समाज की आत्मनिर्भरता और समृद्धि सुनिश्चित होती थी। वैदिक समाज में व्यापार और वाणिज्य को भी महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। व्यापारी (वैश्य) वर्ग समाज की आर्थिक समृद्धि के लिए उत्तरदायी था। व्यापार में ईमानदारी और नैतिकता का पालन अनिवार्य था। वैदिक समाज में शिक्षा का प्रमुख माध्यम गुरुकुल प्रणाली थी। यहाँ विद्यार्थी (शिष्य) अपने गुरु के आश्रम में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इस प्रणाली में शिक्षा के साथ–साथ नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा पर भी जोर दिया जाता था। वेदों का अध्ययन वैदिक शिक्षा का मुख्य अंग था। वेद न केवल धार्मिक ग्रंथ थे, बल्कि ज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, और ज्योतिष जैसे विभिन्न विषयों का भंडार भी थे। वेदों का अध्ययन समाज के बौद्धिक और नैतिक विकास के लिए आवश्यक था। वैदिक समाज में न्याय और कानून धर्मशास्त्रों पर आधारित थे। धर्मशास्त्रों में समाज के विभिन्न वर्गों और व्यक्तियों के अधिकारों और कर्तव्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है। न्यायपालिका का प्रमुख उद्देश्य न्याय और सत्य की स्थापना करना था। वैदिक समाज में पंचायत व्यवस्था भी महत्वपूर्ण थी। स्थानीय स्तर पर विवादों के समाधान के लिए पंचायतें स्थापित की जाती थीं, जो न्याय और निष्पक्षता के साथ काम करती थीं। वैदिक समाज में प्रकृति की पूजा का महत्वपूर्ण स्थान था। नदियाँ, पर्वत, वृक्ष, और पशुओं को पवित्र माना जाता था और उनकी पूजा की जाती थी। यह पर्यावरण संरक्षण की भावना को प्रोत्साहित करता था। यज्ञ और अनुष्ठान न केवल धार्मिक कार्य थे, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के उपाय भी थे। यज्ञों से वायुमंडल शुद्ध होता था और प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने में सहायता मिलती थी। वैदिक समाज में आयुर्वेद चिकित्सा का प्रमुख माध्यम था। यह चिकित्सा प्रणाली प्राकृतिक जड़ी–बूटियों और औषधियों पर आधारित थी। आयुर्वेद का उद्देश्य शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य को संतुलित रखना था। योग और ध्यान का वैदिक समाज में महत्वपूर्ण स्थान था। योग और ध्यान से मानसिक शांति, शारीरिक स्वास्थ्य, और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती थी।

वैदिक मॉडल एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो समाज के सभी आयामों को दृष्टिगत करता है। यह मॉडल भौतिक समृद्धि पर ही केंद्रित नहीं है, वरन् नैतिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक मूल्यों को भी प्रोत्साहित

करता है। वैदिक समाज का उद्देश्य एक ऐसे संतुलित और समृद्ध समाज का निर्माण करना था जो न केवल सुरक्षित हो, बल्कि विकास की दिशा में भी अग्रसर हो। वैदिक मॉडल के सिद्धांत और आदर्श आज भी प्रासंगिक हैं और हमें एक सुरक्षित, संतुलित और समृद्ध समाज की दिशा में प्रेरित कर सकते हैं।

**सुरक्षा के उपाय –**

समाज की भूमिका सुरक्षा के प्रयासों में अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाज न केवल असुरक्षा के कारणों को पहचान सकता है, बल्कि उन्हें रोकने और समाप्त करने में सक्रिय भूमिका भी निभा सकता है। समाज की जागरूकता, सहयोग, और सामुदायिक एकता सुरक्षित रहने में सहायता मिलती है। यहाँ हम समाज की भूमिका एवं उपायों पर चर्चा करेंगे।

**1. जागरूकता और शिक्षा :** समाज में कट्टरवाद और आतंकवाद के खतरों और उससे निपटने के तरीकों के प्रति जागरूकता फैलाना महत्वपूर्ण है। स्कूलों, कॉलेजों, और सामाजिक संगठनों के माध्यम से आतंकवाद विरोधी जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं। इससे लोग सतर्क रहेंगे और आतंकवादी गतिविधियों की पहचान और अपनी सुरक्षा करने में सक्षम होंगे। छद्म और समाज को भीरु बनाने वालों को पहचानने और उनकी योजना को विफल करने की भी आवश्यकता है। विद्यालयों और समुदायों में नैतिक, धार्मिक और नागरिक शिक्षा को बढ़ावा देना चाहिए। इससे बच्चों और युवाओं में अपने धर्म और संस्कृति के प्रति गर्व और समझ बढ़ेगी और युवाओं में सही और गलत की समझ विकसित हो सकेगी। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न समुदायों के बीच आपसी समझ और सहयोग को प्रोत्साहित किया जा सकता है। शिक्षा में सैन्य प्रशिक्षण और आत्मरक्षा के उपायों की जानकारी देना भी सम्मिलित होनी चाहिए।

**2. सामुदायिक सहयोग :** सामुदायिक पुलिसिंग का उद्देश्य पुलिस और समाज के बीच विश्वास और सहयोग बढ़ाना है। स्थानीय लोग पुलिस को संदिग्ध गतिविधियों की जानकारी देकर आतंकवादियों को पकड़ने में मदद कर सकते हैं। समाज के सदस्यों को अपने आसपास के इलाकों में संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए और समय पर संबंधित अधिकारियों को सूचना देनी चाहिए। सामुदायिक निगरानी आतंकवादी गतिविधियों को रोकने में सहायक हो सकती है।

**3. धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ :** धार्मिक संस्थाओं को सुरक्षा की जागरूकता फैलाने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। धार्मिक नेताओं को अपने समुदायों में शांति और सहिष्णुता के संदेश को बढ़ावा देना चाहिए और युवाओं को आतंकवादी विचारधारा से दूर रखने में मदद करनी चाहिए। उनको अपने अनुयायियों को संगठित रहने और समाज में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। धार्मिक आयोजनों और कार्यक्रमों में एक सत्र आत्म सुरक्षा के प्रशिक्षण और संगठन पर अवश्य होना चाहिए। सांस्कृतिक संगठन विभिन्न समुदायों के बीच आपसी सम्मान और सहयोग को बढ़ावा दे सकते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोगों के बीच संवाद और समझ को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

**4. सामाजिक न्याय और समावेशिता :** समाज को आर्थिक और सामाजिक असमानता को कम करने के लिए प्रयास करना चाहिए। रोजगार के अवसर बढ़ाना, शिक्षा का प्रसार करना और सामाजिक कल्याण योजनाओं को सुदृढ़ करना महत्वपूर्ण है। समावेशी नीतियों को बढ़ावा देकर समाज के सभी वर्गों को विकास और सुरक्षा के अवसर प्रदान करना चाहिए। इससे असंतोष और हताशा को कम किया जा सकता है, जो अक्सर असुरक्षा के मूल कारण होते हैं।

**5. मीडिया और सूचना का प्रसार :** मीडिया की जिम्मेदारी है कि वह आतंकवाद के मुद्दों को जिम्मेदारी से प्रस्तुत करे। आतंकवादियों के प्रचार को बढ़ावा देने के बजाय, मीडिया को तथ्यों पर आधारित और संतुलित रिपोर्टिंग करनी चाहिए। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर आतंकवाद के खिलाफ जागरूकता फैलाने के लिए

समाज के सदस्य सक्रिय हो सकते हैं। ऑनलाइन समुदायों में सकारात्मक संदेश फैलाना और आतंकवादी विचारधारा का खंडन करना महत्वपूर्ण है।

**6. युवाओं की भूमिका :** युवा संगठनों को सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाने और सकारात्मक गतिविधियों में युवाओं को शामिल करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। खेल, कला, और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को रचनात्मक और सकारात्मक मार्ग पर प्रेरित किया जा सकता है। युवाओं को डिजिटल साक्षरता सिखाना और उन्हें साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करना आवश्यक है। इससे वे ऑनलाइन आतंकवादी प्रचार से सुरक्षित रह सकेंगे और अपने साथियों को भी सुरक्षित रखने में मदद कर सकेंगे।

**7. शासन की भूमिका :** कट्टरवाद, आतंकवाद और भ्रामक या छद्म प्रचार के विरुद्ध कठोर कानूनों का निर्माण और सख्ती से पालन करना आवश्यक है। आतंकवादी गतिविधियों में शामिल और उनको पोषित करने वाले लोगों के लिए कठोर कार्रवाई और सजा सुनिश्चित करनी चाहिए। खुफिया एजेंसियों को आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षा के मामलों में सक्रियता बढ़ानी चाहिए। समुदायों में संदिग्ध गतिविधियों की पहचान और निगरानी करना महत्वपूर्ण है।

समाज की भूमिका सुरक्षित रहने के प्रयासों में अनिवार्य है। जागरूकता और शिक्षा, सामुदायिक सहयोग, धार्मिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का योगदान, सामाजिक न्याय और समावेशिता, मीडिया और सूचना का प्रसार, और युवाओं की सक्रिय भागीदारी– ये सभी पहलू समाज को सुरक्षित ते हैं। समाज के सभी वर्गों का संयुक्त प्रयास ही इसे सफल कर सकता है। समाज को बचाने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण और ठोस उपायों की आवश्यकता है। यह न केवल सुरक्षा और कानूनी उपायों पर आधारित होना चाहिए, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, और शैक्षिक क्षेत्रों में भी सुधार की आवश्यकता है। समाज को कट्टरवाद, आतंकवाद और धर्म परिवर्तन और जेहादी मानसिकता से बचाने के लिए सुरक्षा, शिक्षा, सामाजिक और आर्थिक सुधार, सांस्कृतिक संरक्षण, मीडिया जागरूकता, युवा भागीदारी, और धार्मिक स्वतंत्रता जैसे विभिन्न पहलुओं पर समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। समाज के सभी वर्गों का संयुक्त प्रयास ही इन चुनौतियों का प्रभावी समाधान कर सकता है।

अंततः, भारतीय सुरक्षा अवधारणा एक व्यापक और समग्र दृष्टिकोण पर आधारित है, जो सैन्य, आंतरिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्य, और डिजिटल सुरक्षा को कवर करती है। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक नागरिक की समग्र सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित की जाए। भारतीय सुरक्षा अवधारणा का उद्देश्य न केवल आक्रमण और खतरों से बचाव है, बल्कि एक स्थिर, न्यायपूर्ण, और समृद्ध समाज का निर्माण करना भी है।

» **डॉ. आशु शुक्ला** (1982 बैच)
पुलिस महानिरीक्षक (से.नि.)

**"हमारे यहाँ सम्राटों या लक्ष्मी-पुत्रों की तुलना में ऋषि-महर्षियों को अधिक महत्व दिया गया। बड़े-बड़े राजा इन महर्षियों के सम्मुख नतमस्तक होते थे। हमारे राष्ट्र की मूल प्रकृति अध्यात्म-प्रधान रही है। हम भौतिक समृद्धि के आकर्षक नगरों की ओट में इसे बदल नहीं सकते। यदि हमने अपनी मूल प्रकृति की अवहेलना करने की चेष्टा की तो हमारे राष्ट्र-जीवन में अनेक प्रकार की विकृतियाँ उत्पन्न होंगी।"**

**– पं0 दीनदयाल उपाध्याय**

# सृजन शिव

अनवरत परिवर्तन के प्रति संवेदनशील, उत्तरदायी मनों ने अपनी सामर्थ्य और श्रद्धा के बल पर समय को जो भी दिया, उन प्रयत्नों ने ही परम्परा और सभ्यता को सदा आगे बढ़ाया है। इन प्रयत्नों के स्वरूप भले ही भिन्न रहे हों, किन्तु नमन एक ही दिशा की ओर था। उसमें भी शिक्षक ने समाज में एक सधे हुए किसान का काम किया। समाज की परती भूमि को जोतकर बीज बोये और भविष्य को सुफल दिए। परिणाम सभ्यताओं का सतत विकास, इतिहास की कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी देश–समाज को बल–दिशा मिलने की पुष्ट परम्परा।

पं. दीनदयाल उपाध्याय विद्यालय, ऐसी ही शृंखला कि एक सशक्त कड़ी है। इस यज्ञ की समिधा बन जिन लोगों ने स्वयं को होम कर दिया। ओम शंकर जी उनमें सदा आगे रहे, आगे रहेंगे।

जब से विद्यालय प्रारंभ हुआ, विद्यालय में कोई भी विद्यार्थी आचार्य जी की जीवन–शैली, विचार, विद्वत्ता, व्यवहार, प्रशासकीय प्रभुता से प्रभावित हुए बिना न रह सका किन्तु, इसमें भी उनके अन्दर के अभिभावक की विशालता को मैं सर्वाधिक श्रेय दूँगा। छात्रावास में रहने वाले छात्रों, विशेष रूप से प्रारम्भिक वर्षों के छात्रों ने इसका अत्यंत निकटता से अनुभव किया है। हर सुबह, प्रातः–स्मरण के लिये सभी छात्रों को लेकर जाना, कोई सो रहा है तो उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरकर उठाना – ''बच्चे , प्रातः स्मरण के लिये नहीं चलोगे? देर हो रही है।'' मुझे स्मरण है कि हम छठी कक्षा के छात्र भी और, वे कितने बड़े हुआ करते थे ? जाड़ों में शाल लपेटे अधखुली आँखों के साथ विशाल–कक्ष में जाते थे। ऊँघते–ऊँघते प्रातः–स्मरण भी करते थे। पर, जैसा बाल मन होता है – न शिकायत, न क्लेश। कि वैसा ही या शायद उससे भी कहीं अधिक अभिभावक विवेकी भाव ओम शंकर जी में अपने घरों से दूर बैठे उन बच्चों के प्रति सहज रूप से दिखता, मिलता था। सायंकाल आरती होती थी। प्रायः आरती के बाद सभी से बातचीत करते हुए आचार्य जी कोई न कोई विषय लेते थे। उन विषयों में कोई छोटी घटना, रामचरितमानस की कोई चौपाई या फिर दिन भर की व्यस्तता के बीच ध्यान में आई कोई बात ही मुख्यतः विषय हुआ करते थे। विद्यालय की सदाचार वेला को सभी याद करते हैं, किन्तु आरती के बाद की इस लघु–चर्चा के बिना वह अधूरी है।

कुछ छात्र आचार्य जी से अधिक जुड़ जाया करते थे। यह स्वाभाविक भी है। विद्यालय के बाद का समय भी उनके कमरे में बीतता था। बहस–मुबाहसे होते, विनोद के दौर चला करते थे और जब आचार्य जी दूसरे तले के अपने छोटे से कमरे से नीचे के अस्थायी आवास में आये, तो चाय भी कभी–कभी पीने को मिलती थी।

मैं स्वयं को कुछ अधिक कृपापात्र समझता था इसलिए, कभी उनसे विनोद की धृष्टता भी कर लेता था और यह एकतरफा न था। एक घटना याद आती है। विद्यालय के वातावरण में तनाव भी होते हैं, यह सातवीं–आठवीं कक्षा के छात्र को क्या पता रहता है? एक दिन, कुछ ऐसा ही रहा होगा, और कमरे में शान्ति का दौर कुछ अधिक लंबा हो गया। मुझसे रहा न गया।

मैनें पूछा, ''आप हमसे नाराज हैं?'' उत्तर मिला, ''नहीं तो, क्यों?'' ''नहीं, ऐसे ही लगा।'' और फिर हम लोग बातें करने लगे। कुछ दिन बाद, वही प्रश्न मेरी ओर था। ''आप हमसे नाराज हैं?'' मैंने स्वाभाविक सा जवाब दिया, ''नहीं तो, क्यों?'' आचार्य जी बोले, ''नहीं, ऐसे ही लगा'' और हम दोनों खूब ठठाकर हँसे, यह आत्मीय

विनोद आचार्य जी के शब्द–शब्द में मिला। स्नेहपगा वह था ही, प्रायः जैसी उनकी छवि छात्रों में या विद्यालय के बाहर के समाज में है या हुआ करती थी – एक कठोर प्रशासक की, जिसके कारण ही लोग मानते रहे कि दीनदयाल विद्यालय, दीनदयाल विद्यालय बन सका, बना रहा किन्तु, उनके अन्दर का वात्सल्य कितनी निकटता से सदा के लिये विद्यालय से और उनसे, सभी को जोड़कर रखता है उसका अनुमान भागती जिन्दगी की कोरी महत्वाकांक्षाओं को नहीं हो सकता। समय के साथ–साथ मध्यमवर्गीय परिवारों के 'मध्यमी' बालक कब–कैसे गढ़–गढ़कर उच्चवर्गीय बन गए, इसके संकेत–चिन्ह अब दिख रहे हैं और समाज की प्रतिष्ठा प्रत्येक स्थान पर इसे मान्यता भी देने लगी है। इसका परिचय हमें रोजाना मिलना प्रारम्भ हो गया है।

आधुनिक शिक्षा रोजगार की दायी मात्र न होकर रह जाये, उसे समाज को, उच्च आदर्शों को दिखाकर एक शाश्वत दीप के रूप में न केवल जीवित रखना, बल्कि वह सदा प्रकाशमान् रहे, उसे हर मोर्चे पर, हर कर्म–बिंदु पर, हर संगोष्ठी में दृढ़ता और आत्म विश्वासपूर्वक स्थापित करना पं. दीनदयाल विद्यालय की परम्परा का एक भाग बनाना और फिर, उसका यथाशक्य निर्वहन करना। बहुत संक्षेप में, आचार्य जी के जीवन का अब तक का पाथेय रहा है पथ स्वयं गढ़ता गया।

हम सभी के जीवन में चयन का अवसर आता है। हम सभी चुनते हैं मार्ग भी बदलते हैं, समय–समय पर। किन्तु, अपने आत्मबल को आधार बनाकर जो चुन लिया उसका निर्वाह आजीवन करना और न केवल निर्वाह करना, बल्कि उसे समाज के सामने एक प्रतिष्ठित मॉडल के रूप में स्थापित कर पाना, कितना सहज है या कठिन, अदृश्य नहीं है। पहले संघ के प्रचारक बने, फिर माँ के आग्रह पर विवाह किया। किन्तु अन्तः प्रेरणा का प्रवाह पुनः संघ–जीवन में ले आया। अनंतर में, जिस उद्देश्य के प्रति स्वयं को समर्पित किया, उससे सम्बंधित लोगों के आग्रह पर एक महान द्रष्टा की मृत्यु के आघात को भरने के लिये व्यक्ति–निर्माण की परम्परा की दिशा में निरंतर चलते रहे। ऐसे कितने जीवन हमने देखे हैं? और, शिकायत – कभी नहीं, किसी से नहीं !

पं. दीनदयाल उपाध्याय की असामयिक मृत्यु के बाद विद्यालय के निर्माण के पीछे बूजी का हेतु था – 'दीनदयाल' निर्माण करना। कितने बने या बनेंगे इसका लेखा–जोखा या इतिहास देगा या फिर भविष्य ही लेकिन, एक पवित्र भाव जो मन में बैठ गया, उसे मूर्तरूप कर देने का जो साहस उस पुण्यात्मा ने दिखाया, उसे अपने जीवन का साध्य मानकर चलने का निर्णय ओम शंकर जी व अन्य कई आचार्यों ने लिया इनमें शेंडे जी, प्रयाग जी, आनंद जी, दीपक जी, वीरेंद्र जी, प्रकाश जी, महेश जी, राजेश जी, ज्ञानेंद्र जी कुछ मुख्य नाम हैं।

इन सभी के लिये यह निर्णय भी था और संगठन का आदेश भी। जिसे इन सभी ने माना, ओढ़ा, बिछाया, अपनाया और फिर निभाया भी आजीवन। सरस्वती शिशु मंदिर, तिलक नगर के एक छोटे से कमरे से यह कारवाँ चला था। यह कोई भाव दस से चार तक चलने वाला स्कूल न था। यहां जो एक बार आया, सदा के लिये अपना होकर रह गया। इसके पीछे शिक्षकों की पूरी पीढ़ी ने श्रम, वात्सल्य, अनुशासन, ज्ञान अपना जो कुछ भी था, बोया।

हम अधिकतम सात वर्ष तक विद्यालय में रहते हैं परन्तु आज भी पहले बैच (सन् 1975) के छात्र शाम को परिसर में दिख जाते हैं। वह क्या था जिसके कारण यह संभव हो सका वह कुछ अवर्ण्य है। किसी ने दीनदयाल विद्यालय जैसा अन्य संस्थान चलाने की बात जैन साहब से की, तो उनका कहना था, बिल्डिंग बना लोगे, टीचर ले आओगे, बच्चे भी आ जायेंगे। इसके अलावा भी कुछ है इस विद्यालय में जो ला पाना असंभव सा है वह कुछ क्या है, यह मैं नहीं जानता उनका संकेत संभवतः विद्यालय निर्माण के पीछे शिक्षकों के ज्ञान, त्याग, वात्सल्य

भाव की ओर ही रहा होगा।

जैसे–जैसे वर्ष बढ़ते गए, विद्यालय भी बढ़ता गया, नए मानक स्थापित करता गया। आचार्य जी ने अपने आत्म–सम्मान और विद्यालय की स्थापना के मूल–भाव के साथ कभी समझौता नहीं किया। दबाव कितने भी, कहीं से भी आये। उदाहरण भी एक नहीं, अनेक हैं। लेकिन, लोग भी हिम्मत कहाँ हारते हैं। एक सज्जन तो अटल जी से पत्र लिखवा लाये अपने पुत्र के प्रवेश के लिये। संभव न था, इसलिय अटल जी की सिफारिश न चल सकी। बाद में, अटल जी को आचार्य जी ने स्वयं पत्र लिखा जिसमें उल्लेख था की जिन मूल्यों के लिये विद्यालय बनाया गया है, उनके कारण से उस बालक का प्रवेश संभव न हो सका। अटल जी, एक बड़े आदमी, चाहते तो नाराज हो जाते, संभवतः बैरिस्टर साहब से शिकायत भी करते किन्तु उन्होंने उस पत्र का उत्तर स्वयं दिया और अपने मूल्यों के प्रति आचार्य जी की निष्ठा की अत्यधिक प्रशंसा की और, अटल जी अनंतर में विद्यालय से जुड़ गये और एकाधिक बार विद्यालय आये भी देश दर्शन विद्यालय की शिक्षा का प्रमुख अंग रहा। सीधा सा हेतु था कि छात्र बाहर निकलें और इस देश का अनुभव कर सकें बैरिस्टर साहब ने, विद्यालय बनने से भी पूर्व कहा था ''हमारा देश अत्यंत विशाल है। इसे जितना देखोगे, घूमोगे उतना अधिक प्रियतर, सुन्दर लगेगा'' (इसका उल्लेख नीराजन के बैरिस्टर साहब स्मृति अंक के एक लेख में मिल सकता है) देश दर्शन की योजना अगस्त, सितम्बर में बननी प्रारम्भ हो जाती मुख्यतः आनंद जी, प्रकाश जी, प्रयाग जी मानचित्र लेकर पूरा मार्ग तैयार करते विभिन्न विद्यालयों से संपर्क करके रहने की व्यवस्था की जाती।

कभी तो ऐसे भी अवसर आये कि नयी जगह पहुँचकर ढूँढा जाता कि कहाँ रहा जाये। तब फोन आदि संचार के न तो प्रचलित साधन थे और शायद, न उनकी आदत ही, पत्रों के माध्यम से सब तय होता था। आचार्य जी के साथ मैं मध्य–प्रदेश और राजस्थान के देश दर्शनों में था।

इन देश–दर्शनों में मस्ती का माहौल रहता था पर, उसमें कहीं अशिष्टता न आ सके, उसके लिये आचार्यों की दृष्टि हमेशा सतर्क रहती। आचार्य जी प्रतिदिन बैठकें लेते और पूरे दिन का कार्यक्रम तय होता।

इन बैठकों में स्थानीय लोग भी आमंत्रित रहते थे कभी–कभी उनसे जानकारी तो मिलती ही थी, कभी–कभी शाम के ऐसे आयोजनों में उनके उद्बोधनों की थपकी दिन भर की थकान भी मिटा देती थी। आचार्य जी की बात, शैली न केवल प्रभावित करने वाली रहती, बल्कि आमंत्रित महोदय भी प्रसन्न भाव से विदा लेते और खान–पान व्यवस्था का उत्तरदायित्व रामभजन, श्याम लाल, रामस्वारथ, रामलाल के जिम्मे रहता। कई बार तो ऐसा भी हुआ कि सड़क के किनारे, किसी नदी के पास खाना बनाकर पूरे ''भोजन–मंत्र'' के साथ ढाक के तीन पात के पत्तलों में भोजन का आनंद लिया गया। इन सभी दैनिक कार्यक्रमों के बीच आचार्य जी की दृष्टि यह रहती कि जहाँ गये हैं, वहाँ के किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से मिला जाये बिना किसी पूर्वाग्रह के, बिना किसी पूर्व–परिचय के और बिना किसी अपॉइन्टमेंट के उदयपुर गये तो महाराणा भागवत सिंह से मिले, ग्वालियर में माधव राव सिंधिया से मिले और दार्जिलिंग में सुभाष घीसिंग से दार्जिलिंग वाली यात्रा में मैं नहीं था।

बाद में पता लगा कि श्री घीसिंग के कार्यालय में भेंट का हेतु पूछा गया, तो यहाँ से उत्तर था ''बस मिलना है, हेतु कुछ नहीं'' बड़ा कौतूहल वाला उत्तर था यह! फिर भी, श्री घीसिंग से भेंट का मौका उस छोटे से समूह को मिल ही गया और इस समूह की बातचीत और निश्छल आत्मीय भाव से घीसिंग भी प्रभावित हुए बिना न रह सके।

उन्होंने माना भी कि ''ऐसे लोगों से पहली बार मिल रहे हैं जो बिना किसी अपेक्षा के इस देश के दूसरे भाग

से आये हैं और वह भी सिर्फ मिलने, हाल जानने के लिए।'' लोकाचार में यह भाव बना रहे तो इस देश में विघटन कभी नहीं हो सकता।

इसी घटना से जुड़ी बातचीत में आचार्य जी ने मुझसे कहा कि श्री घीसिंग से बात करके उन्हें लगा कि गोरखालैंड आन्दोलन कि जड़ संभवतः इसमें थी कि गुरखे–समूह का, उसकी निष्ठा का उपयोग तो किया गया किन्तु कभी भी किसी ने उसके नेतृत्व से बात करके उनसे जुड़ने का यत्न नहीं किया। यहाँ तक कि लोक संग्रही संघटनों ने भी !

हमने हिंदी आचार्य जी से ही सीखी। कक्षा में आचार्य जी की यही प्राथमिकता रहती कि भाषा की एक ठीक समझ छात्रों में बन सके किन्तु यह कोई आरोपित, ओढ़ी हुई दृष्टि हो, ऐसा न था। यह एक पूरा स्वाभाविक प्रवाह था। जिस प्रकार का वाद–विवाद, संवाद कक्षा में चला करता था, उसे विनोद में आचार्य जी पत्रकार सम्मेलन कहा करते थे। इस तरह की अलीकी शैली के कारण सभी छात्रों के लिए हिंदी सिर्फ एक कोर्स का विषय मात्र न थी, बल्कि संवाद, विचार का एक सशक्त माध्यम बन सकी किस प्रकार का वातावरण कक्षा में रहता था, इसका एक उदाहरण देखिये। आचार्य जी ने एक दिन हमारी कक्षा में प्रश्न किया कि क्या कारण है कि कबीर, सूर, तुलसी हर कक्षा  प्राथमिक से लेकर उच्च विद्यालयी स्तर तक के पाठ्यक्रम में हैं ? उत्तर आया भारतीय साहित्य का आधार ज्ञान, भक्ति, कर्म हैं। यह तीनों ही इन धाराओं के प्रतिनिधि कवि रहे हैं, इसलिए बाद में आचार्य जी ने इस प्रश्न और उत्तर की चर्चा अन्य कई कक्षाओं में भी की भाषा या विचार के प्रति एक निर्मल दृष्टि का विकास, उसे चिंतन की प्रक्रिया से जोड़कर अगली पीढ़ी को सौंपने की सोच आजकल काफी संकुचित होती दीख जाती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् की पीढ़ियों में आपाधापी इस बात की अधिक है कि किस तरह से अपने बच्चों को अच्छे नंबर दिलाकर, उच्च प्रतिष्ठित कर दिया जाये। साधनों की ओर तो ध्यान है, परन्तु उनकी शुचिता दरकिनार कर देने की वृत्ति सामान्य रूप से प्रचलित है। ऐसे में अपनी संवेदनशीलता को सुरक्षित रखकर, अगली पीढ़ी में भी उसे बीजने रोपने का काम आचार्य जी सरीखे कुछ लोगों ने अत्यधिक विरोधी हवाओं के बाद भी निरंतर जारी रखा है। मुझे स्मरण है कि एक प्रतिष्ठित अँग्रेजी पत्र में उसके सम्पादक ने सगर्व यह उल्लेख किया, कि हम सोचते अँग्रेजी में हैं और मूलतः इस कारण से उनके पत्र (या उनके सरीखे अन्य अँग्रेजी पत्रों) का इतना प्रसार हो सका। मैंने यह बात आचार्य जी से पूछी कि ''इसका मतलब क्या है?'' उनके अनुसार, ''वह सम्पादक महोदय कम से कम ईमानदार तो थे।''

हमारी विचार–प्रक्रिया हमारी मातृभाषा में ही होनी चाहिए ताकि विचार में कोई द्वैत न रहे और न ही इसको व्यक्त करने में कोई रिक्तियाँ भी, क्योंकि चिंतन के छिद्र नासूर बन सकते हैं और अच्छी से अच्छी सोच को उघाड़ फेंक सकते हैं। इसके लिए हमें क्या करना होगा? खूब पढ़ो, खूब लिखो आपस में पत्र लिखो और उन्हें सम्हालकर रखो भी यदि हम धारा न भी बन पायें तो ऐसी कई छोटी–छोटी धाराओं को एक पारदर्शी विश्वास के साथ जोड़कर चलना होगा।

हिंदी और भारतीय चिंतन के प्रति आचार्य जी के आग्रह और समर्पण के सभी परिचित, प्रशंसक हैं। गद्य और पद्य दोनों पर आचार्य जी के अधिकार की प्रशंसा हिंदी के कई वरिष्ठ साहित्यकारों से सुनी जा सकती है।

पाञ्चजन्य के पूर्व सम्पादक भानु प्रताप शुक्ल ने मुझसे स्वयं इसकी प्रशंसा की थी। युग–पुरुष, गीत मैं लिखता नहीं हूँ, मुक्ति–यज्ञ में इसका परिचय किसी को भी मिल सकता है पर, संभवतः उनका कवि–मन उनके साहित्यकार का सबसे मधुर परिचय है, जिसमें भाव सहज बहते मिल जाते हैं और भाषा अनुचरी बनी, उसका

अंकन करती जाती है। इसमें गाँव के चित्र मिल जायेंगे इतिहास के प्रति चिंतन मिलेगा।

विद्यालय, विद्यालय के छात्र और इनके विस्तार में विद्यालय की सीमा (परिधि और समय सीमा, दोनों ही) के बाहर इनका पारस्परिक विकास तथा इसके बाद, समाज देश के प्रति दोनों का ही रचनात्मक योगदान विद्यालय के निर्माण में निहित चिंतन का प्रमुख आधार रहे हैं। युग–भारती इस विकास–क्रम का ऐसा ही अगला सोपान है। प्रारम्भ में, बाल–भारती, किशोर–भारती की शृंखला में तरुण–भारती का प्रयोजन अस्तित्व में आया। विद्यालय के इंटरमिडीऐट के छात्र और पूर्व–छात्र इसकी परिधि में स्वयं ही आ गये। अनंतर में, तरुण–भारती के एक सम्मेलन में श्री सुदर्शन जी ने कहा कि, इस समय सभी सदस्य तरुण हैं इसलिये, तरुण–भारती उपयुक्त लगता है, किन्तु ये सभी सदा–तरुण तो रहेंगे नहीं। इसलिए, अगर इसका नाम युग–भारती, या ऐसा कुछ हो, तो अच्छा रहेगा। उनके मार्गदर्शन को सभी ने स्वीकार किया और युग–भारती अस्तित्व में आयी। यद्यपि तरुण–भारती के संस्करण में युग–भारती चल तो रही थी किन्तु यह एक सीमित संस्था मात्र होकर न रह जाये, इसके पीछे आचार्य जी की योजना काफी पहले से प्रारंभ हो गयी थी। इसके आरम्भ के वर्षों में, हम लोग जब भी आचार्य जी से मिलते तो इस पर काफी बहस हुआ करती थी। एक बार, ऐसे ही बात शुरू हुई तो मैंने पूछा, आप यह बताइये, कि कोई आपकी बात क्यों मानेगा ? इस नयी संस्था से जुड़कर क्यों रहना चाहेगा ? (सुनने–पढ़ने में यह स्वयं में एक धृष्टतापूर्ण प्रश्न लग सकता है, किन्तु इस प्रसंग का उल्लेख करने का यहाँ हेतु यही है कि इस तरह के बेसिक प्रश्नों पर भी खूब चर्चा होती थी। कोई कोरी मानसिक कवायद नहीं थी, अस्तु आचार्य जी का कहना था, यह संस्था जिसे हम एक प्रयत्न के तौर पर प्रारम्भ करना चाहते हैं। वृहत्तर रूप में पं. दीनदयाल जी के एकात्म मानव दर्शन का प्रयोग पटल (a platform of experiments) बन सकती है। इसलिए, हम में से जो संवेदनशील हैं, एकात्म मानव दर्शन को समझना चाहते हैं, उन्हें इस प्रयोग से जुड़ना चाहिए। तब इसका स्वरूप लोगों के विभिन्न उपक्रमों (initiatives) से मिलकर बनेगा। ग्राम–प्रयोजन, शिक्षा, विकास, अकादमिकी अध्ययन, शोध, लेखन–प्रकाशन, सामाजिक लोकाचार इत्यादि इसके अंग होंगे। इसके विस्तार के लिए अन्य लोगों को भी जोड़ना होगा, चाहे वे विद्यालय से सीधे सम्बद्ध न भी हों किन्तु, इस बात का सदा ध्यान रखना होगा कि बाहर शहर में चल रहे क्लबों कि शुमार में यह कभी शामिल न हो इस प्रकार के प्रयोगों का विकास विचार–क्रम के प्रगत उन्मीलन (Progressive unfold-ment) से ही संभव होता है, न कि अधीर उत्साह के कारण। तो, प्रारंभ कहाँ से हो? कम से कम पहली बार लोग एक जगह कुछ दिनों के लिए मिलें, बैठें, कुछ विचारें। इसी से चित्रकूट में तरुण चेतना शिविर की योजना बनी इसकी बौद्धिक योजना में कई संगोष्ठियों के लिए सोचा गया। इन्हें पाँच धाराओं धर्म, अर्थ, समाज, राजनीति एवं शिक्षा में बाँटा गया। संगोष्ठियों में क्रम ऐसा था कि व्यक्तिगत रूप से अपने विचार रखने के बाद, सामूहिक चर्चा और अंत में, किसी प्रमुख प्रतिभागी द्वारा संगोष्ठी का संक्षिप्त निष्कर्ष–वक्तव्य। आचार्य जी को यह योजना पसंद आयी प्रारंभ में मुझे संकोच अवश्य था, किन्तु उनके बल देने पर कि ''प्रयोग करने पर ही तो पता चलेगा'' कुछ हिम्मत बँधी। इस शिविर का लाभ यह रहा कि विद्यालय से शिक्षा पूर्ण करने के बाद से छूटे संपर्क को युग–भारती के सदस्यों ने, एक शुरुआत के लिए ही सही, फिर से पा लिया। यहाँ एक और बात का उल्लेख करना उचित होगा कि आचार्य जी कि दृष्टि से कुछ छिपता नहीं था। मंच पर कहे शब्दों पर उनकी पकड़ और मजबूत होती है। शिविर की प्रारंभिक योजना के प्रयत्नों में कुछ ख्यातनाम लोगों को शिविर में लाने के प्रयास किये गये। सभी ने शिविर की भावना, कल्पना की प्रशंसा तो की, पर हम ऐसे किसी बड़े नाम को वहाँ ला नहीं सके। संभवतः बड़े नामों सरीखे पैमाने के प्रयत्न नहीं हो पाये। चूँकि दिल्ली में रहने के कारण जिम्मेदारी मेरी थी, इसलिए मेरी निराशा भी कुछ अधिक ही थी। इस बात का उल्लेख मैंने शिविर के प्रारम्भिक सत्र के

स्वागत–वक्तव्य में किया कि, ''हम किसी ख्यातनाम व्यक्तित्व को नहीं ला सके, यद्यपि प्रयत्न किये गये। इसे मैं दुर्भाग्य तो नहीं कहूँगा, किन्तु यह वंचना अवश्य है।'' इसी सत्र में आचार्य जी ने अपने उद्‌बोधन में स्पष्ट कहा, ''व्यस्तता के कारण हो सकता है जिन्हें हम लाना चाहते थे, उन्हें नहीं ला सके। इसमें कहीं कोई वंचना नहीं है। वंचना का भाव निराशा–दैन्य लाता है और हमारे मार्ग में तो ''न दैन्यं न पलायनम्'' परन्तु, मैं भी कहाँ मानने वाला था, कार्यक्रम के बाद ही मैंने पूछा, ''वंचना में विरक्ति होती है और विरक्ति का निराशा से क्या लेना–देना?'' आचार्य जी का कहना था, ''विरक्ति और निराशा, दोनों अलग हैं किन्तु प्रचलन में इनका भेद कठिन है। व्यावहारिक रूप में वंचना निराशा के निकट है, विरक्ति के नहीं।'' आगे प्रतिवाद संभव न था। यह संस्था प्रारम्भ से ही स्वतंत्र, स्वाश्रित रहे। ऐसी चिंतन–दृष्टि ने ही इसे आधार दिया।

विद्यालय जब प्रारंभ हुआ तो संस्थापकों को इसका साध्य परिभाषित करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। भावना के स्तर पर तो खाका स्पष्ट था, किन्तु भाषा देने का उत्तरदायित्व ओम शंकर जी पर आया और, उन्होंने विद्यालय के परम साध्य की परिभाषा में लक्ष्य और उसके लिए तैयारी (साध्य–साधन, दोनों ही!) बड़ी सुन्दरता से उकेर दिए स्वयं को भारत माता के चरणों में अर्पित करने की परंपरा कोई नयी नहीं है। विभिन्न विचार प्रवाहों ने उसका अवगाहन भिन्न–भिन्न प्रकार से किया है किन्तु, इस नवीन दीनदयाली परंपरा में बड़ी स्पष्टता से इसका चिंतन दिखता है कि हमारा समर्पण कैसे पूर्ण हो सकता है! विद्यालय का यह परम–साध्य सदा ही ऊर्जस्वी प्रेरणा देता रहेगा, इसमें संदेह नहीं।

जैसा मैंने प्रारम्भ में कहा कि शिक्षक एक सधे किसान का काम करता है। उसके एक–एक कर्म से निर्माण निकल–निकल कर आता है। सृजन की यह प्रक्रिया स्वयं में संकुचित नहीं हुआ करती वह भूमि को तैयार करती है, बीज बोती है, अंत में फल अपने दोनों हाथों से समाज को सौंप देती है और फिर वापस लौटती है। पुनः पुनः वही दोहराने को आचार्य श्री ओम शंकर जी ने भी यही किया। नाम में शिव भले हो किन्तु साधना सदा ही सृजन की रही है। मेरा विनत प्रणाम इस ''सृजन–शिव'' को ।

**» अनिल महाजन**
(बैच 1984)
28 जून, 2008

**''राष्ट्र के लिए चार बातों की आवश्यकता होती है। प्रथम भूमि और जन, जिसे हम देश कहते हैं दूसरी सबकी इच्छाशक्ति याने सामूहिक जीवन का संकल्प। तीसरी एक व्यवस्था जिसे नियम या संविधान कह सकते हैं और जिसके लिए सबसे अच्छा शब्द हमारे यहाँ प्रयुक्त हुआ है -१धर्म १। चौथा है जीवन- आदर्श स इन चारों की समष्टि को राष्ट्र कहा जाता है। जिस प्रकार व्यक्ति केः लिए शरीर, मन,बुद्धि और आत्मा जरूरी है, इन चारों को मिलाकर व्यक्ति बनता है उसी प्रकार देश, संकल्प, धर्म और आदर्श के समुच्चय से राष्ट्र बनता है।''**

**- पं दीनदयाल उपाध्याय**

# कुछ लिखिए....

**(लेखन की दुविधा के बीच में पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर और युग भारती द्वारा प्रदत्त मूल्यों की एक भावनात्मक अभिव्यक्ति करता दिवाकर दीक्षित जी का लेख)**

कुछ सप्ताह पहले दशकों पूर्व मेरे साथ पढ़े एक मित्र ने इच्छा व्यक्त की कि मैं कुछ लिखकर प्रेषित करूँ। अवसर था विद्यालय (पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर) के पूर्व छात्रों द्वारा संचालित सामाजिक संस्था युगभारती के राष्ट्रीय अधिवेशन के उपलक्ष्य में युगप्रभा के विशेष अंक के प्रकाशन का। जब कोई अपना आग्रह करे तो स्वीकारने के अतिरिक्त विकल्प नहीं रह जाता। चुनौती बहुत बड़ी थी, विशेषकर इसलिए कि लिखने का अभ्यास नहीं रहा। लगभग एक दशक से डिजिटल प्रगति के प्रपंच में ऐसा फँसा कि पेन पकड़ने की आदत लगभग समाप्त सी हो गई। अब तो की–बोर्ड से टाइप करते हैं, स्क्रीन पर पढ़ते है, दो अंगुलियों से लिखे को बड़ा कर लेते हैं। आरंभिक छात्र जीवन में जिस तरीके से लिखना व पढ़ना सीखा था, अब उस पद्धति के अनुपालन की संभावनाएं बहुत कमतर हो चली हैं। आज जब कलम पकड़ी तो पहली इच्छा हुई कि इस पल का एक चित्र लेकर संजो लिया जाए। मानो किसी दुर्लभ संभावना पर प्रयोग किया जा रहा हो। हालांकि यह अच्छी स्थिति नहीं है। क्योंकि जब हम कलम उठाते हैं, पन्ने पर लिखते हैं तो लिखे गए विषय से एक भावनात्मक जुड़ाव हो जाता है। एक आत्मीयता सी बनती है लेख और लेखक के बीच में, जो कि कम्प्यूटर स्क्रीन पर देखकर टाइप करने से नही बन पाती। यूं भी कम्प्यूटर पर हम अक्सर वो लिखते हैं जो शैक्षिक या व्यवसायिक जिम्मेदारियां हमें लिखने को मजबूर करती हैं। व्यक्तिगत तौर पर बहुत समय बाद उस विषय पर कुछ लिखने का प्रयास है, जो मन से जुड़ा हो। सत्य कहूँ तो विषय मन में पूर्णतया निर्धारित नहीं है। मन को इतना दायित्व सौंपा है कि लिखा हुआ युगभारती के लिए उपयुक्त रहे।

पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर से अंतिम कक्षा उत्तीर्ण किए हुए आज लगभग पैंतीस वर्ष हो गए हैं। विद्यालय से जुड़ी स्मृतियां आज भी जीवंत हैं। समय के इतने बड़े अंतराल के बावजूद साथी सहपाठियों और आचार्यों से जो आत्मिक संवाद बना, उन स्वर्णिम पांच वर्षो में जो विद्यालय में रहने का और जीने का अवसर मिला, अंतर्मन उसी से जुड़ा रहा। समय बीतने के साथ लगभग वही स्मृतियां मन में रहती हैं जो भावनात्मक तौर पर आपको सुख देती हैं और आपके सामर्थ्य को बल देती हैं। व्यक्तिगत तौर पर बाद के जीवन में मेरा विद्यालय से बहुत नियमित संपर्क नहीं रहा। लगभग पच्चीस वर्ष देश से बाहर रहना भी इसका एक कारण रहा। आजकल सोशल मीडिया ने एक दूसरे से जुड़े रहना आसान कर दिया है। जब भी उस कालखंड से जुड़े साथी मिलते हैं, एक अलग आत्मीयता का भाव अंतस में जन्मता है। उस भावनात्मक जुड़ाव को, उसकी सरलता को व्यक्त करना हो तो महाकवि निराला की चार पंक्तियां बड़ी उपयुक्त लगती हैं–

**'मौन मधु हो जाए भाषा मूकता की आड़ में,**
**मन सरलता की बाढ़ में, जल–बिन्दु सा बह जाए।'**

खुद के जीवन में मैंने सरलता को सहेजा और पोषित किया है। एक दूसरे से जुड़े रहने के लिए, पारस्परिक विनीत भाव बनाए रखने के लिए, आज के समय में सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में जो क्रांति आयी है उसने पिछले दशकों में बाजार, व्यापार, व्यवसाय आदि में अनन्त अवसर उत्पन्न किए हैं। साथ ही, इस क्रांति ने वैयक्तिक सम्बन्धों और जीवन में एक चुनौती भी पैदा की है। वह चुनौती है, आपसी भावनात्मक सहजता और सरलता बनाए रखने की। युगभारती के अपने साथियों को जोड़े रखने के होने वाले निरन्तर प्रयास हम सभी में भावनात्मक सहजता बनाए रखने में बहुत बड़ी भूमिका निभाते है। युगभारती राष्ट्रीय अधिवेशन 2024 के आयोजक मित्रों और युगप्रभा पत्रिका के संपादकों को को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

» **दिवाकर दीक्षित** (1989 बैच)
जिनेवा

Fena

8' x 4'

मम्मी,
NO.1 डिटर्जेंट
ही लेना
No. 1 क्वालिटी डिटर्जेंट
आजमायें और अपनायें
Fena
Fena
फेना ही लेना

FENA
BETTER PRODUCTS, CLEANER WORLD
Fabric Care
Home Care
Personal Care
FENA, THE REAL TRUST OF INDIA
For over four decades, Fena has withstood the real Quality Tests, the rigorous usage that happens across homes in India and delivered "True consumer satisfaction". With a wide range of products in Fabric Care, Home Care and Personal Care, We have consistently given the highest quality brands like Fena Detergent, Impact Premium Wash, Nip Dishwash, Cop Toilet & Floor Cleaners, Famus Beauty Soap and Famus Hand Wash.
Thank You India, for making us part of your life. Fena Hi Lena
Fena | Impact Wash | NIP | COP | FAMUS
MADE IN INDIA WITH PRIDE
48+ YEARS OF RESEARCH IN THE SCIENCE OF WASHING
FENA (P) LIMITED
A-237, Okhla, Phase-1, New Delhi-20, India | 011- 69057100 | response@fena.com | www.fena.com
*BASED ON LAB TEST AND CONSUMER SURVEY OF DETERGENT POWDER BRANDS UPTO MRP RS.85/- PER kg BY INDEPENDENT MARKET RESEARCH AGENCY I3RC INSIGHTS IN FEBRUARY 2024. | # IMAGES ARE FOR REPRESENTATION PURPOSE ONLY.

IFFCO
इफको नैनो ऊर्वरकों
की शक्ति जो खेतों में छा जाए,
कम लागत में अधिक फसल
से हर किसान मुस्काए।
परिवहन और भंडारण में आसान
पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं
एक बोरी के बराबर कारगर
फसल की गुणवत्ता बढ़ाए
500 मिली ₹225/- में
IFFCO
NANO UREA PLUS
500 मिली ₹600/- में
IFFCO
NANO DAP
LIQUID (8:16:0)
आज ही अपने निकटतम इफको बाज़ार से खरीदें।

# स्मृतियों के झरोखे से......

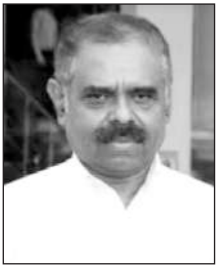

**(अपनी जीवन पुस्तिका के पृष्ठों को पलटते हुए श्री दुर्गेश माधव अवस्थी जी (1976 बैच) ने विद्यालय से अर्जित ज्ञान और अनुशासन की महत्ता और अपने जीवन कार्यक्षेत्र में इनकी उपादेयता पर इस लेख के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये है।)**

मैं दुर्गेश माधव अवस्थी। वर्तमान में तो पुलिस महानिदेशक पद से सेवानिवृत्त हूँ लेकिन जीवन की यात्रा आरम्भ हुई कानपुर के दीनदयाल विद्यालय से। 'तमसा के तट पर' से शुरू हुई विकास यात्रा के विषय में अचानक संक्षेप में लिखने के आचार्यजी के आदेश ने एकाएक भावनाओं का ज्वार ला दिया। चौंकिए मत! कानपुर में तमसा कहां से आई ? यह वह पुस्तक थी जो आचार्य ओमशंकर जी ने मुझे पढने को दी थी जब मैं छठी कक्षा में था।

स्मृतियों के झरोखे से न जाने कितनी बातें याद आ रही हैं, न जाने कितनी शिक्षा याद आ रही है। याद आ रहा है वह विशाल कक्ष जो कच्चा हुआ करता था, जहां बैठकर पूज्य गुरू जी (गोलवलकर जी) को हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा करते हुए हमने घंटों देखा था। उसी विशाल कक्ष में कबड्डी के मैच भी हो जाया करते थे। याद आ रही हैं श्रद्धेय 'बूजी', उनका अत्यंत सौम्य मुख और उनकी मधुर मुस्कान, जिसने बचपन से ही हमें विनम्रता की शिक्षा दी। जिस स्नेह से वे हमें टॉफी दिया करती थी, वह ममतामयी दृष्टि अभी भी ज्यों की त्यों मेरी स्मृतियों में है। हम लोगों के प्रधानाचार्य श्री चंद्रपाल सिंह जी जो अंग्रेजी भी पढाते थे और हम लोगों के साथ बडी मेहनत करते थे। शिंदे जी, जिन्हें शेंडे जी के नाम से जाना जाता था। उनका त्यागमयी जीवन आज भी अनुसरणीय है।

आचार्य श्री ओमशंकर जी हम लोगों के सही मायने में आदर्श थे। व्यक्तिगत जीवन तो उनका अनुकरणीय था ही, हम सबके भविष्य की चिंता सदैव उनकी आँखो में थी। प्रत्येक विद्यार्थी के स्वास्थ्य, अनुशासन और पढाई के प्रति रूझान का पूरा विवरण उनके दिमाग में रहता था। जीवन में अनुशासन का महत्व हमने आचार्य जी से ही सीखा। इसके अलावा वे हिन्दी विषय के श्रेष्ठतम शिक्षक भी थे। हम लोगों की हिन्दी आज भी उन्ही के कारण अच्छी है। दीनदयाल विद्यालय का पूरा दैनिक कार्यक्रम इस प्रकार से बनाया गया था कि हम सबका सर्वांगीण विकास हो सके। पढाई के अलावा प्रतिदिन व्यायाम, खेलकूद, निबंध प्रतियोगितायें, भाषण प्रतियोगितायें, वाद विवाद इत्यादि ने हम सब में बचपन से ही श्रेष्ठ गुण भर दिये। स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिष्क और स्वस्थ विचार हम सबमें रहें, यही परिकल्पना थी, दीनदयाल विद्यालय के संस्थापकों की। मुझे याद है कि बैरिस्टर साहब हमेशा कहते थे कि हमें अनेक दीनदयाल बनाने हैं।

बचपन से किशोरावस्था तक की विद्यालय में हुई इस प्रकार की शिक्षा दीक्षा ने हम सबके आज के जीवन को सम्मानित और विकसित बनाने में नींव की भूमिका निभाई है। कठोर अनुशासन में बढे और पढे हम सब, वास्तव में अगर कुछ बन सके तो यह सब विद्यालय के समर्पित शिक्षकों की वजह से ही संभव हो पाया है। बीज को कितनी धूप, कितना पानी और कितनी खाद देना है, यह एक योग्य माली को ही पता होता है। माली की कठिन तपस्या ही मुस्कराते हुए, खूशबूदार और चमकदार पुष्पों का सृजन करती है। हम सबके जीवन को महत्वपूर्ण बनाने में विद्यालय का अप्रतिम योगदान है।

मैं यह मानता हूँ कि मेरे पूरे जीवन को एक सही दिशा में ले जाने में विद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान है।

दसवीं के बाद की शिक्षा बी.एन.एस.डी. इंटर कॉलेज, कानपुर तथा वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर में हुई। एमएससी. (प्रथम) के साथ ही साथ, मेरा चयन नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (National Suger Institute) के Suger Technology विभाग में हो गया था। वहां से उत्तीर्ण होने के बाद पहले बिहार में चंपारण जिले की चकिया शुगर फैक्ट्री में तथा बाद में गुजरात की बारडोली शुगर फैक्ट्री में नौकरी करते करते शुगर टेक्नोलॉजिस्ट की भूमिका का निर्वहन सफलता पूर्वक किया। वहीं रहते हुए सिविल सर्विस यू.पी.एस.सी. (UPSC) के लिए अध्ययन करना प्रारंभ किया और 1986 में प्रथम प्रयास में ही चयन होने के पश्चात मसूरी एकेडमी में प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ।

सन 1986 से 2024 तक की आई.पी.एस. की पूरी सेवा में, मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ के विभिन्न जिलों में हर तरह की परिस्थितियों व चुनौतियों का सामना करते हुए हमेशा विद्यालय में दी गई बचपन की शिक्षा और संस्कार एक संबल के रूप में साथ रही। चाहे दुर्दान्त डकैतों का सामना हो, चाहे नक्सलवाद की चुनौती रही हो, चाहे सांप्रदायिक तनाव की परिस्थितियां रही हो, चाहे आपराधिक मामले रहे हों, हर समय, हर मोड़ पर बचपन में जिन गुणों के बीज विद्यालय में हमारे मन–मस्तिष्क में डाले गए थे वे अंकुरित होकर हमेशा छाया की तरह साथ बने रहे। एक मजबूत छाया, एक मजबूत सहारा।

आज ही आचार्य श्री ओमशंकर जी की बातें याद रहती हैं जब उन्होंने मीठी सुपारी खाने पर टोका था। वह दिन और आज का दिन, जब किसी प्रकार का नशे का व्यसन नहीं लगा। जैसा बचपन में था वैसा ही आज भी हूँ। इसी तरह की अनेक बातें हैं चाहे लिखने में हो या बोलने में हो, हमेशा हर समय आगे रहने में विद्यालय की ही भूमिका रही है। समय पर सारे काम निर्भयता से और अनुशासन में करते रहने की प्रवृत्ति बचपन से ही मन में घर कर गई है। नौकरी ही नहीं बल्कि पूरी जीवन यात्रा में विद्यालय के समस्त गुरूओं का जो योगदान है उससे उऋण हो पाना संभव नहीं है, कम से कम इस जीवन में तो नहीं।

शायद बचपन में कभी सोचा न था कि जीवन में कभी इतनी ऊँचाईयों तक पहुचूंगा। ईश्वर की कृपा और विद्यालय की प्रारंभिक तपस्या ने हमारे जीवन को बना दिया। यह सच में साबित हो गया कि –

**कौन कहता है कि आसमां में सूराख नहीं हो सकता?**

**एक पत्थर तो जरा जोर से उछालो यारों !!**

**» दुर्गेश माधव अवस्थी**
(1976 बैच)
सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक, छत्तीसगढ

**व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में चारों का ध्यान रखना होगा। चारों की भूख मिटाये बिना व्यक्ति न तो सुख का अनुभव और न अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही प्रकार की उन्नति आवश्यक है। आजीविका के साधन, शान्ति ज्ञान एवं तादात्मय-भाव से ये भूखें मिटती हैं। सर्वांगीण विकास की कामना ही व्यक्ति को समाजहित में कार्य की प्रेरणा देती है।**

**(पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन)**

# अंतर्ध्वनि

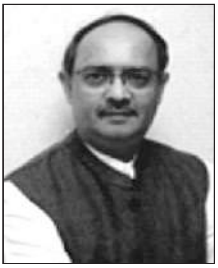

लगभग आधा दशक पहले मैं चेन्नई के एक बहुत बड़े आई डॉक्टर, डॉ अमर अग्रवाल के अस्पताल में घूमने गया। हम लोग अक्सर एक दूसरे के आई सेंटर में देखने और सीखने के लिए जाते रहते है। डॉ. अमर अग्रवाल हिंदुस्तान की एक जानी मानी शख्सियत हैं। उन्होंने अपने Retina Surgeon से मुझे मिलवाया। डॉ अमर अग्रवाल बोले– Meet My Retina Surgeon डॉक्टर अतुल। जब मै उनसे मिला तो डाक्टर अतुल बोले मलय भैया आपको तो मैं अच्छे से जानता हूं। यह बात चेन्नई में हो रही थी। निश्चित रूप से मैं उसे नहीं पहचान पाया था। तब उसने बताया कि वह भी पंडित दीनदयाल विद्यालय का पूर्व छात्र है।

जिस डॉक्टर को उन्होंने एक स्पेशलिस्ट की तरह मिलवाया था और जिसे वह समझते थे कि वह उनका एक मजबूत खंबा है वह तो हमारे विद्यालय का ही पूर्व छात्र निकला, अपना अनुज निकला। न जाने ऐसे कितने खंबे कहां–कहां किस–किस जगह जाकर गड़े हुए हैं और हमें पता भी नहीं है। हम तो बस बीज डालते गए और आगे चलते गए। वह बीज कब प्रस्फुटित हो गए, कब पल्लवित और पुष्पित हो गए और कब वह घने वृक्ष हो गए पता ही नहीं लगा। युग भारती का कुनबा जाने अनजाने बढ़ता चला गया।

युग भारती सही मायने में पंडित दीनदयाल विद्यालय से निकले हुए पूर्व छात्रों की ही संस्था है। इस संस्था से निकले सदस्य आज अपनी–अपनी पहचान बनाकर खड़े हुए हैं। बात यह थी कि एक पंडित दीनदयाल चले गए तो उनकी जगह हम कई पंडित दीनदयाल बना देंगे। हम कह सकते हैं कि कामयाबी हासिल हुई है।

सबसे महत्व की बात यह है कि चाहे वह कितना भी सीनियर बंदा हो चाहे वह किसी भी ओहदे पर हो अगर आप स्कूल सीनियर है तो आपके पैर छूने में उसे तनिक भी हिचक नही होती है। आज जब Kanpur ophthalmic society की मीटिंग में मैं गया और डॉक्टर अतुल मुझे मिले तो वह मेरे पैर छू रहे थे। मैंने बार–बार मना किया फिर भी वह पैर छू रहे थे। यहां तक की i-next के सीईओ भी जब हमसे मिले तो उन्होंने मेरे पैर छू लिये। तो क्या मैं इस लायक हूं कि लोग मेरे पैर छूएं, शायद नहीं। वह पैर इसलिए छू रहे हैं कि उनको इस बात की शिक्षा दी गई है कि जो उनके सीनियर हैं उनका सम्मान करना चाहिए। यह जो सम्मान करने की आदत या ट्रेनिंग डाली गई वह अपने आप में अप्रतिम है।

यह एक छोटा उदाहरण है, किन्तु यह बताने मे सक्षम है कि हम में क्या 'खास' है. पवन जी ने यह कहा कि कुछ संस्मरण से जुड़ा लेख हो तो बहुत महत्वपूर्ण होगा. मैं तो विद्यालय के सामने ही आ बैठा, संस्मरण तो इतने होंगे की पूरी किताब ही बन जायेगी।

बेंगलुरु में नीरज से जब हम मिले तो डिनर के दौरान नीरज ने बड़े ही विश्वास के साथ कहा कि मैंने बेंगलुरु के इंजीनियर्स को सोचना सिखा दिया है। मतलब, यह जो सोचना है या अपने आप सोच कर काम करना है, यह हमको कक्षा 6 में ही सिखा दिया गया था।

अपने व्यक्तिगत काम के लिये अपनी सोच का विकास करना अपने हिसाब से जो सही लगे उसी पर आगे बढ़ना, यह शिक्षा हमें बाल काल में ही दे दी गई थी। अगर ध्यान से देखा जाए तो यह भी कोई छोटी बात नहीं है! अपने विद्यालय के विद्यार्थी की यह एक यूएसपी है। हम अपनी छाप छोड़ते हैं।

प्रवीण भागवत के साथ हम लोगों ने मिलकर एक दशक पहले आउटडोर वाईफाई के आधार पर टैली–ट्रांसमिशन शो किया जो कि शायद भारत में पहली बार हुआ था।

अगर हम किसी और ग्रुप की बात करते तो शायद इसके इकोनामिक इंप्लीकेशंस पर चर्चा होती। लेकिन

हमने इसको एक एकेडमिक एक्सरसाइज की तरह किया। इस पूरी प्रक्रिया में वह व्यक्ति जिसने हमें कक्षा 6 में पढ़ाया था वह शामिल रहा तो इसका मतलब कक्षा 6 से कक्षा 12 के बीच में जो हमारी शिक्षा हुई वह खत्म नहीं हुई, वह सूत्र समाप्त नहीं हुआ. यह जो सूत्र में मिला हुआ बंधन है यह जो जुड़ाव है यह हमें एक अलग पहचान देता है।

निश्चित रूप से अब हम उस पड़ाव पर आ गए हैं जहां से हम आगे देखना चाहते हैं। हम विद्यालय, उसके परिवेश और उसकी बाउंड्री से बाहर आना चाहते हैं। हम समाज के सामने उदाहरण प्रस्तुत करते रहे हैं और अब समाज को बताना भी चाहते हैं कि हम कौन हैं।

प्रायः हमारी अंग्रेजी बहुत अच्छी नहीं होती थी और स्पेलिंग मिस्टेक तो आज भी बहुत होती है। लेकिन हमारी हिंदी भाषा का स्तर बहुत अच्छा रहा। हमारा काव्य के प्रति रुझान बना रहा। हमने लिखने की कला सीख ली। हमारे अंदर सृजनात्मकता आ गई। हमारा अपनी धरती से लगाव और जुड़ाव बन गया। जब मैं कानपुर प्रेक्टिस करने आया तो लोगों ने कहा कि आप दिल्ली और चेन्नई छोड़कर कानपुर क्यों आ गए हैं। तो मैंने उनसे कहा कि बचपन में कुछ पंक्तियां मैंने पढ़ीं थी वही बताता हूँ।

**'फल खाये जिस वृक्ष के, गंदे कीन्हे पात।**
**अब यही हमारा धर्म है, हम जलें इसी के साथ।।**

You can change everything but you cannot change your belonging or paternity! तो आप जहां से उत्पन्न हुए आप वहां से अलग कभी नहीं हो सकते. और अगर मुझे लोगों की सेवा करना ही है तो क्यों ना वह मेरे अपने लोग हो. और इसी सद्विचार के साथ मैंने 1996 में जहां प्रैक्टिस शुरू करी थी, उस समय वहां पर एक जंगल जैसा स्थान था। शंकर नेत्रालय की चका–चौंध से दूर एक बिल्कुल सुनसान, लगभग बियाबान स्थान पर मैंने अपनी प्रैक्टिस शुरू कर दी।

इसके पीछे कहीं ना कहीं वह सेंटीमेंट दबे हुए थे कि हम अपने इलाके में जाएंगे अपने लोगों के बीच में काम करेंगे। अगर ध्यान से देखा जाए तो इस विचार का बीजारोपण तो विद्यालय में ही हो गया था ना!

पहले सामने हनुमान जी की मूर्ति तो हमारे क्लीनिक से दिखाई देती थी। फिर धीरे–धीरे दीवारें ऊंची होती गई, उस तरफ भी और इस तरफ भी परन्तु जुड़ाव बना रहा। आज जब हम अपने–अपने करियर के उत्कर्ष पर हैं तब भी अगर हमारे गुरु सामने आ जाते हैं तो हम निःसंकोच पैर छूते हैं। यह हमारे जींस में आ गया है, विश्वास मानिए यह भी कोई छोटी बात नहीं है।

हमने जो एक ब्रांड बनाया है उसे कामयाबी का एक दृढ़ सोपान माना जाना चाहिए, बावजूद इसके कि युग भारती सदस्य अपने क्षेत्र में राज कर रहा हो और आगे बढ़ रहा हो हम बड़े सहज ढंग से उन तक पहुंच सकते हैं। ऐसा इसलिए है कि हमें यह लगता है कि शायद हम अपने परिवार के ही किसी व्यक्ति से मिल रहे हैं।

युगभारती को एक विचार मान लेना चाहिए. और हमें मान लेना चाहिए कि हम उसे विचार के हिस्से हैं। हम जो कार्य कर रहे हैं, उसकी जो छाप समाज पर पड़ रही है वही युगभारती को स्थापित कर देता है। वस्तुतः हम एक इतनी बड़ी शक्ति है कि हमें उसका अंदाज तक नहीं है। ''पवन तनय बल पवन समाना, का चुप साधि रहा बलवाना'' वाली स्थिति है। बोये बीज अब वट वृक्ष हो गए हैं और इन वट वृक्षों का समूह है ''युगभारती''।

**» डॉ. मलय चतुर्वेदी**
(1982 बैच)
वरिष्ठ नेत्र चिकित्सक, कानपुर

# युग भारती की आत्मिक शक्ति : परिवार बोध

बात पिछले वर्ष की है। ईश्वर की कृपा से स्वस्थ और मस्त रहने वाली धार्मिक स्वभाव की मेरी 'धर्मपत्नी इंदु जी' ने स्वास्थ्य सम्बन्धी कुछ समस्याओं का अनुभव किया। समस्या कुछ बढ़ी तो बेटे के साथ युगभारती सदस्य बडे भाई 'नवीन भार्गव'(1976 बैच) की चिकित्सक पत्नी डॉ शिखा भार्गव भाभी जी के पास गईं। उन्होंने शंका जताई कि इन व्याधियों का कारण मीनोपॉज हो सकता है। उन्होंने कुछ परीक्षण बताए जिससे स्पष्ट हो जाये कि मूल समस्या क्या है? साथ ही ब्लड प्रेशर की जांच की जो सामान्य से अधिक आया तो उन्होंने सलाह दी कि हृदय चिकित्सक को भी दिखा लें। चूंकि श्रीमती जी दवा खाने से बचती हैं, अतः उन्होने ब्लड टेस्ट की बात तो मान ली किंतु हृदय चिकित्सक को दिखाने से मना कर दिया।

अगले ही दिन 31 जुलाई 2023 को हमलोग एक अन्य युगभारती सदस्य एवं कानपुर के प्रतिष्ठित पैथोलॉजी के संचालक बडे भाई 'डॉ प्रवीण सारस्वत जी'(1982 बैच) के यहां ब्लड टेस्ट कराने गये। रक्त आदि के नमूने लेने के बाद डॉ प्रवीण जी ने डॉ शिखा जी का पर्चा देखा और हमें सलाह दी कि कानपुर के प्रतिष्ठित हृदय चिकित्सक, युगभारती सदस्य और प्रिय अनुज डॉ उमेश्वर पांडेय जी (1994 बैच) से भी अवश्य सलाह ले ली जाए। दोपहर के लगभग 2.30 बजे होंगे। मैने उमेश्वर जी को फोन किया तो उन्होने कहा कि यदि कोई इमर्जेंसी न हो तो कल 12 बजे आ जाएं।

अगले दिन चूंकि मंगलवार था और पूर्णमासी भी थी। तो श्रीमती जी ने पूजन–पाठ, कथा आदि सम्पन्न किया और हम सबने मंदिर जाकर हनुमान जी महाराज का दर्शन किया और कानपुर हृदयरोग संस्थान ठीक 12 बजे पहुंच गए। वहां पहुंचकर हम 'अनुज भ्राता (हेड ऑफ डिपार्टमेन्ट व आईसीयू इंचार्ज) डाक्टर उमेश्वर पाण्डेय' जी से मिले। उन्होने एक सहयोगी के साथ इमर्जेंसी मे भेजा। वहॉ ECG आदि जांचें हुईं। फिर हमें वहा इमर्जेंसी वार्ड के सहायता कक्ष में बैठा दिया गया।

थोड़ी ही देर में डाक्टर उमेश्वर आये, जांचें देखीं। फिर पूछा क्या उलझन लग रही है या सिर दर्द हो रहा है? पर ऐसा कुछ भी धर्मपत्नी इंदु जी को महसूस नही हो रहा था। डाक्टर उमेश्वर ने पुनः ईसीजी कराया, रिपोर्ट देखी और तुरन्त एन्जियोग्राफी कराये जाने की सलाह दी। मेरे हाँ, कहने पर इंदु जी को स्ट्रेचर पर लेटने के लिए कहा गया लेकिन सदा मस्ती में रहने वाली, स्वयं को पूर्ण स्वस्थ समझने वाली इंदु जी स्ट्रेचर पर लेटने को तैयार नही हो रही थीं। बहुत समझाने पर वो सहमत हुईं।

एन्जियोग्राफी दूसरे तल पर होनी थी और वहॉ लगभग 60–70 लोगो की लंबी लाइन। लेकिन उमेश्वर जी के प्रयासों से सबसे पहले श्रीमती जी की ही बारी आई। एन्जियोग्राफी में स्प्ष्ट हुआ कि एक नस पूर्णतया बन्द थी।

डॉ. उमेश्वर के निर्णय अनुसार दो स्टंट डाले गये। इन सभी प्रक्रियाओं के बाद हम 1.30 बजे इंदु जी को लेकर इमरजेंसी वार्ड में वापिस पहुंच गये। 'मात्र 1.30 घंटे मे सही निरीक्षण और उपयुक्त उपचार'। सत्य कहूँ तो सामान्यतः इससे ज्यादा समय उस चिकित्सालय में किसी रोगी का पर्चा बनवाने मे लग जाता है। लेकिन अद्भुत है 'युगभारती सदस्यों के बीच की आत्मीयता और स्नेह। अप्रतिम है उनका ''परिवार बोध'' जो एक विद्यालय से अलग–अलग वर्षों में उत्तीर्ण छात्रों के बीच इतना प्रगाढ़ सम्बन्ध स्थापित कर देता है। घर पहुंचने के बाद अन्य परिवारीजन, मित्रगण श्रीमती जी से मिलने आए तब उन्हें स्थिति की गम्भीरता का अंदाजा हुआ। हमेशा ही हम मित्रों की युगभारती को लेकर, विद्यालय को लेकर दीवानेपन जैसी हालत पर हम सबकी पत्नियां

परिहास में कहती थीं कि दीनदयाली, बड़े बवाली।' यह सत्य भी है, हम बवाल की हद तक स्नेह से जकड़ लेते हैं एक दूसरे को। हमारी परस्पर की आत्मीयता किसी भी संकट के समय एक दूसरे के साथ मजबूती से खड़े रहने को विवश कर देती है। इसी कारण वर्ष 1976 में बारहवीं उत्तीर्ण करने वाले नवीन भार्गव जी की पत्नी 1983 में बारहवीं उत्तीर्ण करने वाले युगभारती सदस्य की पत्नी की चिंता करती हैं और 1982 बैच के डॉ प्रवीण सारस्वत और 1994 बैच के डॉ उमेश्वर के चिकित्सकीय प्रयासों से संकट हल हो जाता है। एक संकट को टालने के लिये 18 वर्षों की दूरी वाले सदस्यों का यह परिवार बोध' युगभारती को और युग भारती सदस्यों को समाज में विशिष्ट होने का भान कराता है।

**» अजय शंकर दीक्षित**
(1993 बैच)

---

# संस्मरण

आचार्य जी ने 24 फरवरी, 2024 की सदाचार वेला में श्री हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा का उल्लेख किया तो अपने आपको सहज ही पचास वर्ष से भी पूर्व की उस आनंदमय वेला में सम्मिलित पाया।

घास में बंधी हुई संगमरमर की शिलाएं और विशाल कक्ष में उनकी उपस्थिति, हम सभी विद्यार्थियों के लिए कौतुहल का विषय थी। परम आदरणीय बू जी की नित्य उपस्थिति और कभी—कभी साथ में बैठकर कुछ मंत्रों का उच्चारण, एक अद्वितीय अनुभव था। जैसा कि आचार्य जी ने हम सभी को बताया कि प्राण प्रतिष्ठा में परम विद्वान आचार्य एवं वेदशास्त्री जन का समूहिक मंत्रोच्चारण अविस्मरणीय अनुभव था। परम पूज्य श्री गुरु जी के मंच की पृष्ठभूमि एक विशालकाय हनुमान जी का कैनवास चित्र था, जिसे आचार्य श्री आनंद जी ने स्वयं तैयार किया था।

एक दिन आचार्य जी ने मुझे बुलाकर कहा कि मैं आज से तुम्हें एक जिम्मेदारी दे रहा हूँ। मैंने सविनम्र पूछा क्या? आज से हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाने की जिम्मेदारी आपकी। लेकिन मुझे तो मंत्र पूजा आती नहीं। तब उन्होंने बताया त्वदीयं वस्तु गोविन्दं तुभ्यमेव समर्पये..... आँख बंद कर, इसका उच्चारण करो और सोचो कि हनुमान जी तुम्हारे सामने उपस्थित हैं और समर्पण को स्वीकार कर रहे हैं।

आचार्य जी, आज भी मैं घर पर इस प्रथा का अनुसरण कर रहा हूँ।

**» हरिकान्त मिश्र**

(बैच 1976)

रतनदीप हॉस्पिटल
मल्टी सुपर स्पेशलिटी, सर्वोदय नगर, कानपुर
Ph. 7233900037, 7233900038,
0512-2220111, 0512-2500111
www.ratnadeephospital.com
PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
PRE ACCREDITED
YOUR HEALTH OUR CONCERN
24 hr
EMERGENCY
SERVICE
• ECHS, CGHS
Ayushman Bharat
Empanelled
• Facilities of TPA's
DR. PRADEEP TRIPATHI
M.S. Orthopaedic Surgeon
DR. RATNA TRIPATHI
Managing Director
A Complete
Health Care Unit
(With All Advanced
Modalities Of Treatment)

Drxlabs
रोगमादौ परीक्षेत
NEED A BLOOD TEST ?
Let`s Put Health On Top
Priority with
Drxlabs
Visit our website
www.drxlabs.co.in
CALL 8287-351635
24x7 support

# दीनदयाल विद्यालय – एक आत्मानुभूति

**(डॉ पंकज श्रीवास्तव जी (1991 बैच) ने दीनदयाल विद्यालय, कानपुर में बिताए अपने छात्र जीवन के संस्मरणों की एक भावनात्मक अभिव्यक्ति इस लेख के माध्यम से की है। उन्होंने सटीक तरीके से स्प्ष्ट किया कि विद्यालय के आचार्यों और परिवेश का उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा)**

संस्मरण लेखन की एक अद्भुत स्थिति है जिसमें लेखक भावनाओं की अभिव्यक्ति में कहीं संकुचित तो कहीं अतिरेक में भावविगलित हो कर अपने ही विचार सागर में आनंदित होता हुआ डूबता तैरता रहता है। आज लेखनी हाथ में उठाते समय कमोबेश मेरी भी स्थिति यही रही क्योंकि कुछ लिखना और अपने दीनदयाल विद्यालय में बिताए हुए समय पर कुछ लिखने में धरती–आकाश का अंतर है।

ऐसा लगता है कि दीनदयाल विद्यालय मेरे लिए एक मंदिर है, जहाँ सम्पूर्ण विद्यालय की प्राण–प्रतिष्ठा हुई हो। वह विद्यालय नहीं एक जागृत शक्ति पीठ है जहाँ से हम सबके ह्रदय में राष्ट्रभक्ति, मातृभक्ति, ईशभक्ति के अंकुर रोपे गए, उनको पुष्पित पल्लवित होने का पर्याप्त अवसर प्रदान किया गया और कालांतर में विद्यालय के सभी मानस–पुत्रों के भीतर यही भाव अपने प्रबलतम रूप में देखने को मिला। जो जहाँ रहा विशिष्ट रहा क्योंकि विशिष्टता व्यक्तित्व की व्यक्तिगत नहीं थी, वो तो जनसामान्य के लिए थी। चूँकि यह विशिष्टता वैचारिक शक्तिबल पर टिकी थी इसीलिए आज भी सभी दीनदयाली भाइयों में स्वतः परिलक्षित होती है।

मेरा प्रथम साक्षात्कार अपने विद्यालय से तब हुआ जब मैंने कक्षा 6 में प्रवेश के लिए परीक्षा दी थी, सौभाग्यवश मेरा चयन भी हुआ था किंतु नियति को यह स्वीकार नहीं था और मैं प्रवेश नहीं ले पाया क्योंकि मेरे घर फजलगंज रेलवे कॉलोनी से विद्यालय बहुत दूर था और मेरे पास वहाँ तक पहुँचने की साधन–सुविधा उस समय उपलब्ध नहीं थी। ह्रदय में एक आस कहीं दबी सी रह गयी किंतु निष्प्राण नहीं हुई थी। जैसा की विदित है कि बीज कभी मरता नहीं है, वैसे ही हाई स्कूल के बाद पुनः परिस्थितियाँ अनुकूल हुईं तो ह्रदय कि सुषुप्त अभिलाषा को एक नवजीवन प्राप्त हुआ या यूँ भी कह सकते हैं कि हनुमान जी महाराज की असीम अनुकंपा से मुझे कक्षा एकादश में इस विद्या–मंदिर में पुनः प्रवेश का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बहुत लोग विरोध में थे क्योंकि अंग्रेजी माध्यम से सीधे हिंदी माध्यम में पढ़ना था और आगे जाकर डॉक्टर भी बनना था जोकि अंग्रेजी माध्यम मे पढ़ने से आसान हो जाता। तब तक मेरा प्रवेश बी.एन.एस.डी. इण्टर कॉलेज के सेक्शन 'ए' में हो भी चुका था। इन सबके बाद भी मेरा मन तो कदाचित इस कलियुग के उस विद्या–मंदिर में रमा था, जहाँ परमात्मा को मुझे केवल इंटरमिडिएट की परीक्षा नहीं उत्तीर्ण करानी थी वरन मेरे जीवन को एक नयी दिशा देनी थी। एक अदम्य साहसी युवक बनाना था, एक चट्टान की भाँति इच्छा–शक्ति से परिपोषित करना था, एक अद्भुत भक्ति–भाव से सिक्त करना था ताकि जीवन के कठिन से कठिन समय में भी मैं अपने व्यक्तित्व को अडिग और चरित्र को उज्ज्वल रख सकूँ। आज मैं पूरी श्रद्धा, विश्वास और भक्ति के साथ यह स्वीकार कर सकता हूँ कि आज मैं जो भी हूँ उसका आधार मेरे जीवन के वही दो वर्षों का समय हैं जिसको मैंने पंडित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय में अपने सहचरों और पूज्य गुरुजनों के सानिध्य में बिताया था।

उनकी शिक्षा–दीक्षा, व्यवहार, त्याग, सहिष्णुता, प्रेम, स्नेह, समर्पण, आत्मीयता ने ही मुझे इतना दृढ़ संबल प्रदान किया कि मैं काल के सभी झंझावातों का सफलतापूर्वक निराकरण करते हुये जीवन–पथ पर पूर्ण संतुष्टि के साथ अग्रसर हूँ।

विगत 22 वर्षों से चिकित्सा कार्य को वाराणसी में बिना किसी आरोप–प्रत्यारोप के शुचिता के साथ संपादित कर रहा हूँ। बहुतेरी बाधाएँ आती हैं, चुनौतियों की भी कोई कमी नहीं है, सांसारिकता अलग तरह से कार्यप्रणाली को परिवर्तित करने को बाध्य करती है, व्यावहारिकता एक अलग ही लिप्सा की रागिनी सुनाती है किंतु जैसे ही मन को विशाल–कक्ष में प्रतिष्ठित हनुमान जी महाराज के श्रीचरणों में केन्द्रित करता हूँ, दुविधा और भ्रम के सभी आवरण विच्छिन्न हो जाते हैं।

एक किशोरवय छात्र के रूप में विद्यालय जीवन बहुत आनंद– दायक रहा। मैं द्वादश में किशोर भारती का मंत्री भी था जिसके कारण बहुत से कार्यक्रमों के आयोजन का अवसर मिला था। अनगिनत वाद–विवाद प्रति–योगिताएं, निबंध–लेखन, कविता गजल के कार्यक्रम आदि आयोजित करके कुशल प्रबंधन और बिना किसी अभ्यास के तत्काल उद्बोधन की भी बहुत अद्भुत कला सीखने को मिली। आचार्य श्री दीपक जी के रूप में हृदयप्रिय अभिभावक और संवेदनशील मित्र मिले।

मुझे उनसे पढ़ने का तो सौभाग्य नहीं मिला किंतु जीवन की कई परिस्थितियों का सफलतापूर्वक निर्वहन कैसे किया जाए यह उनसे सीखने को मिला जो आज तक भी प्राप्त है।आचार्य श्री प्रकाश जी एवं श्री उमेश जी द्वारा बॉयोलॉजी लैब में बनाए गए वो अद्भुत रंगीन डायग्राम बनाने की कला ने मुझे मेडिकल कॉलेज में बहुत प्रसिद्धि दिलाई। आचार्य श्री हेमंत जी के अध्यापन ने मुझे फिजिक्स में अजेय बनाया जिसके कारण मैं पहले ही प्रयास में कानपुर मेडिकल कॉलेज मे चयनित हो पाया। आज जब नीट की तैयारी करते हुये किसी भी छात्र–छात्रा को कहते सुनता हूँ कि फिजिक्स दिमाग में नहीं घुसती या फिर कोचिंग, यू ट्यूब क्लास में जूझते देखता हूँ तो श्री हेमंत जी का अनायास ही स्मरण हो जाता है कि एक सरल व्यक्ति ने कितनी सादगी से इतना विषम विषय हम सबको पढ़ा दिया था कि किसी कोचिंग की कभी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। सौभाग्यशाली थे हम और क्या कहें?

केमिस्ट्री की बात ही क्या थी, आचार्य श्री राजेश जी तो हास्य–विनोद में इतना गूढ़ विषय ऐसे पढ़ा गए कि जैसे एक माँ अपने बच्चे को कहानियाँ सुना सुना कर भोजन करा देती हो। हम सभी कितना आनंदित रहते थे उनके साथ। उनके मुख से बार–बार दुराग्रह करके उनकी डांट का सबसे प्यारा शब्द 'बोदा' ही सुनकर कितना हँसते थे। शिक्षा आनंद का कारण रही कभी बोझ नहीं बनी। अध्ययन का दबाव या फिर जो आजकल कि प्रचलित भाषा में है– 'प्रेशर' कभी भी अनुभव ही नहीं हुआ।

विद्यालय के अभिभावक के रूप में परम आदरणीय आचार्य श्री ओम शंकर जी तो इस पूरी काया की रीढ़ थे और आज भी युग भारती के लिए जाज्वल्यमान प्रेरणा–पुंज हैं। हिंदी भाषा और साहित्य सदैव ही मेरे हृदय के बहुत निकट रहे और कदाचित आचार्य जी से मेरी निकटता और उनके प्रति मेरी आस्था का निमित्त भी बने। एक बार की घटना मैं कभी नहीं भूलता क्योंकि उसने हिंदी साहित्य के प्रति मेरी सोच को ही बदल कर रख दिया। एक बार आचार्य जी ने 'तुलसी का प्रबंध–निर्वाह' पर निबंध तैयार करने को कहा क्योंकि यह बोर्ड की परीक्षा के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण था। मैंने बहुत परिश्रम से कई पुस्तकों और गाइडों की सहायता से लगभग 13 पन्ने का एक लेख पूर्ण उदाहरणों से सुसज्जित कर के उनको दिखाने की चेष्टा की। उस समय बालमन में अपने लेख पर अभिमान भी था और प्रशंसा की भी भूख थी। दोनों की ही तुष्टि के लिए मैं आचार्य जी से समय माँग रहा था। लगभग तीन दिन पश्चात आचार्य जी ने कहा "इधर बीच व्यस्तता बहुत है, रजिस्टर रख दो, मैं देख कर बताऊंगा"।

कुछ दिन यूँ ही बीत गए फिर एक दिन उन्होंने मुझसे कहा "अवकाश के बाद मिलो, तुम्हारे लेख पर चर्चा करनी है।" मैं मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ और अवकाश के बाद उनकी प्रतीक्षा में उनके कार्यालय के बाहर ही

खड़ा रहा। कुछ समय बाद मुझे अंदर बुलाया और बोले "तुलसी का प्रबन्ध निर्वाह लिख कर लाये हो, कभी तुलसी को पढ़ा भी है?" मैं सन्न खड़ा रहा। एकदम चुप, कोई उत्तर नहीं सूझा। फिर उन्होंने पूछा" आज तक मानस पढ़ी है?" इसका उत्तर मेरे लिए सरल था, पूरे आत्मविशास से कहा" जी, आचार्य जी, घर के अगल–बगल जहाँ कहीं भी श्रीरामचरित मानस का पाठ होता है तो मैं जाकर पढ़ता हूँ।" उन्होंने कहा "घर में मानस है?", मैंने कहा" जी, छोटी वाली गुटका है, उसमें अर्थ नहीं है।" अब मेरे ऊपर वज्रपात की बारी थी। कई बार सभी पन्ने पलटने के बाद उन्होंने पहले पन्ने से लेकर हर पन्ने को अपने हरे पायलट पेन से एक कोने से दूसरे कोने तक तिरछे में काटना प्रारम्भ किया। दृष्टि रजिस्टर पर कटते हुये पन्नों पर जमी थी जो कि कई दिन के परिश्रम का परिणाम थे और कानों मे उनके शब्द गूँज रहे थे "आज तक मानस प्रारम्भ से पढ़ी नहीं, कोई छंद पढ़ा नहीं और चले हो तुलसी का प्रबंध–निर्वाह लिखने, जाओ! जा कर पहले मानस पढ़ो यदि सचमुच तुलसी को लिखना चाहते हो तो, हिंदी लिखने पढ़ने का सलीका सीखो अगर हिंदी से प्रेम है तो, वरना परीक्षा के लिए यह काफी है।"

मैं तो कुछ देर शून्य में रहा फिर भारी मन से रजिस्टर लेकर वहाँ से निकल गया। बहुत आघात लगा था क्योंकि केवल परिश्रम बेकार गया, ये बात नहीं थी। हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम को ललकार मिली थी जो सहन नहीं हो रही थी। आचार्य जी पर अगाध विश्वास था इसलिए सोचा कि कोई बात तो अवश्य है वरना आचार्य जी एक सिरे से ऐसे पूरा लेख नहीं काट देते। तब मैं श्री रामचरित मानस की बड़ी पुस्तक लेकर आया और प्रथम छंद से जब पढ़ना प्रारम्भ किया तब समझ आया की भूल कहाँ हो गयी थी। मैंने पुनः तन्मयता से विषय को पूरा पढ़ा, मानस पढ़ी और लेख पूरा कर के आचार्य जी को दिखाया।

आचार्य जी मुस्कुरा कर बोले "क्या मंत्री महोदय! फिर से लिख लाये", किंतु इस बार वह बहुत प्रसन्न दिखे और पूरे लेख पर प्रशंसा भी की। आज जब इस घटना को जितनी बार सोचता हूँ, रोमांचित हो उठता हूँ क्योंकि वह एक गुरु की अपने शिष्य को सबसे बड़ी शिक्षा थी। हम अपने ग्रन्थों को उनके मूल स्वरूप में जानें, उनका अध्ययन करें ताकि जो हमको सच्ची शिक्षा दी गयी है वही हमें प्राप्त हो। आचार्य जी के इस व्यवहार के बाद हमने पुस्तकों के मूल प्रतियों को खरीद कर ही उनका अध्ययन किया और यह सिलसिला आज तक जारी है।

श्रद्धेय माँ शारदे, प्राणप्रिय माँ भारती और परम पूज्य हनुमान जी महाराज के आशीर्वाद से आज मैं समय की उस थाती को अपने ह्रदय में संजोए अपने जीवन का सफलतापूर्वक सार्थक निर्वहन कर पा रहा हूँ। चारित्रिक उत्कृष्टता और शुचिता को अक्षुण्ण रखते हुये अपने कर्तव्यों का पूरी श्रद्धा, भक्ति और विश्वास के साथ पालन कर रहा हूँ। अपने सभी परम आदरणीय गुरुजनों एवं अग्रजों के श्रीचरणों में सादर प्रणाम एवं अनुजों के लिए स्नेह भावना के साथ, सम्पूर्ण दीनदयाल परिवार के लिए अपने ईष्ट प्रभु श्रीराम और देवाधिदेव महादेव से आशीर्वाद और कृपादृष्टि की कामना करता हुआ लेखनी को विश्राम देता हूँ क्योंकि भावनाओं का यह सागर कभी पार नहीं होगा, इसका कोई ओर–छोर है ही नहीं, कोई धरा नहीं, कोई आकाश नहीं, कोई क्षितिज नहींय है तो बस केवल भावनाओं की उत्ताल लहरें जो कभी इधर ले जायेंगी कभी उधर और मन के आनंद की इस अद्‌भुत स्थिति में केवल एक ही अनुभूति शेष रह जायेगी –

**"चिदानन्द रूपरूशिवोऽहम् शिवोऽहम्"**

**» डॉ. पंकज श्रीवास्तव**
(बैच 1991)
एम.बी.बी.एस., एम.एस.
लप्रोस्कोपिक एवं चेस्ट सर्जन
ओम् सर्जिकल सेंटर एंड मैटर्निटी होम, वाराणसी

# एकात्म मानववाद सिद्धान्त की विवेचना

**(प्रस्तुत लेख के माध्यम से श्री अम्बरीष त्रिपाठी जी ( १६६४ बैच) ने युगपुरुष पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद के सिद्धांत का विस्तृत विश्लेषण किया है। इस लेख के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि दीनदयाल जी का यह सिद्धांत वर्तमान परिदृश्य में भी कितना प्रासंगिक है।)**

**एकात्म मानववाद** – ''राष्ट्र की भी एक आत्मा होती है। उसका एक शास्त्रीय नाम है, सिद्धान्त और नीति में उसे चिति कहा गया है। मैकडूगल के अनुसार समूह की कोई मूल प्रकृति होती है। वैसी ही चिति किसी समाज की वह प्रकृति है जो जन्मजात है तथा जो ऐतिहासिक कारणों से नहीं बनी। चिति तो मूलभूत होती है चिति को लेकर तो प्रत्येक समाज पैदा होता है और उस समाज की संस्कृति की दिशा चिति निर्धारित करती है अर्थात् जो चिति के अनुकूल होती है, वह संस्कृति में सम्मिलित कर ली जाती है। चिति वह मापदंड है, जिससे हर वस्तु को मान्य अथवा अमान्य किया जाता है। यही राष्ट्र की आत्मा है। इसी आत्मा के आधार पर राष्ट्र खड़ा होता है और यही आत्मा राष्ट्र के प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति के आचरण द्वारा प्रकट होती है।'' **– पं. दीनदयाल उपाध्याय जी**

युगद्रष्टा पं. दीनदयाल उपाध्याय अपने आचरण व विचार से भारतीयता के प्रतिनिधि थे। उन्होंने तत्कालीन समाज में प्रचलित समाजवाद व पूंजीवाद को अव्यावहारिक व कागजी सिद्धान्त माना। उनका स्पष्ट मानना था कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में ये विचार न तो भारतीयता के अनुरूप है और न ही व्यावहारिक। भारत के लिए भारतीय दर्शन ही कारगर वैचारिक उपकरण हो सकता है। वे उस परम्परा के वाहक थे जो पं. नेहरू के भारत नवनिर्माण के स्थान पर भारत के पुनर्निर्माण के पक्षधर थे। उन्होंने तत्कालीन विचारधाराओं के विकल्प स्वरूप भारतीयता से प्रभावित जीवन दर्शन का एक खाका तैयार किया, जो मूर्त रूप मे एकात्म मानववाद के रूप में परिणित हुआ।

मानववाद यूरोपीय पुनर्जागरण का प्रमुख बौद्धिक आन्दोलन था, जिसका प्रारम्भ इटली में हुआ और बाद में यूरोप के अन्य भागों में फैला। दीनदयाल जी ने पश्चिम से मानववाद और भारतीय संस्कृति से एकात्मता को ग्रहण किया। अतः कहा जा सकता है कि पाश्चात्य मानववाद और भारतीय समाज की प्रक्रिया की फल श्रुति है, एकात्म मानववाद। वे मानवतावाद से प्रभावित थे, परंतु वे उसे उसी रूप में स्वीकार करने के पक्षधर नहीं थे। वे उसका भारतीय संस्करण लागू करना चाहते थे। भारतीय संस्कृति की एकात्मकता भारतीयता कासबसे महत्वपूर्ण बिन्दु है। यह एकात्मकता अनेकता में एकता, समन्वय जैसी चीजों की पर्यायवाची हो सकती है।

वस्तुतः मध्यकाल तक कला, साहित्य व विचार जगत के केंन्द्र मे या तो ईश्वर था या राजा। पुनर्जागरण ने इसके केन्द्र में मानव को स्थापित किया। यह मूलतः पाश्चात्य अवधारणा थी, जिसके समानान्तर भारत में एकात्मवाद चलता रहा जो आत्म व अहं ब्रह्मास्मि एवं व्यक्ति के एक होने के विमर्श से जुड़ा था। वैष्णव, शैव, शाक्त, आस्तिक, नास्तिक सभी अपने इन्द्रधनुषी स्वरूप में भारतीय संस्कृति से बंधे थे। एकात्मता की इसी भारतीय अवधारणा को जब पं. दीनदयाल जी ने पाश्चात्य मानववाद से जोड़ा तो एक नया दर्शन जन्मा–एकात्म मानववाद।

वास्तव में, एकात्म मानववाद को किसी वाद के रूप में देखना भी नही चाहिए। इसे हम एकात्म मानव दर्शन कहें तो अधिक उचित है। एकात्म मानववाद के इस वैचारिक दर्शन का प्रतिपादन पं. दीनदयाल जी ने मुंबई में 22 से 25 अप्रैल 1965 में चार अध्यायों में दिए अपने भाषण में किया। यह उनका मौलिक दर्शन था, जिसमें

मानव की आवश्यकताओं का विस्तार से वर्णन किया गया जो पूर्व में किसी अन्य दार्शनिक द्वारा नहीं किया गया था। यह विचार व्यक्ति बनाम समाज नही बल्कि व्यक्ति और समाज की एकात्मकता का विचार है। यह मानव बनाम प्रकृति नहीं, वरन मानव के साथ प्रकृति की एकात्मकता का विचार है। भौतिक बनाम आध्यात्मिक नहीं वरन इनकी एकात्मकता का विचार है। भारत में इसे धर्म कहा गया।

**यतो अभ्युदय निःश्रेयस समृद्धि सः धर्मः**

उन्होने पश्चिमी पूंजीवादी व्यक्तिवाद एवं मार्क्सवादी समाजवाद दोनों का विरोध किया लेकिन आधुनिक तकनीकि एवं पश्चिमी विज्ञान का स्वागत किया। दीनदयाल जी पूंजीवाद और समाजवाद के मध्य एक ऐसी राह के पक्षधर थे, जिसमें दोनों प्रणालियों के गुण तो मौजूद हों लेकिन उनके अतिरेक एवं अल्गाव जैसे अवगुण न हो। उनका मानना था कि पूंजीवादी और समाजवादी विचारधारा एक पक्षीय मौलिक– वादी विचारधारा है, जो मानव के शरीर एवं मन की आवश्यकता परविचार करती है। जबकि बुद्धि एवं आत्मा भी मानव शरीर के ही अंग हैं । अतः मनुष्य के सर्वांगीण विकास हेतु प्रयास करना होगा। एकात्म मानववाद के केन्द्र में मानव है, अतः यदि मानव का सम्पूर्ण विकास संभव हो गया तो वह सम्पूर्ण विश्व का विकास कर सकता है।

विश्व में व्याप्त विभिन्न समस्याएँ आतंकवाद, भुखमरी आदि का निराकरण मनुष्य के आत्मिक विकास द्वारा संभव है, जिसकी प्राप्ति के लिए हमारे धर्म ग्रन्थों में चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का मार्ग बताया गया है। धर्म पर आधारित आचरण द्वारा हम विश्व कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। आर्थिक क्षेत्र में यह दर्शन विकेन्द्रीकरण, स्वरोजगार एवं स्वदेशी का पक्षधर है।

**वर्तमान समय में रोजगार प्रदान करने वाले तीन क्षेत्र हैं**– 1. सार्वजनिक क्षेत्र, 2. निजी क्षेत्र, 3. असंगठित क्षेत्र।

उन्होने असंगठित क्षेत्र को स्वरोजगार क्षेत्र कहा जिस पर विशेष ध्यान आकृष्ट करने की आवश्यकता है क्यों कि अधिकतम जनसंख्या इसी क्षेत्र पर निर्भर है। उनका मानना था कि प्रतियोगिता कार्यावसर को सीमित करती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को अवसर मिलना चाहिए। इस प्रकार उन्होंने आर्थिक लोकतंत्र की बात की एकात्म मानववाद का उद्देश्य प्रत्येक मानव को गरिमा पूर्ण जीवन प्रदान करना है। यह दर्शन न केवल, भारत अपितु सभी विकासशील देशों में सदैव प्रासंगिक है। एकात्म मानववाद का उद्देश्य व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकता को संतुलित करते हुए प्रत्येक मानव के गरिमा पूर्ण जीवन को सुनिश्चित करना है। यह प्राकृतिक संसाधनों के संधारणीय उपयोग का समर्थन करता है, जिससे कि इन संसाधनों की पुनः पूर्ति की जा सके। आज वैश्विक स्तर पर विकास के कई मॉडल लाए गए लेकिन आशानुरूप परिणाम नहीं मिल सके। अतः दुनिया को एक ऐसे विकास माडल की तलाश है जो एकीकृत और संधारणीय हो। एकात्म मानववाद ऐसा ही एकदर्शन है जो अपनी प्रकृति में एकीकृत एवं संधारणीय है।

आज के भौतिकवादी युग में समाज के भटकाव की स्थिति को दूर करने में पं. दीनदयाल जी का यह दर्शन उपयोगी हो सकता है। उनका परिष्कृत विचार भारतीय समाज को स्वाभिमानी, एवं स्वावलम्बी बनाने तथा संगठित होने की प्रेरणा देता है। उनके दूरदर्शी दर्शन को अपनाने की आवश्यकता है जिससे समाज निरन्तर विकास पथ पर आत्म विश्वास के साथ बढ़ता रहे।

**» अम्बरीष त्रिपाठी**
(1994 बैच)
शिक्षक

# विद्यार्थी जीवन के संस्मरण

वर्ष 1977–78 में पं. दीनदयाल विद्यालय में कक्षा षष्ठ में प्रवेश लिया। उस समय की प्रवेश परीक्षा का स्मरण हो रहा है। कक्षा षष्ठ की दोनों कक्षाओं में अधिकतम 80 छात्रों के प्रवेश के लिए लगभग 1000 से अधिक छात्र परीक्षा देते थे। प्रवेश हेतु सिफारिश प्रदेश व केंद्र सरकार के मंत्रियों, राज नेताओं तथा प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा की जाती थी, परंतु प्रवेश परीक्षा के आधार पर ही प्रवेश होते थे। पंचम तक सरस्वती शिशु मंदिर खलासी लाइन का विद्यार्थी होने के कारण प्रत्यक्ष रूप से प्रवेश परीक्षा में लाभ मिला क्योंकि शिशु मंदिर के विद्यार्थियों का प्रवेश समान शिक्षा व संस्कार के फलस्वरुप सरलता से हो जाता था। मैं अपने आदरणीय ताऊ जी श्रद्धेय स्वर्गीय श्री रमेश चंद्र अवस्थी (कार्यालय अधीक्षक) के साथ साइकिल से विद्यालय जाता था। संयुक्त परिवार होने के कारण बड़े भाइयों द्वारा उनको 'पापा' के संबोधन के कारण हम सब भी उन्हें पापा ही बुलाते थे। कक्षा सप्तम तक उनके साथ आया, कक्षा अष्टम में मुझे नई साइकिल मिली तब भी मैं अपनी साइकिल से उनके साथ ही विद्यालय आता था। ताऊ जी के विद्यालय में होने के कारण सभी आचार्यों का स्नेहिल आशीर्वाद विशेष रूप से प्राप्त होता था। विद्यालय के वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं में 100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर दौड़ में कई पुरस्कार (मेडल) प्राप्त हुए। एक बात विशेष रूप से ध्यान में आती है कि विद्यालय में आए दिन शरीर में चोट लग जाती थी तब आदरणीय सुभाष आचार्य जी द्वारा ''राणा सांगा'' कहकर संबोधित किया जाता था। स्मृतियों में और भी बहुत कुछ है जैसे गणित विषय में ध्यान भटकने पर आदरणीय दीपक आचार्य जी का विद्यार्थियों के साथ दंड द्वारा भी सख्ती करना जिसका परिणाम यह हुआ कि गणित विषय में मुझे विशेष योग्यता प्राप्त हुई। भूगोल विषय के श्रद्धेय आचार्य रामनिवास जी द्वारा कक्षा में आते ही अखंड भारत का नक्शा बनाना, कक्षा में कठोर रहना तथा कक्षा के बाद स्नेह के साथ मिलना। क्रीड़ा व शारीरिक शिक्षा के आदरणीय सुभाष आचार्य जी द्वारा खेलों का स्वास्थ्य पर पड़ने वाले अच्छे प्रभाव को बताते हुए जागरूक करना।

कक्षा नवम में विज्ञान विषय कठिन लगने के कारण वाणिज्य विषय के अध्ययन हेतु बी.एन.एस.डी. इंटर कॉलेज, चुन्नीगंज में प्रवेश लिया परंतु विद्यालय के सहपाठियों से मिलना जुलना लगातार बना रहा। हाई स्कूल बोर्ड की परीक्षा का सेंटर रामकृष्ण मिशन स्कूल गया। वे क्षण अत्यंत आनंददायक रहे क्योंकि परीक्षा के समय अपने पूर्व विद्यालय के सहपाठियों को इस केंद्र में पाया चूँकि विद्यालय का सेंटर भी रामकृष्ण मिशन आया था। चार वर्षों के बी.एन.एस.डी. इंटर कॉलेज के और पं. दीनदयाल विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में बहुत बड़ा अंतर अनुभव किया।

मैं अपने को अत्यंत सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे अत्यंत उत्कृष्ट विद्यालय में समर्पित और विद्वान आचार्यों द्वारा न केवल संस्कार युक्त शिक्षा प्राप्त हुई बल्कि जीवन में समय–समय पर मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ। विद्यालय के संस्कारों की अमिट छाप जीवन में प्रदर्शित होती है आज सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्र में मुझे जो कुछ भी सम्मान तथा उपलब्धि प्राप्त हुई है वह पं. दीनदयाल विद्यालय में प्राप्त शिक्षा एवं संस्कार का ही प्रतिफलन है।

**» प्रो. मनोज अवस्थी**
(बैच 1984)
अध्यक्ष वाणिज्य संकाय
वी.एस.एस.डी. कॉलेज, कानपुर

JIOLITE
The Heart Of The Healthy Family
खाने का तेल
100% शुद्ध
स्वाद और सेहत से भरपूर
24/40 जैन विहार बिरहाना रोड
कानपुर 208001
वितरक जानकारी के लिए:
+9194151 28601
www.Jiolite.com

Swaad ka Jadu,
Khane ki Jaan,
JIOLITE Oil ki
yahi hai pehchaan
JIOLITE
₹150
₹119
Manufacturer of all kind of PREMIUM QUALITY EDIBLE OILS
For Distributor Enquiry:
+9194151 28601
24/40 jain Vihar Birhana road kanpur 208001
www.Vaibhavedibles.com

खगड़िया सेवा शिविर
में आप सभी काँवरियों का
हार्दिक अभिनंदन है
JIOLITE
The Heart Of The Healthy Family
Kachi Ghani Mustard Oil
सेहतमंद जीवन
के लिए
स्वादिष्ट विकल्प
JIOLITE
The Heart Of The Healthy Family
Refined Soyabean Oil
VAIBHAV
24/40 जैन विहार बिरहाना रोड
कानपुर 208001
Customer Care : +9194151 28601
E-mail : vaibhavediblesp@gmail.com
Website : www.jiolite.com

## आग बुझाने के चार तरीके
## Fire Tetrahedron

**1 COOLING EFFECT**
(ठंडक प्रदान करना)

मुख्य उपयोगी यंत्र
- WATER TYPE
- FOAM TYPE
- WATER MIST

Removal of Heat

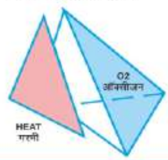


Removal of ऑक्सीजन

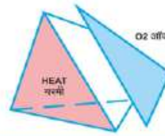


**2 SMOTHERING EFFECT**
(ईंधन को ढक देना)

मुख्य उपयोगी यंत्र
- Co2
- Clean Agents

**3 STARVATION EFFECT**
(ईंधन की तीव्रता में कमी करना)

मुख्य उपयोगी यंत्र
- WATER TYPE
- WATER MIST
- FOAM
- MAP

Removal of Fuel

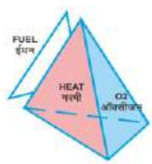


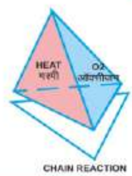


**4 BREAKING CHAIN REACTION**
(रासायनिक क्रिया में बाधा पहुँचाना)

मुख्य उपयोगी यंत्र
- DCPs
- MAP

सम्पर्क सूत्र : ULTRA SAFE TECHNOLOGIES, 7705062350
"Deals in Fire Extinguishers and It's reffling / maintenance"

**Pradeep Dixit**
**Batch 1988**

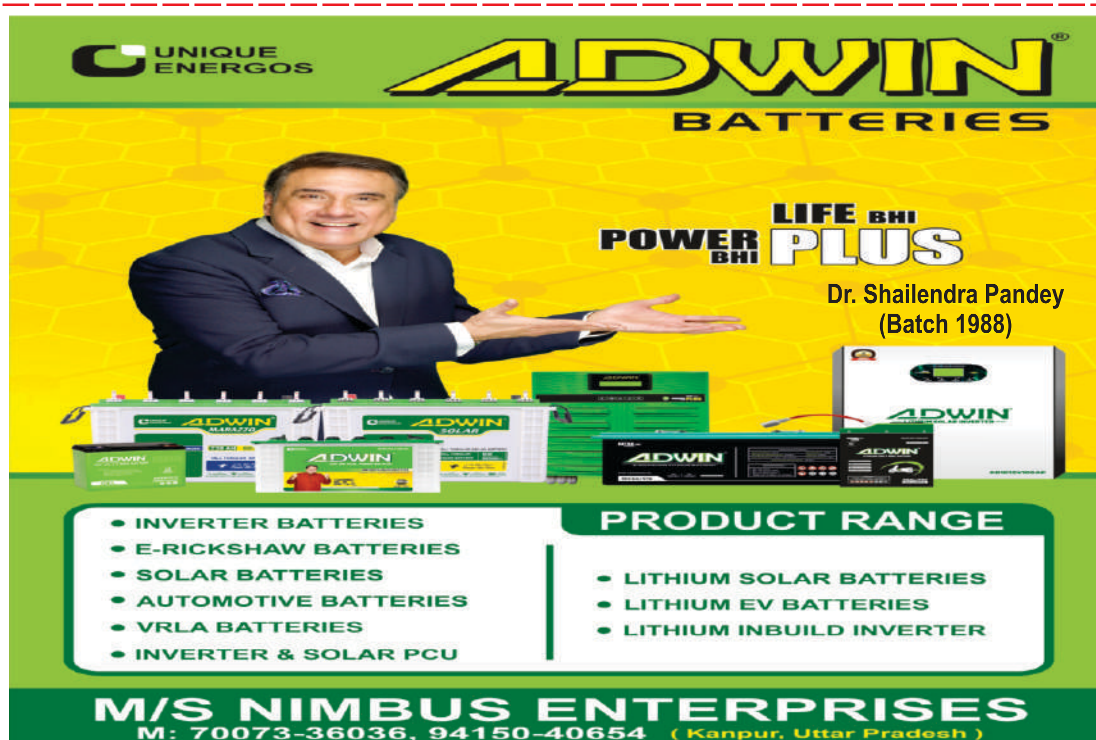

# 'अन्धायुग' की अंधी उपज – अश्वत्थामा

प्रतिहिंसा सच व गलत का भेद नहीं करती है। उसमें केवल नुकसान का ही भाव रहता है, प्रतिहिंसा दूरदृष्टि को छीन लेती है। भविष्य का शुभ प्रतिहिंसा से देखा नहीं जाता है। अश्वत्थामा ऐसी ही प्रतिहिंसा का प्रतीक है। कलयुग में एक–दूसरे से आगे बढ़ने की लालसा में लोगों की महत्वाकांक्षा में इजाफा हुआ है। अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति में व्यक्ति एक–दूसरे को नष्ट कर रहा है। एक–दूसरे के अस्तित्व को नष्ट कर रहा है या एक–दूसरे की राह का रोड़ा बनकर खड़ा है। इस मारकाट की प्रतिस्पर्धा में प्रतिहिंसा को फलीभूत होने का अवसर मिल रहा है। कलयुग में लगभग प्रत्येक व्यक्ति के भीतर कहीं न कहीं छिपकर अश्वत्थामा बैठा हुआ है।

अश्वत्थामा गुरु द्रोण का पुत्र जो गुरु द्रोण की असहज, अधार्मिक मृत्यु से शोक विदग्ध है। अश्वत्थामा अपने पिता की मृत्यु को वध मानता है, जिसके कारण वह हत्या की मनोग्रन्थि का शिकार हो गया है। इस मनोग्रन्थि का कारण वह युधिष्ठिर को मानता है। अश्वत्थामा की इस मनोग्रन्थि की जड़ में युधिष्ठिर का अर्धसत्य ''नर या कुंजर'' को मानता है। उसके पिता को धर्मराज पर अन्धविश्वास था कि विश्व में युधिष्ठिर ही एक ऐसा प्राणी है जो सत्य ही बोलेगा, यह विश्वास गुरु द्रोण को ही नहीं बल्कि समस्त संसार को था। यहाँ तक कि स्वयं अश्वत्थामा को भी था। ''उनको थी अटल आस्था, युधिष्ठिर की वाणी में।'' किन्तु अश्वत्थामा का मानना है कि –

**''अर्धसत्य से ही, युधिष्ठिर ने उनका वध कर डाला,**
**उस दिन से, मेरे अंदर भी, जो शुभ था, कोमलतम था।**
**उसकी भ्रूणहत्या, युधिष्ठिर के अर्धसत्य ने कर दी।।''**

अश्वत्थामा का मानना है कि युधिष्ठिर ने मेरे अन्दर प्रतिहिंसा की ज्वाला को भड़काया है ऐसा विश्वासघात उनको नहीं करना चाहिए था। उसका मानना है कि मेरी मनोग्रन्थि का कारण युधिष्ठिर है, वह उद्घोष करता है कि –

**''धर्मराज होकर वे बोले नर या कुंजर।**
**मानव को पशु से, उन्होंने पृथक नहीं किया।**
**उस दिन से मैं हूँ, पशु मात्र, अन्ध बर्बर पशु।।''**

अतिशय मनोवेगों के परिणाम स्वरूप अश्वत्थामा विक्षिप्त सा हो गया है। उसको यह बर्दाश्त नहीं हो रहा है कि युधिष्ठिर ने मानव को पशु से बिना अलग किये हुए ही मेरे पिता का षडयंत्रों द्वारा वध कर डाला। यदि पशु मानव से अलग नहीं तो अब मेरे मानवीय शरीर में पशुत्व का उदय होगा और ऐसा बर्बर हिंसक, क्रूर, अंध–पशु, जिसकी प्रतिहिंसा अत्यन्त भयानक होगी। अब मेरे जीवन का उद्देश्य केवल वध ही होगा। मैं अपने भीतर बैठे पशुत्व को पालूँगा। अश्वत्थामा कामना करता है कि –

**''मेरी इस पसली के नीचे, दो पंजे उग आयें,**
**मेरी ये पुतलियाँ, बिन दाँतों के चीथ खायें।**
**पायें जिसे, वध, केवल वध, केवल वध।।''**

बार–बार अश्वत्थामा बर्बर, हिंसक एवं अन्ध–पशु की कल्पना इसलिए करता है कि जिससे वह शुभ–अशुभ, सत्य–असत्य की पहचान न कर सके, न ही अपने–पराये की पहचान कर सके। वैसे भी मनुष्य जब प्रतिहिंसा की अग्नि में जलता है तो उसे अपने–पराये, शुभ–अशुभ आदि का भेद नहीं रहता है। उसका उद्देश्य तो केवल प्रतिहिंसा होती है।

अश्वत्थामा चिरंजीवी है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य में अश्वत्थामा किसी न किसी रूप में जिन्दा है और अश्वत्थामा स्वयं यह स्वीकार करता है कि –

**''मातुल मैं योद्धा नहीं हूँ, बर्बर पशु हूँ।**
**यह तटस्थ शब्द, है मेरे लिए अर्थहीन।**
**सुन लो यह घोषणा, इस अंधे बर्बर पशु की।**
**पक्ष में नही है जो मेरे, वह शत्रु है।।**

प्रतिहिंसा से प्रेरित व्यक्ति के लिए एकांगी पक्षधर्मिता ही प्रतिहिंसा की माँग है। प्रतिहिंसा सोचने विचारने की क्षमता को नष्ट कर देती है। प्रतिहिंसा भविष्य को नष्ट कर देती है। अश्वत्थामा का यह कथन कि –

**''छोड़ूँगां नहीं उत्तरा को भी, जिसमें गर्भित है।**
**अभिमन्यु–पुत्र, पाण्डव कुल का भविष्य।।''**

अश्वत्थामा अस्वाभाविक योद्धा बन चुका है, वह केवल हिंसा, हत्या, वध के अतिरिक्त कुछ भी नहीं सोचता है। उसने स्वयं स्वीकार किया है कि –

**''वध मेरे लिए नहीं नीति है,**
**वह है अब मनोग्रन्थि।''**

अत्यधिक क्रोध में व्यक्ति का विवेक खत्म हो जाता है। अतिशय क्रोधाग्नि के भावेग में अक्सर व्यक्ति गलत–गलत निर्णय कर बैठता है, जिसका प्रतीक यह अश्वत्थामा है और नीति–अनीति की व्याख्या से परे होकर वह कह उठता है कि –

**''वे भी निश्चय मारे जायेंगे अधर्म से।**
**मैं अश्वत्थामा उन नीचों को मारूँगा।।''**

अश्वत्थामा यह सिद्ध करता है कि इस कुरुक्षेत्र में अधर्म की धर्म, अधर्म ही इस युद्ध की नीति है, अधर्म का ही साम्राज्य चहुँ ओर बिखरा हुआ है। ऐसा कोई बड़ा योद्धा नहीं है जो धर्म से मारा गया है। सभी कृष्ण व पाण्डव के षडयन्त्रों से मारे गये हैं। मर्यादा व नीतियों की खिल्ली तो पाण्डवों ने उड़ाई है और वह तर्क देते हुए कहता है कि –

**''मैं इस प्रतिहिंसा में, बिल्कुल अकेला हूँ,**
**तुमको मारा धृष्टद्युम्न ने, अधर्म से,**
**भीम ने दुर्योधन को मारा अधर्म से,**
**दुनिया की सारी मर्यादा बुद्धि,**
**केवल इस नियत अनाथ अश्वत्थामा पर ही, लादी जाती है।**

**पाण्डवों की मर्यादा, मैंने आज देखी द्वन्द युद्ध में,**
**कैसे अधर्म युक्त वार, दुर्योधन को नीचे गिरा दिया भीम ने,**
**टूटी जाँघों, टूटी कोहनी, टूटी गर्दन वाले,**
**दुर्योधन के माथे पर रखकर पाँव,**
**पूरा बोझ डाले हुए भीम ने,**
**बाँहें फैलाकर पशुवत् घोर नाद किया।''**

अश्वत्थामा जैसे पशुवत व्यवहार करने वाले लोग आज धरा से खत्म हो गये हैं, ऐसा नही है। अश्वत्थामा के सन्दर्भ में यह मान्यता है कि वह आज भी जीवित है। वह पीड़ा भोग रहा है इस धरती पर विचरण कर रहा है। आज जब हम समाज पर नजर डालते हैं, तो कई पशुवत अश्वत्थामा चारों ओर दिखायी दे रहे हैं। कहीं हत्या में संलिप्त, कहीं बलात्कार में शामिल, कहीं कमजोर व मजलूमों की जमीनों को हड़पते कई अश्वत्थामा दिखाई पड़ रहे हैं। समाज में ऐसे बर्बर हिंसक लोग घूम रहे हैं। इनको पालने–पोसने वाले राजनेताओं व पूँजीपतियों की एक बड़ी संख्या में मौजूदगी सर्वत्र दिखाई पड़ रही है। एक आम आदमी जो दो जून की सुकून की रोटी की चाह रखता है। अपनी जिंदगी में सुरक्षा की चाह रखता हो, वह इस कलयुगी समाज में संभव नहीं दिखता है। हर इंसान दूसरे की सम्पत्ति को छीनने की जुगत में लगा हुआ है। हर इंसान अपने परिवार की सुरक्षा को लेकर सहज नहीं है। ऐसे भययुक्त समाज में कई पशुवत अश्वत्थामा विचरण कर रहे हैं। जिन्होने नीति, मर्यादा को तिलांजलि दे रखी है। ऐसे समाज में शासन सत्ता की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वह इन अश्वत्थामाओं को समाप्त करे और समाज में सुख–शान्ति की स्थापना करे। अन्धा युग के अश्वत्थामा की पीड़ा यह है कि युधिष्ठिर के अर्ध सत्य ने उसे हिंसक, पशुवत व्यवहार करने के लिए मजबूर किया। उसकी प्रतिहिंसा को जाग्रत किया गया है लेकिन यह सच है कि हिंसा से कभी किसी को शान्ति नहीं मिलती है, न ही किसी समाज का न ही किसी देश का कोई विकास होता है। देश व समाज सदैव शान्ति के वातावरण में ही विकास करता है। इस मूल धारणा को प्रत्येक व्यक्ति को समझना चाहिए। शान्ति ही समय की माँग है। देश, समाज एवं स्वयं को विकसित करने के लिए सिर्फ शान्ति की नितान्त आवश्यकता है।

**» प्रो0 पंकज सिंह**
(बैच 1989)
(प्राचार्य) केन ग्रेअर्स नेहरू पी.जी. कॉलेज

**''हमने खेती और स्वदेशी उद्योगों की ओर दुर्लक्ष्य किया तथा अपने लिए अहितकर एवं अप्रतिष्ठाकारक शर्तों पर भी विदेशी गठबन्धनों का स्वागत किया। विदेशी निहित स्वार्थ आज इतने प्रबल हैं कि वे देश के आर्थिक कार्यक्रमों को ही नहीं अपितु आर्थिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक क्षेत्र की नीतियों को भी प्रभावित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यदि हमें स्वतंत्रता बचानी है तो आर्थिक क्षेत्र में स्वावलंबी बनना होगा।''**

**(1968 में भारतीय जनसंघ के कालीकट अधिवेशन में पण्डित जी के अध्यक्षीय भाषण का अंश, जो सदैव प्रेरक रहेगा ।)**

# बाकी लोग, तुम्हारे भाई नहीं हैं क्या?

**(युगभारती के संगठन सचिव श्री मनीष कृष्णा जी, बैच 1988 ने प्रस्तुत संस्मरण के द्वारा जीवन की उस घटना का वर्णन किया है जिसने आज पूरे विश्व में फैले दीनदयाल विद्यालय, कानपुर के पूर्व छात्रों को एक सूत्र में बांधने हेतु प्रेरित किया।)**

शायद वर्ष 2002 की बात है, अपने देश में सूचना क्रांति का काफी प्रभाव पड़ चुका था। मोबाइल फोन का प्रयोग अपनी गति पकड़ रहा था और पं. दीनदयाल विद्यालय, कानपुर से बारहवीं उत्तीर्ण करने के बाद, उच्च शिक्षा ग्रहण कर लगभग 7 वर्ष मैं व्यवसायिक जीवन में भी पूर्ण कर चुका था।

होली, दीपावली जैसे त्यौहारों में अपने नगर कानपुर से बाहर व्यवसाय/कार्य करने वाले सहपाठियों के कानपुर आने पर उनसे मिलने की योजना बनती थी और उनके साथ का आनंद अलग ही होता था। कहां तो विद्यालय समय में कक्षा के दो–चार मित्रों से ही घनिष्ठता थी और कहां, अब जो भी कहीं रास्ते में मिल जाते तो उनसे भी लगाव महसूस होने लगता था। क्योंकि स्मृतियों में तो लगभग सभी 1988 बैच के साथियों के चेहरे ताजा ही थे। विद्यालय के सहपाठियों का उनके सार्वजनिक जीवन में, उनके कार्यक्षेत्र में बहुत विस्तार हो चुका था लेकिन आज भी मुलाकात में वही आत्मीयता, वही लगाव। सच यह कि कार्यक्षेत्र के साथ–साथ यह विस्तार उनके अपने व्यक्तित्व में भी आ चुका था। सहपाठियों के इस विस्तार के आनंद को कई गुना किया करते थे बैच के साथी संतोष मिश्रा, जिन्होंने पूरे देश में आईएएस की परीक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त किया था, उनकी आईएएस पत्नी श्रीमती सोनल मिश्रा जी साथ ही भईया रंजन खन्ना, भईया प्रवीण पाण्डेय, भईया आशीष यादव जी भी। ये साथी आईएसएएस जैसी प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण कर उच्च पद पाने के बाद भी हम सहपाठियों से जिस सहज भाव से मिलते और अपने इस होली व दीपावली के आनंद व उल्लास को विस्तार देते थे, वो अवर्णनीय है।

एक दिन मैं अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य जी श्री ओमशंकर त्रिपाठी जी से सहज ही कह उठा 'आचार्य जी! अपने बैच–1988 के 15–20 साथी जोड़ लिये हैं हमने और हम लोग प्रायः होली, दीपावली में मिलते भी हैं।' एक सहज अपेक्षा थी कि आचार्य जी उन 15–20 साथियों के बारे में पूछेंगे, उनके पते, ठिकाने पूछेंगें, उनको संपर्क कैसे किया, कैसे उनको ढूंढा, उनके संपर्क सूत्र क्या हैं? आदि आदि पूछेंगे और संभवतः मेरे इस प्रयास की सराहना भी करेंगे। मन में ये विचार उमड़ ही रहे थे कि आचार्य जी ने अत्यंत सहज किन्तु अति गंभीर शब्दों में मेरे सामने एक अकल्पनीय और आकाश जैसा दिखने वाला विशाल अप्रत्याशित प्रश्न किया– विद्यालय के बाकी लोग, तुम्हारे भाई नहीं हैं क्या? बहुत असमंजस की स्थिति थी मेरे सामने कि आप सोच कुछ अलग रहें हों और आप को आपकी कल्पना से परे कोई अन्य ही प्रश्न दे दिया जाये।

परंतु मैं भी स्वयं को लेकर स्पष्ट था। मेरे फौजदारी वकालत के व्यवसाय ने मुझे सिखा दिया था, तर्कपूर्ण उत्तर देना। मैंनें झट कह दिया कि 'आचार्य जी! कक्षा में 2–4 घनिष्ठ मित्र थे उनके अलावा अपने बैच के लोगों के चेहरे व नाम से परिचित हूँ और कुछ अन्य बैच के चमकते सितारों से परिचित हूँ, किन्तु न तो मैं विद्यालय का शीर्ष मेधावी छात्र रहा हूँ और न कोई मेरी विशेष पहचान या प्रतिभा रही है जो इतने सारे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों वाले विद्यालय के अन्यान्य 26 बैच के विद्यार्थियों से जुड़ पाऊं।'

लेकिन सत्य यह है कि आचार्य जी का चिंतन और मनन अत्यंत गहरा, दूरदर्शी और सुस्पष्ट था और मैं जीवन में पहली बार किसी गुरूमंत्र का ज्ञान प्राप्त करने जा रहा था। आचार्य जी ने सहज भाव से कहा– 'आत्मीयता।'

मुझे कुछ भी समझ न आया कि मेरे इतने स्पष्ट प्रश्न कि कैसे मैं अपने बैच से भिन्न साथियों से जुड़ पाऊंगा का उत्तर एक शब्द में मिल जाएगा, आत्मीयता यह कैसे हो सकता है ?

आचार्य जी नें एक सुंदर उदाहरण से स्पष्ट किया कि 'एक अनपढ़ मां, जिसका एक पुत्र किसान, एक व्यापारी, एक अधिकारी और एक डॉक्टर बन जाता है, किन्तु क्या वह अपने पुत्रों से जुड़ी नहीं होती है? जुड़ी होती है, ना? उस अनपढ़ महिला की सबसे बात होती है, सब से लगाव होता है ना? वह किस तत्व की कारण होता है। वह तत्व आत्मीयता है।'

लेकिन मेरा भी जड़त्व, ऐसे कैसे हार मान लेता? मैंनें अगला प्रश्न किया कि 'मात्र आत्मीयता से किसी भी अनजान व्यक्ति को मैं कैसे जोड़ सकता हूँ?'

आचार्य जी भी पूरे भाव में थे, बोले 'माध्यमिक शिक्षा वर्ग के विद्यार्थी की भावनाएं चरम पर होती हैं, यदि निश्छल आत्मीयता का प्रयास होगा तो अवश्य ही सब विद्यार्थी, भले ही अलग–अलग बैच के हों, वे लोग जुड़ेंगे। बहुत प्रयास करनें होंगे स्वयं को निरंतर परिष्कृत करते रहना होगा, तुम्हारे सब भाई जुड़ेंगे।'

इस प्रकार से आचार्य श्री ओमशंकर जी और आचार्य श्री दीपक राजे जी तथा अन्य आचार्य गण जो अपने स्तर पर दशकों से हम विद्यार्थियों को खोजते और एक दूसरे से जोड़ते आए हैं, के मार्गदर्शन तथा विद्यालय के अनेक अग्रजों और अनुजों के निरंतर सहयोग से प्रारंभ हुई यह श्योग की यात्राश अपनी कक्षा के 20 विद्यार्थियों से बढ़कर आज 4 से 5 हजार पूर्व छात्रों के साथ का 22 वर्षों का आनंदपूर्ण उत्सव मना चुकी है। जिसके अंतर्गत हम होली, दीपावली, वार्षिक अधिवेशन, परिवार मिलन, प्रत्येक बैच का रजत व स्वर्ण जयंती कार्यकम, किसी भी नगरध्देश के प्रवास पर उस क्षेत्र के साथियों से मिलन का आनन्द पूरे मनोयोग से उठाते हैं।

**» मनीष कृष्णा**
(1988 बैच)
एडवोकेट, कानपुर

**"मर्यादाओं के अन्तर्गत होने वाली क्रिया नाम ही संयम है। भूखा मरना संयम नहीं, अपितु शरीर की आवश्यकता के अनुसार गुण और मात्रा में भोजन करना संयम है। बिल्कुल न बोलना, यहाँ तक कि अत्याचारी के विरुद्ध आवाज भी न लगाना अथवा किसी को सत्परामर्श भी न देना संयम नहीं।"**
**– पं० दीनदयाल उपाध्याय**

# उत्कृष्ट शिक्षण के सूत्र

शिक्षण एक विशिष्ट और जिम्मेदारियों से भरा हुआ कार्य है.एक अच्छा शिक्षक कैसा हो? कक्षा का वातावरण कैसा हो? – और प्रभावी शिक्षण किस प्रकार किया जा सकता है? – इस पर कुछ संक्षिप्त विमर्श यहां पर मैं करूंगा.

**1. शिक्षक की भाषा**– भाषा व्यक्ति का निर्माण करती है.एक शिक्षक के लिए भाषा का महत्त्व बहुत अधिक होता है. यहां भाषा से हमारा आशय हिंदी अंग्रेजी अथवा किसी क्षेत्रीय भाषा से नहीं है बल्कि इस बात से है कि शिक्षक जो बोलता है वह भाषा बहुत ही परिष्कृत, प्रांजल, मधुर और स्नेह पूर्ण होनी चाहिए. इस प्रकार की भाषा शिक्षक को तब प्राप्त होगी जब वह इन गुणों को अपने में धारण कर लेगा. विद्यार्थी सबसे ज्यादा अपने शिक्षकों से सीखते हैं.जैसी भाषा में शिक्षक बातचीत करते हैं वह विद्यार्थियों के अंतर्मन पर असर करती है.

**2. शिक्षक का व्यवहार** – शिक्षक का विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार आत्मीयतापूर्ण होना चाहिए. अलग–अलग वर्गों से आने वाले भिन्न–भिन्न विद्यार्थियों के अंतर्मन में अनेक प्रकार की ग्रंथियां हो सकती हैं. एक अच्छे शिक्षक को इस प्रकार का होना चाहिए कि वह इन कोमल मन की ग्रंथियों को खोल सके. एक शिक्षक को अपने भीतर इस तरह के सद्‌गुण प्रकट करने चाहिए, ताकि विद्यार्थी सहज रूप से उसकी ओर आकर्षित हों तथा उस पर पूरा विश्वास कर सकें.

**3. आत्मीयता और अनुशासन** – शिक्षक की विद्यार्थियों के प्रति आत्मीयता भी होनी चाहिए और अनुशासन भी होना चाहिए.किशोरावस्था में जबकि यह विद्यार्थी लगातार विकास को प्राप्त हो रहे हैं। उनका शरीर, मन और बुद्धि लगातार विकसित हो रहे हैं, ऐसी स्थिति में उनके साथ बहुत सूझबूझ का व्यवहार करना चाहिए.

**4. कक्षा का वातावरण**– शिक्षक को सबसे पहले कक्षा के वातावरण पर ध्यान देना चाहिए.कक्षा का वातावरण ऐसा हो कि वह अधिगम के अनुकूल हो.विद्यार्थी सीखने की ओर आकर्षित हों. जो शिक्षक कक्षा के वातावरण पर ध्यान दिए बिना अपना अध्यापन शुरू कर देते हैं, उनका संप्रेषण सफल नहीं हो पाता है.

**5. ध्यानाकर्षण**– कक्षा में शिक्षक का प्रवेश करना एक विशेष घटना की तरह होना चाहिए. कक्षा में शिक्षक पहुंचते ही विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर ले, यह उसके भीतर कला होनी चाहिए.

**6. मौन और अशाब्दिक अन्तःक्रिया**– कक्षा में कई बार मौन और अशाब्दिक अंतः क्रियाओं का बहुत अधिक महत्त्व हो जाता है. शिक्षक कई बार मौन होकर बहुत महत्वपूर्ण संदेश देता है, कुछ बड़ी चीज सिखा देता है.

**7. विषय का ज्ञान**– शिक्षक को अपने विषय का बहुत अच्छा ज्ञान होना चाहिए.उसे लगातार पढ़ते रहना चाहिए तथा अभ्यास करते रहना चाहिए। अगर शिक्षक पढ़ना बंद कर देगा तो उसके अध्यापन में कोई प्रभाव नहीं रह जाएगा. रवीन्द्र नाथ टैगोर इस बात को बहुत महत्त्व देते थे।

**8. अच्छा व्याख्यान**– शिक्षक को संबंधित शीर्षक का बहुत ही आकर्षक और प्रभावपूर्ण व्याख्यान देना चाहिए यह आकर्षण और प्रभाव उसके गंभीर अध्ययन से ही पैदा होगा।

**9. अध्यापन शैली**– शिक्षक के अध्यापन की शैली ऐसी होनी चाहिए कि उसके विषय का संप्रेषण सभी विद्यार्थियों तक भली प्रकार से हो सके.कक्षा में शिक्षक की आवाज, उसका उच्चारण इतना स्पष्ट होना चाहिए कि किसी भी विद्यार्थी को समझने में समस्या न हो.शिक्षक न तो बहुत जल्दी–जल्दी बोलें और न ही बहुत धीमी आवाज में बोलें। आवाज इतनी तीव्र भी न हो कि वह कर्कश होने की सीमा तक चली जाए।

**10 दृष्टान्त देना**– पाठ्यवस्तु के सफल शिक्षण का एक महत्वपूर्ण कारक दृष्टांत देना होता है। चाहे शिक्षक साहित्य का हो अथवा विज्ञान का, किसी भी विषय की व्याख्या करते हुए उसको समझाने के लिए दृष्टांतों का बहुत महत्त्व होता है। दृष्टांत से आशय हमारा यहां उदाहरण से है। लेकिन यह उदाहरण ऐसे होने चाहिए जो पढ़ाई गई विषयवस्तु से मेल खाते हों।

**11. प्रश्नों की प्रवाहशीलता** – कक्षा में शिक्षक को प्रश्नों की प्रभावशीलता लगातार बनाए रखनी चाहिए. आशय यह है कि जब शिक्षक कोई शीर्षक पढ़ाते हैं, तो उसमें विद्यार्थियों की लगातार जिज्ञासाएं होनी चाहिए तथा उनके प्रश्न आने चाहिए। यह प्रश्न उत्तर की शैली काफी लाभप्रद होती है।

**12. खोजपूर्ण प्रश्न** – कक्षा में कुछ खोजपूर्ण प्रश्न पूछे जाने चाहिए। इससे विद्यार्थियों की शोध अभिरुचि का विकास होता है.उदाहरण के तौर पर जब मैं कक्षा में पढ़ाने जाता हूं तो, विद्यार्थियों के नाम पूछता हूं। फिर उनके नाम का अर्थ पूछता हूं. कई बार कुछ नाम ऐसे होते हैं जिनके अर्थ नहीं पता होते हैं, तो उनके लिए विद्यार्थियों को मैं पुस्तकालय भेजता हूं कि वे वहां पर जाएं और शब्दकोश देखें.शब्दकोश देखकर उस शब्द का अर्थ लिखकर लाएं. कई बार ऐसे नाम भी होते हैं जो निरर्थक होते हैं, यानी उनका कोई अर्थ नहीं होता है.यह बात भी बतानी होती है कि अमुक शब्द का कोई अर्थ ही नहीं है या फिर तुम्हारे नाम का यह अर्थ है। फिर उस अर्थ के संदर्भ और इतिहास पर चर्चा हो सकती है। यह बात तो भाषा और साहित्य के शिक्षकों के लिए है. विज्ञान के शिक्षक आसपास होने वाली भौतिक घटनाओं की खोज पर चर्चा कर सकते हैं। विज्ञान और साहित्य का सभी जगह व्याप है।

**13. प्रोत्साहन और प्रशंसा**– एक सफल शिक्षक वह है जो विद्यार्थियों को लगातार प्रोत्साहन देता रहे और उनके छोटे से छोटे कार्य पर, उनकी उपलब्धि पर उनकी भरपूर प्रशंसा करता रहे.किसी भी विद्यार्थी की कक्षा के सामने की गई प्रशंसा न सिर्फ उसके हौंसले को बढ़ाती है बल्कि अन्य विद्यार्थियों में भी एक सकारात्मक प्रतिस्पर्धात्मक संदेश देती है।

» **डॉ. दुर्गेश वाजपेयी**
(बैच 1994)

**ध्येयसिद्धि के लिये उस पर अपनी श्रद्धा चाहिये। कोई भी व्यक्ति एक ही समय में सहस्त्रों उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकता। अपने सामने एक ही लक्ष्य रख कर उसकी प्राप्ति के लिये अपना सब कुछ न्यौछावर करना पड़ता है। श्रद्धा और विश्वास से अपने सामने रखा हुआ एकमात्र लक्ष्य प्राप्त करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहना सफलता की कुंजी है। एक बार विचारपूर्वक अपना लक्ष्य और उसकी पूर्ति के साधन निश्चित हो जाने पर उस पर अटल श्रद्धा रखनी चाहिये । अपने लक्ष्य पर श्रद्धा और हृदय में लक्ष्य के प्रति अव्यभिचारी निष्ठा के बिना हम अपने लक्ष्य की प्राप्ति कदापि नहीं कर सकेंगे।**

**(श्री गुरूजी : समग्र दर्शन)**

# आपदाओं के दौरान सुरक्षित और सशक्त समाज युग-भारती का मिशन

**(युग–भारती शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन और सुरक्षा जैसे चार आयामों पर कार्य करती है। सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति हेतु आपदा–प्रबंधन प्रशिक्षण की आवश्यकता पर बल दिया है श्री शैलेन्द्र दीक्षित जी (2000 बैच) ने। प्रस्तुत लेख के माध्यम से उन्होंने प्राकृतिक आपदाओं और उनसे निपटने के उपायों की विस्तृत चर्चा की है।)**

**युग–भारती का उद्देश्य** – युग–भारती का उद्देश्य समाज के हर वर्ग को सशक्त और आत्म निर्भर बनाना है। इसके लिए संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य, और स्वावलम्बन के क्षेत्र में अनेक कार्यक्रम चला रहा है। आपदाओं के दौरान भी युग भारती की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जिससे समाज को बेहतर और सुरक्षित बनाया जा सके। युग–भारती प्राकृतिक और मानव– निर्मित आपदाओं के दौरान भी सक्रिय भूमिका निभाती है। संगठन का मानना है कि आपदाएँ जैसे कि भूकंप, बाढ़, आग, चक्रवात आदि समाज को बुरी तरह प्रभावित करते हैं और इस समय में सहायता और राहत कार्य बहुत महत्वपूर्ण होते हैं।

**आपदा–प्रबंधन प्रशिक्षण** – आपदा के सन्दर्भ में संस्था के सदस्य होने के नाते ऐसा लगता है कि आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण को प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का अंग बनाना चाहिए। भारत में NDRF जैसे संस्थान होने के बावजूद जागरूकता की कमी, राहत कार्यों को प्रभावित करती है। पीड़ित व्यक्ति यह भूल जाता है कि पुलिस और NDRF कर्मियों के परिवार भी उसी क्षेत्र में हैं और उन्हें भी आपदा का सामना करना पड़ता है। थोड़ी सी जागरूकता और अभ्यास से इस दृष्टिकोण को बदला जा सकता है। हमें खुद को बस थोड़ा तैयार करना है।

**आपातकाल परिस्थितियों के लिए तैयारी : एक मार्गदर्शिका**

**भूमिका –**

प्राकृतिक आपदाएँ और मानव निर्मित संकट किसी भी समय और कहीं भी हो सकते हैं। भारत की विविध भौगोलिक स्थिति के कारण, बाढ़, भूकंप, चक्रवात, सूखा और अन्य आपदाओं के प्रतिसंवेदनशीलता अधिक है। इस लेख का उद्देश्य आपको आपातकालीन परिस्थितियों के लिए तैयार करना और आपकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करना है।

**आपदाओं का डाटा –**

- **भूकंप :** भारत के कई क्षेत्र भूकंप–प्रवण, जैसे उत्तर–पूर्वी राज्य और हिमालयी क्षेत्र।
- **बाढ़ :** मानसून के दौरान भारत के कई हिस्से बाढ़ से प्रभावित होते हैं, विशेष कर बिहार, असम और उत्तर प्रदेश।
- **तूफान :** भारतीय तट रेखा पर चक्रवाती तूफान अक्सर आते हैं, विशेष कर पूर्वी तट पर।

- **सूखा :** महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्य सूखे से प्रभावित होते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 2002 | Drought in UP and other states | 300 million |
| 2000/01 | Drought in Gujarat and other states | 50 million |
| 2002 | Flood in Assam and other states | 42 million |
| 2004 | Flood in Dabhanga and other areas | 33 million |
| 2000 | Flood in Birbhum and other areas | 25 million |
| 2001 | Earthquake Gujarat | 20,005 |
| 2004 | Tsunami in Tamil Nadu, etc. | 16,389 |
| 2005 | Earthquake in Kashmir | 1,309 |
| 2003 | Heat wave in Andhra Pradesh | 1,210 |
| 2005 | Flood in Gujarat and other states | 1,200 |

**आँकड़े और तथ्य –**

1. भारत में, प्रतिवर्ष औसतन 32 मिलियन लोग प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होते हैं।
2. देश का लगभग 12% क्षेत्र बाढ़ प्रवण है, जो 40 मिलियन हेक्टेयर से अधिक है।
3. भारत की 68% कृषि योग्य भूमि सूखे की चपेट में है।
4. देश का लगभग 58.6% भूभाग मध्यम से उच्च भूकंपीय खतरे की श्रेणी में आता है।

**आपातकाल से बचने के प्रमुख उपाय –**

आपातकाल के दौरान सुरक्षित रहने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाए जा सकते हैं :

**आपातकाल किट तैयार करें –**

- बैटरी चालित टॉर्च और अतिरिक्त बैटरियाँ।
- प्राथमिक चिकित्सा किट और आवश्यक दवाएँ।
- आपातकालीन खाद्य सामग्री (ड्राई आइटम्स) और पीने का पानी।
- चाकू, मोमबत्तियाँ, और माचिसे।
- महत्वपूर्ण दस्तावेज (आधार कार्ड, राशनकार्ड, नकदी)
- वाटर प्यूरिफायर टैबलेट्स या क्लोरीन पाउडर।

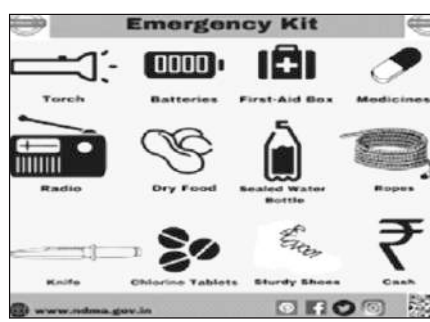


**आपात कालीन योजना बनाएं–**

- परिवार के सभी सदस्यों के साथ आपातकालीन योजना पर चर्चा करें।
- एक सुरक्षित स्थान निर्धारित करें जहाँ आप सभी मिल सकें।

- पड़ोसियों और दोस्तों से संपर्क बनाए रखें।

**आपातकालीन संपर्क जानकारी –**

- स्थानीय आपदा प्रबंधन कार्यालय का संपर्क नंबर सहेजें।
- स्थानीय अस्पताल, पुलिस स्टेशन और फायर स्टेशन के नंबर अपने पास रखें।

**सुरक्षित रहने के टिप्स –**

- **भूकंप के दौरान** : सुरक्षित स्थान पर चले जाएं, जैसे कि मेज के नीचे या दरवाजे के फ्रेम में।
- **बाढ़ के दौरान** : ऊँचाई वाले स्थान पर जाएं और बिजली के उपकरणों से दूर रहें।
- **तूफान के दौरान** : घर के अंदर रहें और खिड़कियाँ और दरवाजे बंद रखें।
- **सूखे के दौरान** : पानी का संरक्षण करें और इसका विवेकपूर्ण उपयोग करें। फसलों और पशुओं की देखभाल के लिए विशेष ध्यान दें।
- **आग के दौरान** : शांत रहें और तुरंत इमारत खाली कर दें। धुएँ से बचने के लिए नीचे झुककर चलें। कभी भी जलती हुई इमारत में वापस न जाएँ।
- **आतंकवादी हमले की स्थिति में** : सुरक्षित स्थान पर छिप जाएँ और शांत रहें। अपने मोबाइल फोन को साइलेंट मोड पर रखें। पुलिस या सुरक्षा बलों के निर्देशों का पालन करें।

**महत्वपूर्ण संपर्क विवरण –**

- राष्ट्रीय आपातकालीन नंबर : 112
- राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) हेल्पलाइन : 1078
- राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (SDMA) हेल्पलाइन : (आपके राज्य के अनुसार)
- स्थानीय पुलिस स्टेशन : (आपके क्षेत्र के अनुसार)
- नजदीकी अस्पताल : (आपके क्षेत्र के अनुसार)
- अग्निशमन सेवा : 101

**निष्कर्ष –**

आपातकालीन परिस्थितियों में सुरक्षित रहना एक सामूहिक जिम्मेदारी है। पूर्व तैयारी, सतर्कता और शांत रहने की क्षमता आपको किसी भी संकट का सामना करने में मदद कर सकती है। याद रखें, सूचना और तैयारी आपका सबसे बड़ा बचाव है। अपने परिवार और समुदाय के साथ इस जानकारी को साझा करें, और हमेशा स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों का पालन करें। सुरक्षित रहें और तैयार रहें!

अधिक जानकारी के लिए, कृपया NDMA की वेबसाइट, (https://ndma.gov.in/) देखें।

» **कप्तान शैलेन्द्र दीक्षित**
(बैच 2000)
चेन्नई

# Dr. Saraswat`s Pathology

**(FIRST NABL ACCREDITED LAB IN KANPUR)**

**7/145, Plot no. 7, Swaroop Nagar, Kanpur Nagar (Main Branch)**

**Director: Dr. Praveen Saraswat, M.B.B.S., M.D.(Path)**

Website : www.sraswatpathology.com

E.Mail : info@saraswatpathology.com

- A Centre for all the specialized tests with quality assurance.
- Glycosylated Hemoglobin (HbA1c) by D –10 variant systems.
- Bio-rad-HPLC Technology for the first time in Kanpur: very accurate results with high precision.
- Hematology by Sysmex XN-10 a five part differential fully automated hematology analyzer.
- Immunoassays by cobas e 411, tumour markers, CPK-MB (MASS) & Troponin –t (Quantitative) & Troponin I (Quantitative)
- Blood culture by Bact /Alert system for instant report of blood culture.
- Other Numerous special tests.

Dr. Manish Verma
(Batch 1991)

# ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

भारत अर्थ पर नहीं, अध्यात्म पर आधारित देश है। स्वतन्त्रता के बाद इस मूलभूत तथ्य की उपेक्षा की गयी। इसके परिणाम अब हमें स्पष्ट दिख रहे हैं, चाहे वह वैचारिक क्षेत्र हों, या सामाजिक, आर्थिक या नैतिक। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। इस वैचारिक परतंत्रता के वातावरण में शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन के सतही विचार एवं योजनायें मूलतः अर्थ-केन्द्रित होने के कारण एक संस्कार-विहीन फौज ही खड़ी कर सकती हैं, आत्म-बोध युक्त, सुसंस्कृत समाज नहीं।

दीनदयाल विद्यालय की स्थापना के पीछे मूल भाव यही है, उसकी अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से हो सकती है। हमारा लक्ष्य है - व्यक्ति-निर्माण। इसके लिये हमें 'विद्या' एवं 'अविद्या' दोनों पक्षों का सामंजस्य करना होगा। विद्या - जो व्यक्ति को आत्म साक्षात्कार की ओर प्रेरित करे, और अविद्या, जो उसके शरीर का भरण-पोषण कर सके। अविद्या की शिक्षा आज अधिकांश विद्यालय दे रहे हैं, और समाज भी यही चाहता है। इसलिये हमारा काम और भी कठिन है। विद्यालय से मेरा सम्पर्क रहने के कारण मुझे यह समझने में सहायता मिली, साथ ही मार्गदर्शन और प्रेरणा भी। इस लक्ष्य की प्राप्ति में अगर मैं अपना छोटा सा योगदान दे सका तो मैं इसे अपना सौभाग्य मानूँगा।

आज के बदलते परिवेश में आधुनिक तकनीकों की शिक्षा आवश्यक है, किन्तु उसका आधार आध्यात्मिक होना चाहिये, ऐसा मेरा मानना है। हमारी अधिकांश सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था कृषि पर आधारित है और सरल जीवन, ईश्वर में आस्था एवं गोसेवा इसके मूल आधार हैं। यदि हम तकनीक, चिकित्सा, एवं अन्य (अ) विद्याओं का प्रयोग इनका आधार लेकर करें तो वे प्रभावी होंगी। इसके लिये यह आवश्यक है कि विद्यालय के छात्र यहाँ से निकलने के बाद अपने-अपने क्षेत्रों का ज्ञान वापस नई पीढ़ी को दें और विद्यालय को समाज-निर्माण एवं विकास करने में सहयोगी एवं 'मुख्यालय' के रूप में स्थापित करें- ग्राम-विकास जिसका एक अभिन्न अंग हो। मेरा विद्यालय में कार्य करने का मुख्य उद्देश्य यही है।

मुझे आशा है कि विद्यालय-प्रबन्धन इन विचारों से सहमत होगा, एवं विश्वास है कि इससे सम्बन्धित उचित संसाधन जुटाने में सफल भी होगा। मेरी योजना मई माह तक भारत लौटने की है, तब इस विषय में विस्तार से चर्चा की जा सकती है। अथवा मुझे फोन, पत्र आदि द्वारा सम्पर्क किया जा सकता है। लौटकर मैं प्रयोग के तौर पर एक वर्ष विद्यालय में कार्य करने का इच्छुक हूँ। माह में 15 दिन (लगभग) विद्यालय की गतिविधियों में एवं शेष समय युग-भारती के प्रसार एवं योजनाओं के कार्यान्वयन तथा व्यक्तिगत अध्ययन इत्यादि में लगाना चाहता हूँ। यदि इस प्रयोग में सफलता मिलती है, तो कार्य की अवधि बढ़ाने पर विचार कर सकता हूँ।

मेरे विचार से प्रारम्भ में इन क्षेत्रों में कार्य शुरू किया जा सकता है :

- कम्प्यूटर कार्यशाला का विकास
- कम्प्यूटर शिक्षा के लिये शिक्षकों की नियुक्ति एवं उनका मार्गदर्शन
- इन्टरनेट पर प्रयोग एवं शिक्षा
- भगवद्‌गीता पर चर्चा एवं रुचि उत्पन्न करने के कार्यक्रम
- ग्राम-विकास योजना एवं कार्यान्वयन

कम्प्यूटर कार्यशाला से सम्बन्धित संसाधनों की आवश्यकता का विवरण मैं कुछ दिन बाद भेजने का प्रयत्न करूँगा।

आपका सहयोगाकांक्षी

**विवेक भागवत, 8 मार्च 2000**

200, Starcrest Drive # 202
CLEARWATER FL-33765 (USA)
Email : Vivek bhagwat@yahoo.com
Ph : 001-(727) 4670936 (R), 4678379(O)

# कानपुर से गोमुख : एक अविस्मरणीय यात्रा

**(युग भारती मात्र किसी विद्यालय के पूर्व छात्रों द्वारा बनाई गयी एक सामाजिक संस्था नहीं है, वरन भावनाओ से पल्लवित एक परिवार है। उसी परिवार सँग अपनी गोमुख यात्रा का वर्णन डॉ सुरेंद्र अग्निहोत्री जी (1993 बैच) ने किया है। प्रस्तुत है एक भावनाप्रधान यात्रा वृतांत)**

वैसे तो मैंने बहुत सारी यात्राएं की हैं किन्तु एक यात्रा ऐसी की, जिसे जीवन पर्यन्त नहीं भूला जा सकता है। वह थी हमारी गोमुख यात्रा। एक परिवार की यात्रा, हमारे युग भारती परिवार की यात्रा।

उस यात्रा में हम 47 सदस्य गए थे। जिसमें 5 वर्ष के बच्चों से लेकर 45 वर्ष तक की आयु वर्ग के भाई, बहिनें और भाभियाँ थीं।

कानपुर सेण्ट्रल से पूरे जोश में यह यात्रा प्रारम्भ हुई। ट्रेन 6–7 घण्टे देरी से थी, परन्तु किसी को कोई फर्क नहीं पड़ा। हम सभी स्टेशन पर ही चादर बिछा पूरी सहजता और आत्मीयता से बैठे।

नाश्ते–पे–नाश्ते का दौर चलने लगा। कहीं ढोलक बज रही थी, कोई गीत गा रहा था शेष सभी साथ दे रहे थे। अन्त्याक्षरी का दौर ऐसा चल रहा था कि किसी को परवाह ही नहीं थी कि ट्रेन लेट है। तनय जी बच्चों की टीम के लीडर थे। इधर वयस्कों में मोहन जी और मैं उनका साथ दे रहे थे। अजय जी और अभय जी जलपान व्यवस्था देख रहे थे। बच्चों का रूठना–मनाना अंत्याक्षरी के आनन्द में चार चाँद लगा रहा था। बच्चों की ओर से नैना कमान सम्भाले थीं तो अक्षत अनुज भी किसी से कम न थे। उधर बुआ–भतीजा अत्रेय एवं आर्या बखूबी पलक का साथ दे रहे थे फिर भी युवा वर्ग हावी नहीं हो पा रहा था। बीच में पिता धीरेन्द्र एवं पुत्र आकाश का संवाद तो का एक अलग ही रोचक प्रसंग बन गया। उसकी चर्चा के लिए तो एक नया अध्याय लिखना पड़ेगा।

खैर, थक हार कर ट्रेन भी शायद यह सोचकर आ गई कि इन लोगों पर तो मेरी लेट लतीफी का कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा है। नव्या, अपूर्वा, अनुपमा और सेजल का जोश अभी भी बरकरार था। सबने सामान चढ़ाया, ट्रेन चली और सब के सब फिर शुरू हो गए। अब तो शेष यात्री भी कूद पड़े इस अंत्याक्षरी संग्राम में। किसी तरह बच्चों को सोने का सख्त आदेश दिया गया तब जा कर सब शांत हुए।

हम सब हरिद्वार पहुंचे फिर हरिद्वार से बस द्वारा ऋषीकेश। उसके बाद रात्रि विश्राम क्योंकि सब बुरी तरह थके हुए थे, गरमी बहुत थी। किसी तरह रात बिताई गई। फिर सुबह बस पर सामान चढ़ाया गया।

जिसमें तनय जी तो लपककर सबसे आगे बस के ऊपर चढ़ गए। बालिकाएं भी कहाँ पीछे रहतीं। अत्रेय, पलक, आर्या बस के ऊपर चढ़े, अजय भैया ने सीढ़ी पर से सामान चढ़वाया और हम सब गाते–बजाते निकल पड़े। लक्ष्य था गंगोत्री।

मोहन जी ने हनुमान चालीसा के साथ शुभारंभ किया और इधर अभय जी ने नाश्ते का पिटारा खोल दिया। बस जरा सी भी क्या रुकती तनय जी कुछ अच्छा खिलाने की जुगत में लग जाते। वैसे तो अनुशासन विभाग

अजय जी और प्रदीप जी के पास था, परन्तु प्रदीप जी मानो स्वयं सबसे छोटे बच्चे थे। अबतक सबकी आपसी केमेस्ट्री बन चुकी थी। गौरव गुप्त जी चुपचाप से थे पर यह बहुत देर तक चल न पाया। अंकुर जी फोटोग्राफी का मोर्चा संभाले थे। धीरू भाई बीच–बीच मे संपुट देते जा रहे थे। रुकते–रुकाते भोजन, नाश्ता करते हम सब रात में गंगोत्री पहुंचे।

आप को बताते चलें कि वृतान्त इतने हैं कि एक पूरी पुस्तक लिख जाए किन्तु शब्दों की समय सीमा है। अतः भावनाओं पर लगाम लगाता हूँ। रात ज्यादा हो चुकी थी। सामान्यतः 8 बजे तक ही चलने वाली आश्रम की रसोई बन्द हो चुकी थी। गंगा जी का हाहाकारी स्वर हमें अन्य कुछ सुनने ही नहीं देता था। फिर हम सबने दही और आलू के पराठों से भूख मिटाई और सुबह के लिए अपने आप को तैयार किया। निर्देशित किया गया कि सुबह 6 बजे तक सभी को तैयार हो जाना है।

प्रातः काल सभी गोमुख के लिए कूच करने को तैयार थे। सभी लोगों ने यात्रा आरम्भ करने के पूर्व आश्रम का भोजन प्रसाद ग्रहण फिर यात्रा प्रारम्भ स्थल पर एकत्रित होकर अजय जी के नेतृत्व में निर्देशों का पालन करते हुए चल पड़े। युवा साथी तो पैदल ही निकल पड़े। बाकी 20–21 खच्चर की व्यवस्था की गई। भोजवासा, चीढ़वासा के दुर्गम रास्तों से हम लोग लाल बाबा आश्रम पहुंचे। रास्ते में एक बिटिया कुछ अशक्त सी हुई तो तनय जी ने सूझ–बूझ से ऑक्सीजन का उपयोग किया।

रास्ते के बहुतेरे आकर्षण थे, जिन्हें शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। पूर्ण गोलाकार इन्द्रधनुष जीवन में पहली बार सभी ने देखा। पीली चोंच के कौए भी पहली बार दिखे थे। लाल बाबा आश्रम पहुंचते–पहुंचते अंधेरा हो चुका था। लेकिन एक युवा टीम अभी तक नहीं पहुंची थी, तो सब परेशान हो उठे। पानी भी बरसने लगा। अब मैंने, मोहन जी, अजय जी ने हनुमान चालीसा के पाठ के साथ वापसी का मार्ग पकड़ा और बिछड़े हुए दल की तलाश शुरू की। न कोई संचार माध्यम और न ही कोई तय रास्ता, ऊपर से निम्न ऑक्सीजन स्तर। सबके सर भारी हो रहे थे। अन्ततः हनुमान जी की कृपा रही और सभी लोग सही सलामत मिल गए। सभी ने जमीन पर बैठकर भागीरथी के किनारे लाल बाबा आश्रम में दाल, सब्जी रोटी का आनन्द लिया। फिर सभी ने कमरों में जाकर सोने का प्रयास किया। बरसता पानी, ठण्डी हवाएं, बहाव का तेज शोर सबके साहस को ललकार रहा था। मैं तो डर ही चुका था, रात भर नींद न आई।

सुबह 4 बजे सभी को गोमुख के लिये निकलना था, परन्तु 10 सदस्यीय युवा दल ही आगे जा पाया क्योंकि रास्ता ही नहीं दिख रहा था, कुछ भी सूझ नहीं रहा था। उस 6 कि.मी. के सफर में पैर रखने पर पत्थर का गिरना, साहस की परीक्षा ले रहा था। उस पर यह चुनौती कि वापस गंगोत्री भी पहुँचना था रात तक। बरसते पानी मे जैसे तैसे वापसी हुई। वापस पहुंचने पर गौरव भाई की पत्नी दीपिका भाभी ने सभी के पांव छू कर आशीर्वाद लिया क्योंकि प्रिया को ज्वर था अतः गौरव, दीपिका भाभी, आदी एवं प्रिया आश्रम में ही रुके थे। रात में फिर से गुजराती आश्रम का भोजन कर सुबह 5 बजे वापस निकलने का निर्णय हुआ। लेकिन सुबह भी मूसलाधार बारिश हो रही थी अतः हम सब 9 बजे निकल पाए। सभी थके थे, परन्तु हमारा जोश नहीं थका था। वापसी में सबको मलाल था कि गंगोत्री में और नहीं रुक पाए। न कहीं और जा पाए। खैर, हम सब फिर से हनुमान जी का नाम ले कर गंगा मैया की जय बोलते हुए आगे बढे। रास्ते में फिर से वही क्रम अभय जी के नाश्ते का पिटारा और तनय जी की आगे कहाँ भोजन करना है आदि की योजनाएं।

अजय जी के अनुशासन तथा प्रदीप जी व धीरू भाई के मनोरंजन व्यवस्था सँग मोहन जी और मैं आगे बढ़ रहे थे। यात्रा में एक नया सितारा भी हमने पाया 'रजनी भाभी'। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर इनको युगभारती परिवार की महिला मोर्चा के अध्यक्ष का तमगा दिया गया। रास्ते मे एक जगह खीरा, टमाटर, नींबू, धनिया, मिर्च मिल गया, फिर क्या? सभी जुट पड़े भेलपूड़ी बनाने में। जिसे सभी ने बहुत चाव से खाया।

अब एक उद्देश्य यह दिख रहा था किसी तरह हरिद्वार समय से पहुँच जाएं। रास्ते मे कुछ स्वर उठ रहे थे कि अरे फूलों की घाटी छूट गई, अरे एक बार गंगा आरती दर्शन ही कर लेते। यह समझिये कि बड़ी नेक टु नेक फाईट थी। इस बार हरिद्वार में ट्रेन भी नियत समय पर आई और सही समय पर चल दी। अगर किसी अन्य योजना में कहीं जरा भी ध्यान भटका होता तो ट्रेन छूट जाती। खैर, सोते–सोते कब लखनऊ आया पता ही न चला। लखनऊ चारबाग स्टेशन पर युगभारती लखनऊ प्रकोष्ठ के सदस्यों द्वारा किया गया भव्य स्वागत हम सबको बहुत स्पेशल फील करा रहा था। वो लजीज नाश्ता, मट्ठा, जलेबी, ढोकला आदि। सबका माला पहनाकर स्वागत, ऐसा लग रहा था मानो कोई क्रिकेट टूर्नामेंट जीत कर आए खिलाड़ियों का स्वागत हो रहा है। हम सभी बस से कानपुर पहुंचे। अब सबके अपने अपने घर जाने का समय आ गया था। सभी की आंखों में आंसू थे। सब विदा ले रहे थे लेकिन सबके मन बोझिल थे। मानो सब साथ ही रह जाना चाह रहे थे। यूं लग रहा था जैसे अभी–अभी तो मिले थे सब। भावनाओं के सागर में डूबते उतराते यात्रा की मधुर स्मृतियों को हृदय में सँजोए हम सभी अपने अपने घरों को रवाना हुए और यह गंगोत्री गोमुख यात्रा हम सभी के मानस पटल पर सदा सदा के लिये अंकित हो गयी।

**» डॉ. सुरेंद्र कुमार अग्निहोत्री**
1993 बैच, (एमडी, होमियोपैथी) असिस्टेंट प्रोफेसर,

**"प्रत्येक देशभक्त व्यक्ति की ऐसी इच्छा होना स्वभाविक ही है कि अपना देश वैभवशाली बने। राष्ट्र सुखी, सम्पन्न हो ।राष्ट्रीय उत्पादन बढ़े ।बेकारी, भुखमरी, बेरोजगारी, अशांति का अन्त हो ।न्याय सुलभ हो ।आपसी झगड़े समाप्त हों ।साम्प्रदायिक, क्षेत्रीय, भाषायी संकुचितताओं से ऊपर उठकर लोगों के सोचने, विचारने का तरीका हो ।दलीय अभिनिवेशों से नेतागण मुक्त हों। भारत अपने राष्ट्रीय स्वरूपों में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक सभी प्रकार के क्षेत्रों में लोक-कल्याणी सिद्ध हो ।जिसमें ऐसी इच्छा निर्माण नहीं होती हो उसे भारतीय तो क्या मानव कहना भी कठिन है ।"**

**– पं० दीनदयाल उपाध्याय**

# युगभारती देशदर्शन (गोमुख यात्रा–2013)

धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि

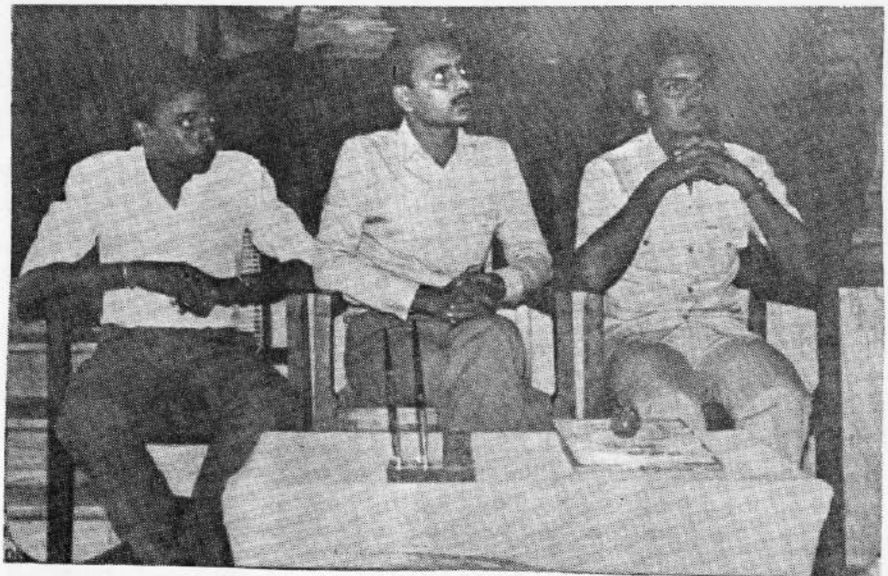

विद्यालय वार्षिकोत्सव का संचालन करते हुए : तरुण भारती के प्रथम अध्यक्ष स्व० राजेश पाण्डेय (मध्य में) तथा मंत्री नीरज कुमार (दायें)

सप्तम
१९७१-७२

षष्ठ क
१९७१-७२

युग भारती 40 वर्षीय
पारिवारिक मिलन समारोह

नेत्र शिविर
युग-भारती

SANATAN DHARMA VIDYALAYA
1990
1992
1994
1995
1997
1998
2000
2001
1988
1987
1986
1985
1984
1983
1982
1981
1978
1977
1976
1975

# समाचार पत्रों में युगभारती

25 साल बाद फिर गले लगे पुराने दोस्त

सनातन संस्कृति की वैज्ञानिकता को भूल रही युवा पीढ़ी

NEXT CITY FOCUS

राष्ट्र एक विचार और भावना है जबकि संस्कृति देश की परंपरा

NEXT CITY FOCUS

जीवन में सदा संतुष्ट रहना सीखें असंतुष्ट रहने से होंगे कमजोर

युग भारती के अधिवेशन में शिक्षा प्रकल्पों के विस्तार पर की चर्चा

# समाचार पत्रों में युगभारती

भारत को सुपर पॉवर नहीं, जगतगुरु बनाएं : सुधांशु

रामायण से ही मिले सर्वोदय व अंत्योदय के सूत्र

युग भारती ने कोरोना योद्धाओं को वाटर कूलर मशीन दिया

युवा गौरव । संवाददाता

कानपुर.युग भारती ने कोरोना महामारी के चलते कोरोना योद्धाओं के लिए कानपुर मेडिकल कॉलेज को दी वाटर कूलर मशीन और आरो वाटर पुरियफायर डोनेट किया जिससे कोरोना वारियर्स को ठंडा और शुद्ध पानी मिल सके युगभारती संस्था के अध्यक्ष राजेश खरे ने डोनेशन पत्र कानपुर मेडिकल कॉलेज की प्राचार्य आरती लाल चांदनी को हस्तांतरित किया। युगभारती के संयोजक अजय शंकर दीक्षित सचिव कानपुर खो-खो एसोसिएशन ने बताया कि युगभारती संस्था पंडित दीनदयाल विद्यालय के पूर्व छात्रों की संस्था है।इस संस्था प्रतिदिन सैकड़ो जरूरतमंद लोगो को भोजन सामग्री,दूध आदि भी उपलब्ध करवा रही है। प्राचार्य आरती लाल चांदनी ने युगभारती संस्था को धन्यवाद देकर संस्था के उज्जवल भविष्य की शुभकामना दी।इस मौके पर संस्था के और सदस्य मौजूद रहे।

व्यक्तित्व निर्माण में रखें समाज का ध्यान

अनोखा है रूरल डेवलपमेंट का ये 'प्रयास'

07 हिन्दुस्तान

राशन पैक देकर सामाजिक योद्धाओं का मनोबल बढ़ाया

स्वास्थ्य मेले में कराएं मुफ्त इलाज

सर्वोदय में आज मोतियाबिंद के मुफ्त ऑपरेशन

VARANASI VISHWANATH
VVIP
अंग्रेजी शिक्षा भारतीय संस्कार
INTERNATIONAL PUBLIC SCHOOL

गुरू ब्रह्मा गुरू विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा
गुरु साक्षात परब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

## पूज्य आचार्य जी श्री ओमशंकर जी त्रिपाठी जी द्वारा उद्धघाटित शिक्षा मंदिर VVIP स्कूल PG to XII CBSE Board Affiliated आपके आशीर्वाद से प्रगति पथपर ऐसे महान गुरुदेव के चरणों में कोटि कोटि नमन।

सादर – डा० पुरुषोत्तम नारायण वाजपेयी
1982 बैच दीनदयाल विद्यालय
प्रधान सेवक VVIP स्कूल
9889816291
शिवांगी दुबे (दुबे परफ्यूमर्स), अवंतिका शुक्ला SKS परफ्यूमर्स

डा० आदित्य नारायण वाजपेयी
सचिव VVIP स्कूल
प्रबंध निदेशक शिव शक्ति उद्योग
राइस मिल Since 1987
शिव शक्ति नगर चौबेपुर कानपुर
9889806255

UNISED
Innovation in Education

unised.india@gmail.com
unised.in
+123-456-7890

CHANGING THE LIFE WITH SOCIAL LEADERSHIP

About 13.5 Lakh Families

Across 22 States/UT's India

INNOVATION WITH
COMMUNITY HEALTH
DEFENCE EXCELLANCE
EDUCATION

Consituency development poineered with CSR Projects worth 200cr in last 10 years

Strong Promoter of Goverment Flagship Programs

ATAL INNOVATION MISSION
RASHTRIYA AVISHKAR ABHIYAN
FIGHT ANEMIA
SUSTAINABLE ENERGY
FIGHT MALNUTRITION
DEFENCE INNOVATION

UNISD5,A Shankar Market Cannught Place ,New Delhi

# कविता मन का विश्वास

कविता मन का विश्वास भाव की भाषा है।
हारे मानस की आस प्राण परिभाषा है।।
वरदान भारती का है ये शिव का संयम।
शुभ सुखद सहज करती जीवन का पथ दुर्गम।।
कविता की बान अनोखी है अलबेली है।
पीड़ाओं की सहचरी अभाव सहेली है।।
यह ज्योति अमावस की प्रभात का सूरज है।
संगम का जल वृन्दावन की पावन रज है।।
कवि कर्म धर्म की बान जिसे भा जाती है।
सपनों की दुनिया नयनों में छा जाती है।।
कवि की वाणी में सत्य शक्ति प्रेरणा भरी।
संकट के तूफानों से यह जूझती तरी।।
कविता कल्याणी कीर्ति कर्म की धारा है।
जूझती तरी के लिए सुरम्य किनारा है।।
आनन्द विधायी सत्य तत्त्व की राह सरल।
अधरों पर अमृत है अन्तर में पचा गरल।।
कविता का सत्य ह्रदय में भर देता उछाह।
शीतल कर देता अन्तस्तल का विषम दाह।।
भटके राही को राह दिखाती कविता है।
कविता रजनी में चांद दिवस में सविता है।।

» **ओम शंकर**

# यह भारतवर्ष महान मेरा

यह भारतवर्ष महान मेरा, अनमोल छटा ज्यों इंद्रधनुष।
भूखण्ड नहीं यह मात्र कोई, है देवतुल्य यह राष्ट्रपुरुष।।
मस्तक हिम शिखरों का आलय, स्वर्गानुभूति सा मेघालय।
मध्यांचल के वन हरे–भरे, पद के नीचे सागर लहरे।
पर्वत श्रेणी नदियों का जाल, गंगा यमुना सरयू विशाल।
मैदानी हरित प्रदेश यहाँ, अनगिन भाषा और भेष यहाँ।
तिनके तिनके में ब्रह्म अंश, वेदों की गति वंशानुवंश।
सभ्यता सनातन चिर महान, प्रस्तर–प्रस्तर देता प्रमान।
सम्यक विचार सम्यक सुदृष्टि, माने कुटुम्ब हम सकल सृष्टि।
शिव–शिखा छोड़कर भारत में, सुरसरि धोती हर पाप कलुष।
इसकी गोदी में राम पले, घुटनों के बल श्रीकृष्ण चले।
यह तप माता अनसुइया का, गार्गी का सीता मइया का।
गौतम नानक की बानी है, यह हरिश्चन्द्र सा दानी है।
मानस गीता रामायण है, यह स्वयं रूप नारायण है।
इसकी पद रज को पाने को, स्रष्टा भी आतुर आने को।
वामन वराह और परशुराम, धन्वन्तरि का यह पुण्य धाम।
हो भैरव या वृषभावतार, दुर्वासा या अंजनि कुमार।
इस देवभूमि पर कोटि देव, अवतरित हुए धर रूप मनुष।
यह वीर शिवा का शौर्य गान, राणाप्रताप का स्वाभिमान।
राणा सांगा के घावों में, कुम्भा के अतुलित भावों में।
आल्हा–ऊदल की प्रखर शक्ति, रानी लक्ष्मी की देश भक्ति।
जल गई आन हित धू–धू कर, ये पूज्य पद्ममनी का जौहर।
यह विष्णुगुप्त की शिक्षा में, सागर सी धैर्य परीक्षा में।
अशफाक भगत सावरकर हों, बिस्मिल सुभाष या शेखर हों।
गांधी केशव गोखले तिलक, जो मृत्यु बाद भी रहे चमक।
सुंदर इस भारत बगिया में, अनगिन ऐसे हैं शुभ्र तरुश।
यह भारतवर्ष महान मेरा, अनमोल छटा ज्यों इंद्रधनुष।
भूखण्ड नहीं यह मात्र कोई, है देवतुल्य यह राष्ट्रपुरुष।।

» **डॉ पवन मिश्र**
(1996 बैच)

# आजादी का उत्सव

मेघों पर सूरज उगते ही, धूप धरा पर उतरी।
रंग–रूप से सजी मही भी, राह रात से तकती।।
मृदुल, मुदित, चंचल, पुलकाता, मंद–मंद है समीरण।
झूम रहे हैं भाव हृदय में, पात–पुष्प और तरु–तृण।।
सुनो सखे, खग–कुल का कलरव, आजादी का उत्सव।।

प्रात प्रथम यह कार्य सदा, तिरंगा प्यारा फहरा कर।
राष्ट्रगान को मुक्त कंठ से, सम्मिलित स्वर में गाकर।।
प्रधानमंत्री जी का भाषण, लाल किले से सुनकर।
शुभकामना सब को देकर, मोदक से मुँह मीठा कर।।
मांगूँ 'सर्व जनः सुखिनः भव', आजादी का उत्सव।।

सोच रहा हूँ आजादी पर, जो अंकुर जन्मा था।
कितने जीवन के यत्नों का, वह प्रतिफल नन्हा था।।
उन सारे बलिदानी जन ने, कैसा कल सोचा था।
भारत के दीपित भविष्य का, क्या सपना देखा था।।
राम–राज्य आया क्या राघव? आजादी का उत्सव।।

उस पीढ़ी ने अपना सब कुछ, आजादी पर वारा।
मूल्य चुकाया बंटवारे का, अश्रु–लहू की धारा।।
तिस पर भी विश्राम नहीं था, कितना कुछ करने को।
स्वाधीन राष्ट्र, पर लक्ष्य शेष, सुदृढ़ नींव धरने को।।
ध्रुव–संकल्प लिया था अभिनव, आजादी का उत्सव।।

हमने आजादी को भोगा, इतना कुछ है पाया।
पर हमने क्या दिया देश को, कुछ कर्तव्य निभाया।।
इतिहास हमें भी तोलेगा, मूल्यांकन होगा कल।।
भविष्य किया है निर्मित या फिर, स्वार्थ जिया है केवल।
हमको हो दायित्व का अनुभव, आजादी का उत्सव।।

» **सतीश चन्द्र गुप्त**
(बैच 1991)

# मैं...

मैं तत्व शक्ति विश्वास, समस्याओं का निश्चित समाधान।
मैं जीवन हूँ मानव जीवन, मैं सृजन– विसर्जन–उपादान।।
मैं भाव प्रभाव सुनिष्ठा हूँ, धरती की प्राणप्रतिष्ठा हूँ।
संकट कराल संघर्ष बीच, दृढ़ धैर्य शक्ति–मंजिष्ठा हूँ।।
मैं संयम शुचिता सात्विकता, संतोष सरलता मुदिता हूँ।
मैं गहन निशा में चन्द्रकिरण, प्रमुदित प्रभात का सविता हूँ।।
विभु की कल्पना और अणु की, अनुभूति हमारे मन में है।
संसार धर्म का ज्ञान और, परिपालन भी जीवन में है।।
मैं राग विराग और अनुरागी, स्वर सरगम का गायक हूँ।
इस महानाट्य के रंगमंच का, मैं अभिनेता नायक हूँ।।
मैं सृजन–प्रलय का कथाव्यास, सुर संगत ढोल मजीरा हूँ।
विश्वामित्री संकल्प और, भावना भक्ति की मीरा हूँ।।
मैं प्रणव मंत्र का घोष, प्रकृति की लीला का सहकर्मी हूँ।
सर्जन का शुभ संकल्प, शास्त्रविधिपालन का सद्धर्मी हूँ।।
मैं कर्म कथा का गायक, शिव सन्दर्भों का उन्नायक हूँ।
मैं चक्रसुदर्शन कभी कभी, रघुनायक का धनुसायक हूँ।।
इतिहास पृष्ठ का लेखक मैं, भूगोल बनाने वाला हूँ।
राक्षसी वृत्ति का घालक दैवी, जीवन का रखवाला हूँ।।
मैं सृष्टि–सृजन आधार और, आधेय हमारा स्रष्टा है।
इस तन को ही अपनाया करता, सृजन–प्रलय का द्रष्टा है।।
इसलिए दिव्य मानव–जीवन को, कभी उपेक्षित करो नहीं।
नश्वर सुख सुविधाओं से इसकी, तुलना करके मरो नहीं।।
प्रतिपल अनुभव करना सीखो, मैं अमरतत्व रखवाला हूँ।
परमात्म शक्ति की दिव्य ज्योति, इस जगती तल की ज्वाला हूँ।।
प्रार्थना यही परमेश्वर से मानवपन पर विश्वास रहे।
संसार असार न छू पाए, जबतक इस तन में श्वास रहे।।
हे परमपिता! मानवपन पर, विश्वास सदा ही बना रहे।
शुभकर्मों का मंगल वितान, आजीवन सिर पर तना रहे।।

**» ओम शंकर**

# भूकंप की विभीषिका

**(तुर्किये में 6 फरवरी, 2022 को आए भीषण भूकंप को जैसा कवि हृदय ने अनुभूत किया।)**

प्रातः सूरज उगने से पहले जैसे धरती ही जाग गयी।
सब कुछ सह लेती है जो मानो जरा सी काँप गयी।।
कम्पन की ऐसी वेला थी सृष्टि अभी कुछ सोई थी।
जो थोड़ी बहुत जागी थी वो स्वप्नों में ही खोई थी।।
क्या पहले शैय्या डोली ? या पहले डोली दीवारें ।
इसका तो कुछ पता नहीं पर जैसे थम गयीं सांसें।।
घनश्याम अंध तम था हाथों को सूझते हाथ नहीं।
बिंदु भर प्रकाश धर हाथ हम प्राण बचाने को भागे।।
स्वयं को सौंपा ईश्वर को स्वजनों का स्मरण हुआ।
लक्ष्य अभी भी कई शेष हैं जीवन मूल्य का बोध हुआ।।
भवन सोपानों के मध्य ही जैसे यम ने धावा बोला।
मैंने नेत्र बंद कर लिए आंजनेय का स्मरण किया।।
उन गिरते पड़ते काँचो के मध्य ईश्वर ही सहाय हुए।
सम्बल बन अंगों में दौड़े और फिर मनस प्राण हुए।।
बाहर घना अँधेरा था और कुपित पवन का तेज शोर।
बादल करते अपनी मनमानी गरज बरस गरज हर ओर।।
हर ओर दृश्य भयावह थे भवनों के वे ध्वंसावशेष।
मार्ग भी थोड़े विचलित थे चीत्कारों के क्रंदन शेष।।
अर्थ, काम का नाश दिखा धर्म, मोक्ष का मार्ग दिखा।
भाषा, भाषा का भेद भले था जो बचा, पर को बांचने लगा।।
आशा की कोई उम्र नहीं जीवन की कोई फिक्र नहीं।
श्री गीता सही सिखाती है बस कर्म तुम्हारे संग वही–2।।
न भवन बचे न संसाधन न पूँजी बची न संताने।
जैसे एक पल का खेल हुआ बस मैं और मेरा कर्म बचा।।
क्रोध, लोभ, मोह, अहम ये सब किसी काम न आते हैं।
जीवन का मूल्य समझते हैं जब मृत्यु निकट हो आते हैं।।
इस वीभत्स संहार में ही है सन्देश बड़ा गहरा।
सृजन का यूँ ही मोल नहीं संघर्ष ये बड़ा ठहरा।।
उन टूटे बिखरे मार्गों पर फिर मकान बन जाएंगे।
जैसे जीते थे हम कल कल फिर वैसे ही जी पाएगे।।
बस स्मरण यही रखना होगा कि जीवन को एक अर्थ मिले।
एक अवसर मिला है फिर से बस कर्म करें और कर्म फलें।।

**» कप्तान शैलेन्द्र दीक्षित**
08 फरवरी 2022, (2000 बैच)

# देवों की यह भूमि

देवों की यह भूमि जहां पर अविरल निर्मल गंगा
उसी राष्ट्र के नील गगन में फहरे सदा तिरंगा ।।
उत्तर में गिरिराज हिमालय दक्षिण में रत्नाकर
पश्चिम द्वार द्वारिका पावन पूरब में अरुणांचल
भारत में सर्वोच्च शिखर है के टू कंचनजंगा।
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

काश्मीर है स्वर्ग धरा का फूली केसर क्यारी
कुदरत के सब बाग बगीचे जिनकी शोभा न्यारी।
अविनाशी के दर पर मिलती वरदानो की भंगा
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

सामाजिक ऋतुराज मनोहर आनंदित घर आंगन।
होली ईद दिवाली के संग प्रेम का रिमझिम सावन
इंसानी त्योहार तराजू रहा न कभी पसंगा
**उसी राष्ट्र के नील गगन में फहरे सदा तिरंगा**

जहां अजानो संग कीर्तन गाते रात गुजरती
भोर भए पनघट की डगरिया कर्म की गीता पढ़ती।
ए बी सी डी से पहले है क ख ग घ ङ।
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

काबा काशी मक्का मदीना बद्रीनाथ वृंदावन
राम अयोध्या बोधगया सारे तीरथ अति पावन।
अन्नपूर्णा धरा धाम में कोई ना भूखा नंगा
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

भक्ति की शक्ति का वैभव सारे जग से न्यारा।
बना दिया दो लोक का स्वामी कृष्ण सुदामा प्यारा।
भक्त की रक्षा में प्रकटे जहां खंभ फाड़ नरसिंगा
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

सूर कबीरा तुलसी मीरा भक्ति सिंधु के मोती।
जिनके शब्द–शब्द छंदों में घर–घर पूजा होती।
राम कथा की कर तारी से संशय उड़े बिहंगा
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

देश की सीमा के रक्षक जिनके फौलादी सीने।
परमवीर और वीर चक्र धारी हैं बहुत नगीने।
प्राण निछावर करते जैसे दीपक प्रेम पतंगा
**उसी राष्ट्र के नील गगन में ..................**

देवों की यह भूमि जहां पर अविरल निर्मल गंगा
उसी राष्ट्र के नील गगन में फहरे सदा तिरंगा

**» सुभाष शर्मा**

# चिंता है भारत में क्यों भ्रष्टाचार बढ़ा?

चिंता है भारत में क्यों भ्रष्टाचार बढ़ा, सात्विकता दुनिया भर में क्यों बदनाम हुई।
क्यों हुआ सतोगुण से अपने मन का विरोध, साधना हमारी क्यों पश्चिम के नाम हुई।।
क्यों हुआ स्वयं की परम्पराओं से विरोध, अपने पुरखों की गौरव–गाथा क्यों भूली।
विश्वास डिगा क्यों अपने शौर्य पराक्रम से, हम शिखर–पुरुष हो गए आज क्यों मामूली।।
क्यों कथा, मंत्र, पूजा, प्रवचन व्यापार हुए, क्यों सरस्वती लक्ष्मी की घर–सेविका बनी।
क्यों हुईं सिद्धियां निधियाँ सब सोना–चांदी, क्यों धन के पीछे पिता–पुत्र में रार ठनी।।
क्यों खिंची प्रेम के चारों ओर अग्नि–रेखा, अपनेपन का व्यवहार हुआ क्यों बुझा–बुझा।
कसमें बाजारु हुईं वचन अस्तित्व हीन, भरपूर स्नेह से भरा हुआ क्यों दिया बुझा।।
क्यों राजनीति हो गयी बपौती गुण्डों की, अपने प्रतिनिधियों से ही संसद शर्मिन्दा।
छल छद्मों के हाथों क्यों बंदी लोकतंत्र, सत्ता सो रही ओढ़कर जन गण की निंदा।।
अपने ही घर के लाल प्रशासन में जाकर, क्यों क्रूर कुटिल कपटी निर्दय हो जाते हैं।
अपनी माटी में पले बढ़े ये नौनिहाल, क्योंकर अपनी जननी का दूध लजाते हैं।।
तप, त्याग, समर्पण बलिदानों की यह धरती, क्यों उलझ गई सुख लोभ लाभ सुविधाओं में।
जन गण मन पर क्यों अविश्वास का कर्दम है, क्यों भरी जवानी झूल रही दुविधाओं में।।
क्यों सेवा सुविधा की हथकड़ियां पहने है, संतत्व विभव की कारा में क्यों बन्दी है।
कण–कण पर फूल रही क्यों लिप्सा की कलियाँ, क्यों प्रतिभा के बाजार छा रही मन्दी है।।
इन सारे क्यों का उत्तर केवल एक यही, हो रही देश में शिक्षा–धन की अनदेखी।
सुख–साधन के विज्ञापन पटे पड़े दर–दर, हो रहा सभी कुछ पश्चिम की देखा–देखी।।
यह ध्यान रहा ही नहीं कि पश्चिम भोग–भूमि, हम कर्मभूमि पर उपजी तप की माटी हैं।
सन्तोष–सम्पदा कर्ता ने हमको सौंपी, हम त्याग तपस्या सेवा की परिपाटी हैं।।
खुद बुझा ज्ञान की ज्योति घना अँधियार किया, काला ही दिखने लगा सभी की आँखों को।
शुचि कर्म–कुशलता चरैवेति का मन्त्र भूल, अपने को सौंप दिया सुख स्वर्ण–सलाखों को।।
पर हमको अपना दीप जलाना ही होगा, भयभीत विश्व है निज आसुरी कुकर्मों से।
परमाणु "धरा का मूल" भयद गर्जन में रत, उसको प्रशान्त करना यज्ञीय सुकर्मों से।।
यह भारत की तपसी मेधा से ही सम्भव, उसको ही कर्ता का अनुपम वरदान मिला।
यह सारी दुनिया उसका ही अपना कुटुम्ब, स्रष्टा से उसको ऐसा अद्भुत ज्ञान मिला।।
भारत भा में "रत" हो फिर से यदि चाह रहे, तो पहले शिक्षा को महत्व देना होगा।
शिक्षा पर्याय बने शुचिता कर्मठता का, ऐसा विधान शिक्षा–विधि में करना होगा।।
सुविचारित शिक्षा से भारत भारत होगा, सारी दुनिया हमको फिर से पहचानेगी।
दुनिया भरकी योग्यता–परीक्षा हम लेंगे, अतिभोग विनाशक है मानवता जानेगी।
ओ भारत के सपूत जागो तन्द्रा त्यागो, आचरण–शुद्धता पर पूरा विश्वास करो।
शुचिता, कर्मठता आत्मतोष अपना धन है, इस धन से मानव–जीवन का दारिद्र्य हरो।।

**» ओमशंकर**

# THE EDUCATION SYSTEMS IN INDIA AND GERMANY - A COMPARISON

Although both India and Germany have strong education systems, they differ considerably in terms of curriculum design, teacher training and the use of technology in education.

**INTRODUCTION -**

Education is about acquiring knowledge and skills through various forms of learning, such as schooling, training, or self-study. That's why education is important for everyone. It helps us to shape our lives and make good decisions.

Similarities between Indian and German Education System

**Although there are some differences between the Indian and German education systems, there are also some similarities:**

**1.Importance of education:** Both India and Germany attach great importance to education, and both countries have a long tradition of academic excellence.

**2. Primary education:** Both India and Germany have a well-established primary education system that aims to provide a solid foundation in basic skills such as reading, writing and maths lessons. Both India and Germany have a well-developed tertiary education system that includes universities and technical colleges.

**3. Focus on STEM education:** Both India and Germany place great emphasis on Science, technology, engineering and mathematics (STEM) education and research, recognising the importance of these areas for economic growth and technological innovation.

**4. Multilingualism:** Both India and Germany have a multilingual culture and both countries emphasise language learning. In India, students typically learn multiple languages, including English, Hindi, and a regional language. In Germany, students usually learn English as well as other European languages such as French, Spanish, and Italian.

**5. The role of teachers:** In both India and Germany, teachers are seen as important role models who are important reference persons for many pupils, as they spend a large part of their time at school. knowledgeable and competent teachers are major factors for student success.

**The differences in the Indian and German education systems:**

**1. Structure:** The Indian education system has different stages including primary secondary and higher secondary and higher education. In contrast, the German education system is divided into three levels: Primary, Secondary and Tertiary. The primary level in Germany is usually followed by the secondary level, which can be divided into different types of schools.

**2. Curriculum:** The Indian education system relies on teacher-centred instruction where rote memorisation plays a significant role. The curriculum is often very content-heavy, and students are expected to master a large amount of information. In contrast, the German education system emphasises critical thinking, problem-solving skills, taking ownership for their learning process and the development of key skills.

**3. Grading:** In India, the grading system is usually based on grading systems that use divisions or classes, based on the average percentage marks and a lot of emphasis is placed on good grades. In contrast, the German grading system is based on a 6-point scale and less emphasis is placed on good grades.

**4. Vocational education and training:** The Indian education system should emphasize vocational

education and training. The German education system offers an excellent approach to skill development, which includes initial vocational training. And students can opt to attend vocational schools to gain practical skills and work experience.

**5. Teaching methods:** In India, teaching methods are often lecture-based, and the teachers act as the sole source of information. In contrast, the German education system places great emphasis on student-centred teaching methods that encourages critical thinking and problem solving.

**6. Funding:** The Indian education system managed by the state-run public education system, which falls under the command of the government at three levels : central, state, and local, while the German education system, the most educational institutions are funded by public authorities.

» **Abhai Gupta**
(Batch 1985)
Senior Consultant Business Intelligence, Germany

भगवान अनंत शक्तिमान है। मेरा विश्वास है कि वो सहायता करेगा । मैं मर भले ही जाऊँ, परन्तु, युवकों ! गरीबों, भूखों और उत्पीड़ितों के लिए इस सहानुभूति और उत्कट प्रयत्न को थाती के रूप में तुम्हें अपर्ण करता हूँ। जाओ, इसी क्षण जाओ, उस पार्थसारथी के मंदिर में, जो गोकुल के दीन-हीन ग्वालों के सखा थे, जो अन्त्यज और चाण्डाल को भी गले लगाने में नहीं हिचके, जिन्होंने अपने बुद्धावतार काल में अमीरों का निमन्त्रण अस्वीकार कर एक वाराङ्गना का निमंत्रण स्वीकार किया और उसे उबारा। जाओ उनके पास, जाकर साष्टांग प्रणाम करो, और उनके सम्मुख एक महाबलि दो, अपने समस्त जीवन की बलि दो उन दीन-हीनों और उत्पीड़ितों के लिये, जिनके लिए भगवान युग-युग में अवतार लिया करते हैं और जिन्हें वे सबसे अधिक प्यार करते हैं। और तब प्रतिज्ञा करो कि अपना सारा जीवन इन कोटि-२ लोगों के उद्धार कार्य में लगा दोगे, जो दिनों दिन अवनति के गर्त में गिरते जा रहे हैं।

–स्वामी विवेकानन्द

# THE NEED TO BOOST ENTREPRENEURSHIP, TO MAKE INDIA A SUPERPOWER

With India standing at the intersection of technology, talent, and ambition, there is an urgent need to boost entrepreneurship in India. The dynamic market, technological advancements, and supportive ecosystem have created a fertile ground for entrepreneurial ventures. Entre-preneurship plays a crucial role in driving economic develop-ment, and in a developing economy like India, it presents a blend of challenges and oppor-tunities.

India has had a rich history of entrepreneurship. From the ancient traders who traveled the Silk Road to modern-day tech entrepreneurs who are building global companies, Indians have always been known for their entrepreneurial spirit. There are a number of factors that have contributed to the entre-preneurial culture in India. The strong emphasis on STEM education has created a big pool of educated professionals who are well-equipped to start their own business.

The growing number of government initiatives like Startup India has provided entrepreneurs with access to funding, guidance for business growth and mentorship. India, with its large, growing consumer market has provided entre-preneurs with a huge pool of people to sell their products or services to. Owing to these factors, India has become one of the most vibrant and dynamic startup ecosystems in the world. Global investors have pumped in millions of dollars into Indian startups which are building some of the most innovative products and services. Other key trends that are shaping India's entre-preneurial ecosystem is the rise of women entrepreneurs across diverse segments like fintech, healthcare and e-commerce. The growth of regional startups in smaller cities and towns across India is also catering to the huge demand for products and services. Many entrepreneurs are focussing on giving back to society. They are now focussing on building businesses which can have a positive social impact.

Technology has become a critical enabler for modern entrepreneurship. Indian entre-preneurs are increasingly leveraging technology to create innovative solutions and disrupt traditional business models. Key areas where technology is making a significant impact include - E-commerce and Online Marketplaces, fintech innovations, healthtech, edutech and agritech solutions.

Entrepreneurship is the engine of job creation, a catalyst for innovation, and a critical component in enhancing a country's competitiveness on the global stage. In India, with its vast and diverse population, entre-preneurship can serve as a powerful tool for addressing unemployment and under-employment, particularly among the youth. Despite the immense growth potential, Indian entre-preneurs are facing many challenges which include access to capital, regulatory hurdles and skill gaps.

For first time entrepreneurs, navigating the maze of licences, permits, and compliances can be daunting. There is also a need to shift cultural attitudes to support risk-taking, innovation, and failure as part of the entre-preneurial journey.

In order to boost entre-preneurship and to address challenges that the ecosystem faces, India must help improve the access to capital which poses a significant barrier to the startups growth. Government, financial institutions, and private sector should work together to increase access to capital for startups. Incubators and accelerators can play a big role in granting startups in rural and urban areas with access to capital.

Simplifying the regulatory framework and improving the ease of doing business can make it easier for entrepreneurs to start and scale up businesses. Introducing entrepreneurship-focussed academics at a young age can equip the youth with the skills they need to succeed. Prioritising investments in R&D can help foster innovation and also encourage collaboration between startups, universities and research institutes. Mentor-ship and networking are crucial components of the entre-preneurial journey. If experienced mentors provide gui-dance, share insights, and help new entrepreneurs navigate challenges, it can help them scale up their growth signi-ficantly.

Boosting entrepreneurship in India is not just a policy imperative - it has now become a socio-economic necessity. The need of the hour is to create an ecosystem that supports and nurtures entrepreneurial talent. With the huge pool of talent that exists in India, boosting entre-preneurship can unlock a new era of innovation, job creation & economic prosperity.

» **Dr Apoorva Ranjan Sharma**
**(Batch 1989)**

# युग-प्रभा सोपान

युग - प्रभा
प्रथम रश्मि

युग-प्रभा
द्वितीय रश्मि

युग प्रभा
“स्मारिका”
शैक्षिक गोष्ठी

युग-प्रभा
तृतीय रश्मि

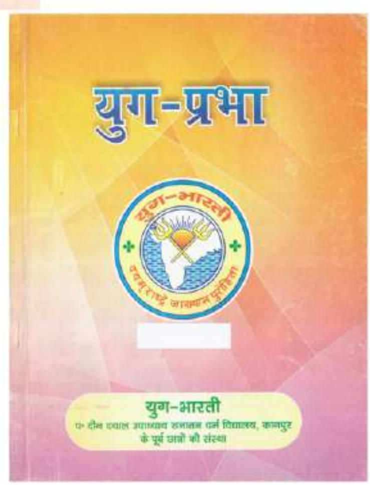
युग-प्रभा
युग-भारती
पं० दीन दयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय, कानपुर
के पूर्व छात्रों की संस्था

Rajesh Khare

+91 98391 24454

TRAVELCOM

AIR TICKETS • HOTELS • HOLIDAYS

Travelcom Fundays Pvt. Ltd

UGF, Radiance Town, 7/119, Swaroop Nagar, Kanpur

travelcom.knu@gmail.com

Tel. : +91 9984997709, +91 98391 24454

# हमारे विशिष्ट सहयोगी

| बैच | नाम | बैच | नाम |
|---|---|---|---|
| 1975 | श्री अजय अग्रवाल जी | 2006 | श्री शरद कश्यप जी |
| 1985 | श्री पुनीत श्रीवास्तव जी | 1977 | श्री विनय अग्रवाल जी |
| 1985 | श्री शैलेश गुप्त जी | 1978 | श्री नवनीत अग्रवाल जी |
| 1989 | श्री अपूर्व रंजन शर्मा जी | 1982 | श्री राजुल खन्ना जी |
| 1985 | डॉ अजय कृष्ण द्विवेदी जी | 1982 | श्री संदीप बंसल जी |
| 1977 | डॉ नरेंद्र अग्रवाल जी | | डॉ सुशील गुप्ता जी (अभिभावक) |
| 1982 | डॉ आशु शुक्ल जी | 2000 | श्री शैलेन्द्र दीक्षित जी |
| 2005 | श्री देवर्षि मिश्र जी | 1975 | श्री विनय अजमानी जी |
| 1975 | श्री भरत सिंह जी | 1977 | श्री अभय गुप्त जी |
| 1975 | न्यायमूर्ति श्री सुरेश गुप्त जी | 1977 | श्री कौशल किशोर भरतिया जी |
| 1977 | श्री विजय गर्ग जी | 1977 | श्री विजय गुप्त जी |
| 1982 | डॉ प्रवीण सारस्वत जी | 1978 | श्री हेम कुमार जैन जी |
| 1984 | डॉ प्रदीप त्रिपाठी जी | 1982 | श्री पुरुषोत्तम वाजपेयी जी |
| 1991 | डॉ मनीष वर्मा जी | 1989 | श्री आलोक अवस्थी जी |
| 1978 | श्री अरविन्द तिवारी जी | 1978 | श्री संदीप रस्तोगी जी |
| 1985 | श्री अजय बाजपेयी जी | 1984 | प्रो. मनोज अवस्थी जी |
| 1985 | श्री अजित अग्रवाल जी | 1977 | श्री नवीन भार्गव जी |
| 1985 | श्री राजेश खरे जी | 1978 | श्री राजीव मिर्जा जी |
| 1985 | श्री विवेक कुमार द्विवेदी जी | 1983 | श्री अजय शंकर दीक्षित जी |
| 1985 | श्री समीर राय जी | 1989 | डॉ. अमित गुप्त जी |
| 1992 | श्री नितिन कपूर जी | 1993 | डॉ. सुरेन्द्र अग्निहोत्री जी |

# अधिवेशन आयोजन समिति

1. श्री अरविंद तिवारी
2. श्री आशु शुक्ल
3. श्री शुभेंद्र परिहार
4. श्री प्रदीप बाजपेई
5. श्री अखिलेश अग्निहोत्री
6. श्री अजय कृष्ण
7. श्री सुरेश गुप्ता
8. श्री भरत सिंह
9. श्री शरद कश्यप
10. श्री नितिन परिहार
11. श्री नरेंद्र अग्रवाल
12. श्री संदीप रस्तोगी
13. श्री शैलेश गुप्ता
14. श्री आलोक अवस्थी
15. श्री प्रवीण द्विवेदी
16. श्री पदम जी ओमर
17. श्री शिवम अग्रवाल
18. श्री गिरीश गुप्ता
19. डॉक्टर संतोष कुमार
20. श्री अशोक तिवारी
21. श्री राजीव मिर्जा
22. श्री कपिल कपूर
23. श्री विपिन वर्मा
24. श्री रामेंद्र त्रिपाठी
25. श्री पुनीत श्रीवास्तव

# युगभारती प्रबंधकारिणी समिति

**संस्थापक एवं संरक्षक**– आचार्य श्री ओम शंकर जी

**सहसंरक्षक**– आचार्य श्री दीपक राजे जी

**संरक्षण समिति**– विनय अजमानी, ओम प्रकाश मोटवानी, डा० प्रवीण सारस्वत, अजय शंकर दीक्षित, राजेश खरे

**अध्यक्ष**– वीरेन्द्र त्रिपाठी

**महामन्त्री**– डा० मोहन कृष्ण

**कोषाध्यक्ष**– अभय गुप्त

**उपाध्यक्ष**– डा० आशु शुक्ल, विवेक भागवत, प्रवीण अग्रवाल, पुनीत श्रीवास्तव, विवेक गुप्त

**सह कोषाध्यक्ष**– डा० मनोज अवस्थी

**मन्त्री**– डा० शुभेन्द्र सिंह परिहार

**संगठन सचिव**– मनीष कृष्णा

**बौद्धिक सचिव**– डा० पवन मिश्र

**योजना सचिव**– डॉ शैलेन्द्र पांडेय

**व्यवस्था सचिव**– रोहित दुबे

**सह संगठन सचिव**– निर्भय सिंह नौलखा

**आई टी सचिव**– अखिल तिवारी

**सदस्य**– अरविन्द तिवारी, महेंद्र जैन, डा अरुण कुमार मिश्र, नितिन कपूर, निशित कुमार, दृश्यमुनि चकमा

(**विशिष्ट आमन्त्रित सदस्य महा लेखा नियन्त्रक**– सी.ए. नवीन भार्गव)

# अधिवेशन गीत

गांव गांव घर घर में संयम शक्ति शौर्य पहुंचाना है ,
प्रेम युक्ति से संगठना कर विजयमंत्र दुहराना है ।।
जो भी जहां कहीं रहता हो,
जो कुछ भी निज–हित करता हो ,
थोड़ा समय देश–हित देकर
निज जीवन सरसाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
भारत मां हम सबकी मां है यह अनुभूति महत्वमयी ,
सेकुलर वाली तान निराली शुरू हुई है नयी नयी ।
भ्रम भय तर्क वितर्क वितंडा छोड़ लक्ष्य पर दृष्टि रहे ,
हिन्दुराष्ट्र के विजय घोष से नभ को आज गुंजाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
हिंदुदेश में हम–सब हिंदू जाति पांति आडंबर है ,
शक्ति संगठन के अभाव में दर दर उठा बवंडर है ,
प्रेम मंत्र संगठन तंत्र से बद्धमूल विश्वास करें ,
जनजीवन से भ्रामकता को जड़ से दूर भगाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
जहां किसी को भय भासित हो उसके दाएं खड़े रहें ,
लोभ लाभ के प्रति आजीवन सभी तरह से कड़े रहें ,
भारत सेव्य और हम सेवक यही भाव आजन्म रहे ,
यही भाव जन जन के मन में हम सबको पहुंचाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...
भारत की संस्कृति में गौरव गरिमा समता ममता है ,
समय आ पड़े तो अपने बल दुष्ट–दलन की क्षमता है ,
हम अपनी संस्कृति की रक्षा हेतु सदैव सतर्क रहें ,
यही विचार भाव जन जन को हमको आज सिखाना है ।।
गांव–गांव घर–घर में ...

**» ओम शंकर**

# शुभकामनायें

धर्मेन्द्र कुमार
अनुभाग अधिकारी
पर्यटन विभाग, उ.प्र. सचिवालय

शरद कश्यप
समीक्षा अधिकारी
पर्यटन विभाग, उ.प्र. सचिवालय

पण्डित दीनदयाल उपाध्याय सनातन धर्म विद्यालय,

कानपुर के पूर्व छात्रों की एक अद्वितीय संस्था

'युग-भारती'

के लखनऊ में 21-22 सितम्बर, 2024

को

होने वाले वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर

हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं

प्रेषित करते हैं।

# O.V.S. Ispat Udyog

**Authorised Distributors of TATA Steel for Cold Rolled and Hot Rolled Sheets and Coils**

TATA Steelium CR Sheets and Coils Helps shape your dreams

TATA astrum HR SHEETS AND COILS

TATA Steelium SUPER CR SHEETS

TATA astrum SUPER HR SHEETS

Head Office : B-118/585, Kaushalpuri, Sarojini Nagar, Kanpur- 208012
Service Center: 84/20, Fazalganj, Kanpur-208012;
M: 9936005252 Email: ovsispatudyog@ymail.com

**Sandeep Bansal**
Batch 1982

*"Wise Tales with Vriddhi" on YouTube! **

**Bringing Indian Heritage to Life for the Next Generation **

**Our Channel Offers below in sequence:**

1. **Panchatantra Stories**: Timeless tales of wisdom and morality // Ongoing

To follow in sequence -

2. **Sankshipt Ramayan & Mahabharat**: Epic stories simplified for kids
3. **Series on PVC Vijetas**: Honoring our Param Veer Chakra heroes
4. **Series on Indian Prime Ministers**: Learn about the leaders who shaped our nation
5. **Series on Indian Freedom Movements & Fighters**: Celebrating our brave freedom fighters
6. **Series on Bharat ke Mahapurush & Mahan Nariyaan**: Inspiring stories of great men and women of India

**Purpose**: To attract and inspire the next generation with Indian history, wisdom, and moral character building. Let's make learning fun and engaging for our kids!

**Subscribe Now**: Join us on this incredible journey of discovery and learning. Click the link below to subscribe and be a part of this educational adventure!

[Subscribe to Wise Tales with Vriddhi]

https://www.youtube.com/@wise_tales_with_vriddhi

**Shailendra Dixit**
Batch 2000

ॐ

STANDARD NIWAR MILLS
(An ISO certified company)
Approved Govt. Contractors, Suppliers & Exporter of all types of textile items

VINAY AGRAWAL
Batch 1977

A. V. R. ENTERPRISES
Approved Govt. Contractors, Suppliers & Exporter
Fact. & Adm. Off. : D-23, Panki Industrial Estate, Site No. 1, Kanpur - 22
Mob.: (H.O.) 9651111347 • E-mail : avrenterprises@gmail.com

**Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh**

Integrated Defence Products Pvt.Ltd, Plot No. 140-141, Integrated Defence Products Pvt Ltd, Greater Noida, Toycity, Ecotech-Iii, Greater Noida, Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh, 201306

**Kanpur, Kanpur Nagar, Uttar Pradesh**

Integrated Defence Products Private Limited, D-21, Integrated Defence Products Private Limited, Industrial Area, Panki Site-1, Kanpur, Kanpur Nagar, Uttar Pradesh, 208022

VentureCatalysts++
India's 1st Multi-Stage VC

## At the Forefront of India's STARTUP REVOLUTION

In the dynamic world of startups and venture capital, one name stands out as a beacon of innovation and growth: Venture Catalysts++. We're not simply a VC; we're a launchpad for dreams and a catalyst for growth. Our mission is to identify, nurture, and propel promising startups to new heights.

Since 2016, we have invested in the dreams of visionary, promising entrepreneurs, some of which have become the biggest brands of Modern India.

***Our portfolio boasts some of India's most innovative and successful startups:***

BharatPe | BEARDO | SUPR DAILY | Fynd | Rare Planet
Shiprocket | BLU SMART MOBILITY | ImpactGuru | ZYPP ELECTRIC | Garuda aerospace

***Want us to fund your dream?***
***ideas@venturecatalysts.in***

***Want to join our dynamic team?***
***hr@venturecatalysts.in***